आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या JaipurCity/413/2015-17
मुद्रण तिथि दिनांक 5 से 8 अगस्त, 2016
वर्ष : 74 ★ अंक : 08 ★ मूल्य : 10 रु.
डाक प्रेषण तिथि 10 अगस्त, 2016 ★ श्रावण, 2073

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

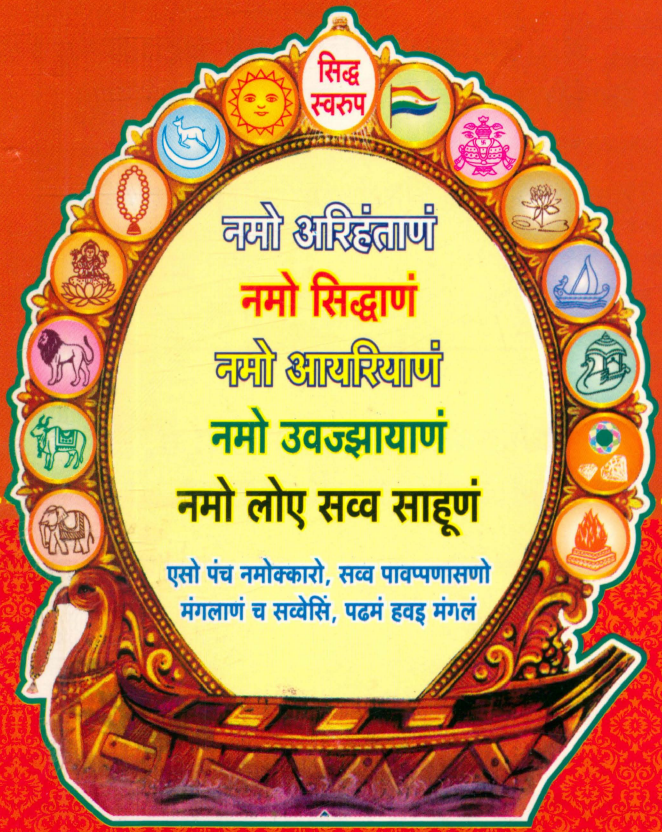

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'॥

संसार की समस्त सम्पदा और भोग
के साधन भी मनुष्य की इच्छा
पूरी नहीं कर सकते हैं।

- आचार्य हस्ती

आवश्यकता जीवन को चलाने
के लिए जरूरी है, पर इच्छा जीवन
को बिगाड़ने वाली है,
इच्छाओं पर नियंत्रण आवश्यक है।

- आचार्य हीरा

जिनका जीवन बोलता है,
उनको बोलने की उतनी जरूरत भी नहीं है।

- उपाध्याय मान

With Best Compliments :
Rajeev Nita Daga Foundation Houston

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

卐 संरक्षक
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

卐 संस्थापक
श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 प्रकाशक
विनयचन्द डागा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-4068798

卐 प्रधान सम्पादक
प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
सामायिक-स्वाध्याय भवन, प्लॉट नं. 2,
नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.)
फोन : 0291-2626279
E-mail : editorjinvani@gmail.com
E-mail : jinvani@yahoo.co.in

卐 सह-सम्पादक
नौरतन मेहता, जोधपुर
डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 भारत सरकार द्वारा प्रदत्त
रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाकपंजीयन सं.-JaipurCity/413/2015-17
ISSN 2249-2011

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

चइऊण देवलोगाओ,
उववन्नो माणुसंमि लोगंमि।
उवसंत- मोहणिज्जो,
सरई पोराणियं जाइं।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, 9.1

अमरलोक से च्युत होकर,
नमि ने नरभव में जन्म लिया।
उपशान्त मोह के होने से,
निज पूर्वजन्म का स्मरण किया।।

अगस्त, 2016
वीर निर्वाण संवत्, 2542
श्रावण, 2073

वर्ष 74 अंक 8

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 250 रु.
20 वर्षीय, देश में : 1000 रु.
20 वर्षीय, विदेश में : 12500 रु.
स्तम्भ सदस्यता : 21000/-
संरक्षक सदस्यता : 11000/-
साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क/साभार नकद राशि 'जिनवाणी' बैंक खाता संख्या SBBJ 51026632986
IFSC No. SBBJ 0010843 में जमा कराकर जमापर्ची (काउन्टर-प्रति) अथवा ड्राफ्ट भेजने का पता
'जिनवाणी', दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail:sgpmandal@yahoo.in

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

ACHARYA SHRI KAILASSAGARSURI GYANMANDIR

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	प्रायश्चित्त तप	-डॉ. धर्मचन्द जैन	5
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-सम्पादक	9
विचार-वारिधि-	ज्ञान-बिन्दु	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	12
प्रवचन-	सुख का नहीं हित का रखें ध्यान	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.	13
	आत्म-पोषण का अवसर है चातुर्मास	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.	21
	स्व में आना स्वागत है	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.	22
	यदि अभाव से बचना है तो स्व-रक्षण की वृत्ति को सर्व-रक्षण में बदलें	-तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.	23
	नमो लोए सव्वसाहूणं : अमृत शिक्षा (3)	-महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा.	25
आरोग्य-	जीवनशैली और आरोग्य	-श्री पी. शिखरमल सुराणा	27
संघ-विकास-	संघ का विकास : आपके हाथ	-श्री पी. शिखरमल सुराणा	28
शोधालेख-	आत्मा का अस्तित्व	-डॉ. सागरमल जैन	29
	पर्यावरण-संरक्षण : विश्व जागृति की आवश्यकता	-डॉ. वीरेन्द्र जैन	65
चिन्तन-	अर्हं : एक चिन्तन	-उपाध्याय श्री रमेशमुनिजी शास्त्री	39
अंग्रेजी-स्तम्भ-	**Concept of Consciousness In Jainism**	-*Dr. Dharm Chand Jain*	43
संगोष्ठी-आलेख-	जैन जीवन-शैली में विकृतियों के विभिन्न रूप	-प्रो. श्रीयांस कुमार सिंघई	54
तत्त्व-चर्चा-	जिज्ञासा-समाधान	-संकलित	58
काव्य-	वीर प्रभु की अंतिम वाणी (23)	-मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.	61
शाकाहार -	शाकाहारी जीवनशैली पर रोकें हमला	-डॉ. दिलीप धींग	69
धारावाहिक -	लग्न की वेला (21)	-आचार्यश्री उमेशमुनिजी 'अणु'	72
युवा-स्तम्भ -	**Jain Thought :** कर्म और हम	-श्री प्रमोद महनोत	78
स्वास्थ्य-विज्ञान -	पीने योग्य शक्तिवर्धक पानी कैसा हो ?	-डॉ. चंचलमल चोरडिया	79
बाल-स्तम्भ -	संस्कार शाला	-श्री राकेश कोचर	86
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	-डॉ. श्वेता जैन	89
परिणाम-	जिनवाणी के अंकों पर हुई प्रतियोगिता का परिणाम	-संकलित	92
विचार-	आध्यात्मिक पर्व : पर्युषण	-प्रो. सुमेरचन्द जैन	20
	माँ-बाप के उपकार	-श्रीमती कमला सुराणा	57
	धन और धर्म	-आचार्य श्री देवेन्द्रमुनिजी म.सा.	123
कविता/गीत-	जीवन धन्य बनाया	-श्री धर्मचन्द जैन	60
	आत्मसम्मान और अभिमान	-डॉ. रमेश 'मयंक'	77
	अहं से दूरी	-श्रीमती कमला सुराणा	85
	आज अपने दिलों को टटोलेंगे हम	-श्री मोहन कोठारी 'विनर'	88
प्रेरक-प्रसंग-	प्रमाण-पत्र	-श्री ललित गर्ग	64
	मोक्ष की प्राप्ति कैसे ?	-श्री देवेन्द्रनाथ मोदी	120
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन	-संकलित	94
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	116

सम्पादकीय

प्रायश्चित्त तप

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

आत्म-विशुद्धि के जैन धर्म में क्षमा, मार्दव, आर्जव आदि अनेक उपाय हैं, जिनमें प्रायश्चित्त भी एक है। किए गए दोषों की शुद्धि हेतु प्रायश्चित्त की उपयोगिता असंदिग्ध है। जैनदर्शन में प्रायश्चित्त को आभ्यन्तर तप के भेदों में परिगणित किया गया है। प्रायश्चित्त शब्द की व्याख्या करते हुए कहा गया है- *'प्रायस्य पापस्य चित्तं विशोधनं यस्मात्।'* अर्थात् जिससे पाप की शुद्धि होती है, वह प्रायश्चित्त (प्रायः+चित्त) है। यहाँ प्रायः का अर्थ पाप एवं चित्त का अर्थ विशुद्धि किया गया है। 'प्रायः' शब्द दो प्रकार से बनता है- प्र+अय् धातु + घञ् प्रत्यय लगकर तथा प्र+अय्+असुन् प्रत्यय लगकर। प्रथम प्रायः शब्द अपगमन, जीवन से प्रयाण, आमरण अनशन, व्रत रखना, पाप, अपराध आदि अर्थों में प्रयुक्त होता है। द्वितीय प्रायः शब्द अव्यय है जो अधिकतर बहुधा आदि अर्थों में प्रयुक्त होता है। यहाँ प्रथम प्रायः के पाप, अपराध अर्थ अभीष्ट हैं। तत्त्वार्थभाष्य के- *''चिती संज्ञानविशुद्ध्योर्धातुः तस्य चित्तमिति भवति निष्ठान्तमौणादिकं च''* कथन से ज्ञात होता है कि चित् धातु से निष्ठावाचक क्त प्रत्यय लगकर चित्त शब्द बनता है तथा चित् धातु के दो अर्थ हैं- 1. संज्ञान अर्थात् जानना एव. 2. विशुद्धि। यहाँ विशुद्धि अर्थ अभीष्ट है। अनशन आदि अर्थ को ध्यान में रखकर हेमाद्रि कोश में प्राय शब्द का अर्थ तप तथा चित्त का अर्थ निश्चय किया गया है- *'प्रायो नाम तपः प्रोक्तं चित्तं निश्चय उच्यते, तपोनिश्चयसंयोगात् प्रायश्चित्तमितीर्यते।'* दोष की शुद्धि के लिए तप किया जाता है। इसलिए तप के निश्चय को भी प्रायश्चित्त शब्द से कहा गया हो, ऐसा प्रतीत होता है। व्यापक अर्थ में कहें तो कृत पाप की शुद्धि के लिए जो-जो क्रियाएँ की जाती हैं, वे सभी प्रायश्चित्त हैं। प्रायः का अर्थ लोक भी है, लोक में भी प्रायश्चित्त कर्त्ता के प्रायश्चित्त के पश्चात् प्रति धारणा शुद्ध हो जाती है। उसके दोष को क्षमा कर दिया जाता है। अतः साधक प्रायश्चित्त के द्वारा आत्मलोक एवं जनलोक दोनों में शुद्धता को प्राप्त होता है।

उत्तराध्ययनसूत्र (29.16) में प्रश्न किया गया कि प्रायश्चित्त से क्या लाभ होता है? उत्तर में कहा गया- *'पायच्छित्तकरणेणं पावकम्मविसोहिं जणयइ। णिरइयारे यावि भवइ। सम्मं च णं पायच्छित्तं पडिवज्जमाणे मग्गं च मग्गफलं च विसोहेइ, आयारं च आयारफलं च आराहेइ।'* प्रायश्चित्त करने पर पापकर्म की शुद्धि होती है। जीव निरतिचार (निर्दोष) होता है। प्रायश्चित्त को सम्यक् प्रकार से ग्रहण करता हुआ साधक

मार्ग एवं मार्गफल को शुद्ध बनाता है, आचार एवं आचारफल की आराधना करता है। इसका तात्पर्य है पापों की शुद्धि करने का सर्वश्रेष्ठ मार्ग है- प्रायश्चित्त। प्रायश्चित्त स्वीकार करके व्यक्ति दोष रहित हो सकता है। वह मोक्षमार्ग स्वरूप ज्ञान दर्शन चारित्र की शुद्धि कर सकता है तथा अपने आचरण को शुद्ध बना सकता है।

भारतीय धर्मों में वैदिक, बौद्ध एवं जैन तीनों परम्पराएँ प्रायश्चित्त का विचार करती हैं। मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति आदि विभिन्न स्मृतियों में प्रायश्चित्त की चर्चा है। किस प्रकार का दोष करने या अपराध करने पर कैसा प्रायश्चित्त करना होगा, इसका निरूपण इन स्मृति ग्रंथों में प्राप्त होता है। दोष या पाप से मुक्ति हेतु मनुस्मृति (11. 227) में पाँच उपाय बताए गए हैं-

ख्यापनेनानुतापेन, तपसाऽध्ययनेन च।
पापकृत्मुच्यते पापात्तथा दानेन चापदि।।

1. ख्यापन-दूसरों के समक्ष अपनी भूल, दोष या पाप का कथन करना। **2. अनुताप**- जो दोष या अपराध हुआ है, उसका पश्चात्ताप करना। **3. तप**- विविध प्रकार के तप करना। **4. अध्ययन**- वेदादि का स्वाध्याय करना। **5. दान**- विपत्ति आने पर दान करना। पाप-मुक्ति के ये उपाय गृहस्थ को लक्ष्य में रखकर कहे गए हैं। इनके अतिरिक्त विशेष प्रकार के दोषों के लिए भिन्न-भिन्न प्रायश्चित्त कहे गए हैं। विनयपिटक आदि बौद्ध साहित्य में बौद्ध भिक्षुओं के द्वारा दोष किए जाने पर अलग-अलग प्रायश्चित्तों का विधान किया गया है।

जैन परम्परा में दोषों की शुद्धि पर गहन विचार हुआ है तथा व्यवहार सूत्र, निशीथ सूत्र, बृहत्कल्पसूत्र आदि छेद सूत्रों में भिन्न-भिन्न प्रकार के दोषों की शुद्धि के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार के प्रायश्चित्तों का उल्लेख किया गया है। छेदसूत्र दोषों का छेदन या उच्छेदन करने की दृष्टि से अत्यन्त उपयोगी हैं। दोष उत्पन्न ही न हों इसकी भी प्रेरणा इन सूत्रों से प्राप्त होती है। छेदसूत्रों को उत्तमसूत्र कहा गया है, क्योंकि इनमें प्रायश्चित्त विधि कही गई है, जिससे आचरण विशुद्ध बनता है।

जैन परम्परा में अपेक्षाकृत श्रमण-श्रमणी अभी भी निर्मल आचारनिष्ठ जीवन जी रहे हैं, इसका प्रमुख कारण प्रायश्चित्त का विधान एवं पालन है। छेदसूत्रों में साधु-साध्वियों के लिए क्या अनाचरणीय (निषिद्ध) है इसका विस्तार से निरूपण हुआ है तथा उनके किस दोष के लिए क्या प्रायश्चित्त दिया जाना चाहिए, इसका भी सूक्ष्म निरूपण हुआ है। गृहस्थ भी अपने व्रतों में दोष लगने पर आलोचना, प्रतिक्रमण आदि प्रायश्चित्त तप का गुरु भगवन्तों अथवा वरिष्ठ श्रावकों के मार्गदर्शन में आराधन कर आत्म-शुद्धि कर सकता है।

तत्त्वार्थसूत्र (9.22) में प्रायश्चित्त के नौ भेद किए गए हैं- 'आलोचनप्रतिक्रमण-तदुभयविवेकव्युत्सर्गतपश्छेदपरिहारोपस्थापनानि।'-1. आलोचन, 2. प्रतिक्रमण,

3. तदुभय, 4. विवेक, 5. व्युत्सर्ग, 6. तप, 7. छेद, 8. परिहार, 9. उपस्थापन। भगवती सूत्र (शतक 25, उद्देशक 6) एवं औपपातिक सूत्र (तप निरूपण) में प्रायश्चित्त के 10 प्रकार निरूपित हैं- 1. आलोचनार्ह, 2. प्रतिक्रमणार्ह, 3. तदुभयार्ह, 4. विवेकार्ह, 5. व्युत्सर्गार्ह, 6. तपोऽर्ह, 7. छेदार्ह, 8. मूलार्ह, 9. अनवस्थाप्यार्ह, 10. पाराञ्चिकार्ह। गुरु के समक्ष अपने दोषों को प्रकट कर उनकी आलोचना करने से दोषों की शुद्धि करना **आलोचनार्ह** प्रायश्चित्त है। आलोचना में साधक स्वयं अपने दोषों को देखता है, उनको दोष समझकर गुरु के समक्ष प्रकट कर हल्का होता है तथा वह दोष कथन एवं स्वीकारोक्ति मात्र से दोष को दूर कर लेता है। इसलिए इसे प्रायश्चित्त का एक प्रकार माना गया है। आलोचना से माया, मिथ्यादर्शन एवं निदान शल्य निकल जाते हैं तथा ऋजु भाव प्रकट होता है। ऋजु भाव प्रकट होने से स्त्रीवेद एवं पुरुषवेद का बंध नहीं होता है तथा पूर्वबद्ध कर्म निर्जरित होते हैं। आलोचना करते समय भीतर में पारदर्शिता एवं निर्मल भावना अपेक्षित है, अन्यथा आलोचना का पूरा लाभ प्राप्त नहीं हो पाता है। व्रतों में लगने वाले दोषों अथवा पाँच समिति एवं तीन गुप्ति में लगे दोषों की शुद्धि प्रतिक्रमण करके की जाती है। प्रतिक्रमण में अपने दोषों को ध्यान में लाकर आगे न करने का संकल्प किया जाता है। ऐसे दोषों की शुद्धि **प्रतिक्रमणार्ह** कही गई है। प्रतिक्रमण से व्रत में लगे छिद्र बंद हो जाते हैं तथा आस्रव का निरोध होता है। कुछ दोष ऐसे भी हैं जिनकी शुद्धि के लिए आलोचना एवं प्रतिक्रमण दोनों किए जाते हैं। ऐसी दोष शुद्धि को **तदुभयार्ह** कहा गया है। कभी-कभी अज्ञान या असावधानी के कारण जो दोष लगता है उसकी शुद्धि विवेकपूर्वक (पृथक्करणपूर्वक) की जाती है। साधु-साध्वियों के लिए कहा गया है कि अनजाने में साधु को कोई सदोष आहार मिल जाए, बाद में यह ज्ञात हो जाए कि यह आहार दोषयुक्त है तो साधु उसे ग्रहण नहीं करता एवं उसका त्याग कर देता है। इसे **विवेकार्ह** प्रायश्चित्त कहा गया है। व्युत्सर्ग (गृहीत वस्तु आदि के त्याग) अथवा कायोत्सर्ग द्वारा भी कुछ दोषों का शोधन किया जाता है। प्राचीनकाल में नदी पार करने, उच्चार मल-मूत्र आदि परठने में सेवित दोषों की शुद्धि करने के लिए इस प्रायश्चित्त का विधान किया गया है। भिन्न-भिन्न दोषों के लिए अलग-अलग परिमाण में श्वासोच्छ्वासयुक्त **कायोत्सर्ग** का निरूपण हुआ है। कायोत्सर्ग से देह की जड़ता का नाश होता है, बुद्धि प्रखर होती है, सुख-दुःख को सहन करने की शक्ति का विकास होता है, अनित्य आदि भावनाओं को भावित करने का अवसर प्राप्त होता है तथा चित्त की एकाग्रता बढ़ती है। कुछ दोष अनशन आदि तप के द्वारा दूर किए जाते हैं। कहीं आगम-गाथाओं का स्वाध्याय तप करके भी दोष का परिमार्जन किया जाता है। सचित्त वस्तु को छूने, प्रतिलेखन, प्रमार्जन आदि नहीं करने के लिए तप प्रायश्चित्त का विधान किया गया है। आधुनिक युग में शल्य चिकित्सा आदि कराने के कारण भी साधु-

साध्वी को विभिन्न प्रकार के तप की आराधना कर दोष शुद्धि करनी होती है। इस प्रकार के प्रायश्चित्त को **तपोऽर्ह** कहा गया है। तप प्रायश्चित्त लघु एवं गुरु के भेद से दो प्रकार का होता है। फिर ये दोनों प्रायश्चित्त मासिक एवं चातुर्मासिक के भेद से दो-दो प्रकार के होते हैं। भिन्न-भिन्न प्रकार के दोष के लिए लघु मासिक (27 दिन) अथवा गुरु मासिक (30 दिन), लघु चातुर्मासिक (108 दिन) अथवा गुरु चातुर्मासिक (120 दिन) की आराधना की जाती है। उत्कृष्ट प्रायश्चित्त 6 माह का होता है। इससे अधिक प्रायश्चित्त देना हो तो दीक्षा छेद किया जाता है। दोष की शुद्धि हेतु आचार्य के द्वारा यह प्रायश्चित्त देते हुए दोषी साधु-साध्वी की दीक्षा अवधि में कटौती (छेद) की जाती है, इसे **छेदार्ह** प्रायश्चित्त कहा गया है। दीक्षा-पर्याय में कटौती के कारण पश्चात् दीक्षित संत से भी उसे दीक्षा में छोटा माना जाता है। फलतः वह पश्चात् दीक्षित सन्त को वन्दन करता है।

साधु-साध्वी के द्वारा जब महाव्रत आदि में दोष लगाया जाता है तो उन्हें साधु-संघ से मास, दो मास आदि के लिए अलग कर दिया जाता है इसे ही **परिहार/ अनवस्थाप्यार्ह** कहा गया है। **मूलार्ह** एवं **उपस्थापना** एकार्थक हैं, जब किसी साधु-साध्वी के महाव्रतों की शुद्धि के लिए उन्हें पुनः व्रतों में आरूढ़ किया जाता है तो यह उपस्थापना या **मूलार्ह** प्रायश्चित्त कहा जाता है। कषायदुष्ट, विषयदुष्ट, महाप्रमादी साधु-साध्वी को जघन्य एक वर्ष, उत्कृष्ट बारह वर्ष गृहस्थ वेश पहनाकर संयम-पालन करवाकर पुनः व्रतों में स्थापित करना **पाराञ्चिकार्ह** प्रायश्चित्त है।

एक ही दोष के लिए देश, काल, शक्ति, संहनन, संयमविराधना आदि के आधार पर आचार्य के द्वारा अपने विवेक से अलग-अलग प्रकार के प्रायश्चित्त दिए जाते हैं। जिसको प्रायश्चित्त दिया जाता है, उसकी शारीरिक शक्ति, मानसिक बल, उसके द्वारा की गई विराधना की तीव्रता या मंदता, ज्ञातता-अज्ञातता आदि को ध्यान में रखा जाता है। इसी प्रकार स्थान विशेष, काल विशेष को भी ध्यान में रखकर प्रायश्चित्त दिया जाता है। इससे किसी साधक को यह नहीं सोचना चाहिए कि मुझे अन्य साधक से अधिक तप या स्वाध्याय करने के लिए कहा गया है। प्रायश्चित्त करते समय चित में समता एवं आह्लाद का अनुभव होना चाहिए, क्योंकि प्रायश्चित्त से आत्मा का प्रक्षालन होता है एवं पापरूपी मैल दूर होता है।

दोष का दोष के रूप में अनुभव हो तभी उसकी शुद्धि सम्भव है। जो दोष को दोष ही नहीं मानता, वह कभी उस दोष से रहित नहीं हो सकता। प्रायश्चित्त का विधान दोषों के निराकरण एवं सदाचरण के पोषण के लिए हुआ है। अतः आत्मविशुद्धि के लिए इस तप का महत्त्व स्वाभाविक है। शरीर में चुभे हुए कांटे को जिस प्रकार सुई आदि से निकाल लेने पर शान्ति प्राप्त होती है उसी प्रकार कृत दोष को प्रायश्चित्त से दूर कर लेने पर आत्मिक शान्ति एवं आनन्द का अनुभव होता है। ❖

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

से किं तं कायकिलेसे? कायकिलेसे अणेगविहे पण्णत्ते। तं जहा- 1. ठाणट्ठिइए, 2. उक्कुडुयासणिए, 2. पडिमट्ठाई, 4. वीरासणिए, 5. नेसज्जिए, 6. आयावए, 7. अवाउडए, 8. अकंडुयए, 9. अणिट्ठूहए, 10 सव्वगाय-परिकम्मविभूसविप्पमुक्के, से तं कायकिलेसे। -औपपातिक सूत्र, तपनिरूपण

अर्थ- काय-क्लेश तप का क्या स्वरूप है? काय-क्लेश तप अनेक प्रकार का कहा गया है, जैसे- **1. स्थानस्थितिक-** एक ही तरह से खड़े रहना या एक ही आसन में बैठे रहना। **2. उत्कुटुकासनिक-** उकडू आसन में बैठना-पुट्ठों को भूमि पर न टिकाते हुए केवल पाँवों के बल पर बैठने की स्थिति में स्थिर रहना, साथ ही दोनों हाथों की अंजलि बाँधे रखना। **3. प्रतिमास्थायी-** मासिक आदि श्रमण की द्वादश प्रतिमाएँ अथवा श्रावक की एकादश प्रतिमाएँ स्वीकार करना। **4. वीरासनिक-** वीरासन में स्थित रहना। वीरासन के अन्तर्गत व्यक्ति पृथ्वी पर पैर टिकाकर सिंहासन के सदृश बैठता है। जैसे- कोई पुरुष सिंहासन पर बैठा हुआ हो, उसके नीचे से सिंहासन निकाल लेने पर भी वैसे ही स्थिति में स्थित रहे तो वह वीरासन है। **5. नैषद्यिक-** पुट्ठे टिकाकर या पालथी लगाकर बैठना। **6. आतापक-** सूर्य (धूप) आदि की आतापना लेना। **7. अप्रावृतक-** देह को कपड़े आदि से नहीं ढँकना। **8. अकण्डूयक-** खुजली चलने पर भी देह को नहीं खुजलाना। **9. अनिष्ठीवक-** थूक आने पर भी नहीं थूकना तथा **10. सर्वगात्र- परिकर्म विभूषा-विप्रमुक्त-** देह के सभी संस्कार, सज्जा, विभूषा आदि से मुक्त रहना।

विवेचन- बाह्य तपों में कायक्लेश तप की भी गणना होती है। काया की सुकुमारता जहाँ साधना में बाधक है, वहाँ काया की कसावट साधना में सहायक होती है। जैन परम्परा में काया की सुकुमारता को त्यागकर काया का साधना में सदुपयोग करने की प्रेरणा पदे-पदे प्राप्त होती है। दशवैकालिक में कहा गया है- *'आयावयाहि चय सोगमल्लं'*। अपने को तपाओ तथा सुकुमारता का त्याग करो। जो शरीर को कोमल बनाये रखते हैं वे बलशाली नहीं होते, अपितु जो शरीर से श्रम करते हैं उनका शरीर बलवान एवं सशक्त होता है। खेतों में कार्य करने वाला किसान धूप एवं ठण्ड को सह कर वातानुकूल कक्ष में काम करने वाले अधिकारी की अपेक्षा शारीरिक दृष्टि से अधिक सशक्त होता है।

जैन दर्शन में निर्जरा की साधना को कर्मक्षय में साधन माना गया है। कर्मक्षय के लिए तप उपयोगी होता है। अनशन, ऊनोदरी, भिक्षाचर्या एवं रस परित्याग की भाँति कायक्लेश भी तप की श्रेणी में आता है। कायक्लेश का साधारण तात्पर्य है- काया को कष्ट देना। कुछ अन्य मतावलम्बी जैन धर्म के तप की इसलिए आलोचना करते हैं कि इसमें काया को कष्ट दिया जाता है। हम काया को क्यों कष्ट दें? प्रश्न तो ठीक है किन्तु यहाँ कायक्लेश का तात्पर्य काया को कसना, उसे साधना के योग्य बनाए रखना है। इसमें विभिन्न प्रकार के आसनों में रहकर एवं धूप, सर्दी आदि परिस्थितियों में भी कष्ट को सह कर चित्त को सबल एवं परिष्कृत किया जाता है।

औपपातिकसूत्र में कायक्लेश तप के दस प्रकार निरूपित किए गए हैं- उनमें स्थानस्थितिक, उत्कुटुकासनिक, वीरासनिक ये तीन प्रकार विभिन्न आसनों में रहकर साधना करने हेतु प्रेरित करते हैं। एक स्थान पर स्थिर होकर चित्त को एकाग्र करने में स्थानस्थितिक आसन उपयोगी है। यह आसन शरीर के आलस्य को दूर भगाकर साधना में संलग्न होने में सहायक है। बैठे-बैठे कभी निद्रा एवं आलस्य का प्रकोप बढ़ने लगे तो खड़े रहकर यह तप किया जा सकता है। कभी दोनों पैर पर खड़े रहकर तो कभी एक पैर पर खड़े रहकर भी इसका अभ्यास संभव है। उत्कुटुक को बोलचाल की भाषा में उकडू आसन कहा जाता है। दोनों पैर टिकाकर बैठना उकडू आसन है। यह आसन व्यक्ति को सजग बनाता है। निद्रा एवं आलस्य को दूर करता है तथा पेट की चर्बी को नियंत्रित रखता है। यह आसन शरीर को कसता है। अतः साधना में इस आसन को तप की संज्ञा दी गई है। वीरासन वीरता का आसन है। इसका प्रचलित अर्थ उपर्युक्त अनुवाद में दिया गया है, किन्तु वर्तमान में आसन विशेषज्ञों के द्वारा वीरासन भिन्न प्रकार से कराया जाता है। जिसके अनुसार एक पैर को आगे लाकर बीच में संतुलन रखते हुए दोनों हाथों को ऊपर नमस्कार मुद्रा में रखा जाता है तथा दोनों पैर एक सीध में रहते हैं। इसे परिवर्तित करके दूसरे पैर को दूसरी ओर आगे रखकर समान रीति से यही अभ्यास किया जाता है। वीरता की दृष्टि से यह आसन अधिक उपयुक्त लगता है। यह आसन भी शरीर की प्रत्येक शिरा में रक्त का संचार करते हुए शरीर को साधना के योग्य बनाता है। चित्त में भी वीरता के भाव को उत्पन्न करने में सहायक है। वर्तमान समय में साधु-साध्वियों के द्वारा इस प्रकार के आसनों का अभ्यास नहीं किया जा रहा है, किन्तु ये आसन शरीर को चुस्त एवं दुरुस्त रखने के साथ मन को भी नियंत्रित करने में सहायक होते हैं। यहाँ कुछ आसनों का उल्लेख किया गया है। इनके अतिरिक्त भी उपयोगी आसन किए जा सकते हैं। नैषद्यिक तप में अप्रमत्त होकर बैठा जाता है। इसके लिए

पद्मासन, अर्द्धपद्मासन उपयोगी हैं। शरीर के आलस्य एवं चित्त के प्रमाद को दूर करने के लिए कायक्लेश तप का जैन धर्म में विविध प्रकार से निरूपण किया गया है। प्रतिमास्थायी तप के अन्तर्गत श्रमणों की द्वादश प्रतिमाओं एवं श्रावकों की एकादश प्रतिमाओं का समावेश किया जाता है, किन्तु यहाँ इन सभी प्रतिमाओं को कायक्लेश तप के अन्तर्गत समाविष्ट नहीं किया जा सकता। अतः यहाँ प्रतिमा का अर्थ किसी एक प्रकार की अवस्था में शरीर को मूर्तिवत् स्थिर करना संभव है। इसमें भी सजगता बनी रहती है तथा चित्त को स्थिर किया जा सकता है।

सूर्य की धूप में स्थिर होकर साधना करना आतापक तप है। शरीर को धूप से प्राण शक्ति प्राप्त होती है। विटामिन डी मिलता है। शरीर कष्ट सहिष्णु बनता है। प्रतिकूलताओं में और उपसर्गों में भी अपने को स्थिर रखने की क्षमता प्राप्त होती है। यह आतापना ज्ञानपूर्वक एवं विवेकपूर्वक एक सीमा तक उपयोगी है। यदि शरीर में तन्द्रा एवं आलस्य बढ़ने लगे तथा शरीर की स्फूर्ति घटने लगे तो इस तप से विराम लिया जा सकता है। अप्रावृतक भी एक तप है। कपड़े आदि से शरीर को न ढ़कना अप्रावृतक तप कहा गया है। सर्दी के दिनों में यह साधना परीषह विजेता बनाती है। योग्य स्थान एवं परिस्थिति को देखकर ही वस्त्ररहित रहा जा सकता है। अकण्डूयक का तात्पर्य है शरीर पर खुजली चलने पर भी उसे न खुजालना। यह अत्यन्त कष्टप्रद एवं अस्वाभाविक है। फिर भी अपनी सहिष्णुता एवं समता की अभिवृद्धि के लिए यह अभ्यास उपयोगी है। यह भी परीषह विजेता बनने में सहायक है। अनिष्ठीवक का अभिप्राय है थूक आने पर भी नहीं थूकना, किन्तु यह साधना का अंग किस प्रकार है, यह अन्वेषण का विषय है। प्यास लगने पर भी थूक नहीं निगलना अर्थ फिर भी कुछ सार्थकता रखता है। देह के सभी संस्कार एवं विभूषा का त्याग भी बाह्य तप है, क्योंकि कई बार स्नान आदि करने, शरीर को सजाने का मन हो सकता है, जिसका त्याग करना परीषह को सहन करना है। साधु-साध्वी प्रायः इस तप की आराधना निरन्तर करते हैं।

यह कायक्लेश तप शरीर की कसावट एवं उसे साधना के योग्य बनाये रखने में अत्यन्त उपयोगी है। इस तप के अन्तर्गत योग सूत्र के आसन एवं प्राणायाम का समावेश तो होता ही है साथ में आतापना लेना एवं सर्दी में ठण्ड का अनुभव करना भी इस तप में समाविष्ट है। कायक्लेश कोई दुःख पैदा करने वाला तप नहीं, अपितु काया को साधते हुए उसे सशक्त बनाते हुए मन को नियन्त्रित करने की साधना है।

विचार-वारिधि

ज्ञान-बिन्दु

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

- परिमाण कर लेने से तृष्णा कम हो जाती है और व्याकुलता मिट जाती है। जीवन में हल्कापन आ जाता है और एक प्रकार की तृप्ति का अनुभव होने लगता है।
- मन में सन्तोष नहीं आया तो सारे विश्व की भूमि, सम्पत्ति और अन्य सुख-सामग्री के मिल जाने पर भी मनुष्य शान्ति प्राप्त कर नहीं सकता।
- पेट की भूख तो पाव दो पाव आटे से शान्त हो जाती है, मगर मन की भूख तीन लोक के राज्य से भी नहीं मिटती।
- एक अकिंचन निःस्पृह योगी को जो अद्‌भुत आनन्द प्राप्त होता है वह कुबेर की सम्पदा पा लेने वाले धनाढ्य को नसीब नहीं हो सकता।
- अमर्यादित धन-संचय की वृत्ति के पीछे गृहस्थी की आवश्यकता नहीं, किन्तु लोलुपता और धनवान् कहलाने की अहंकार-वृत्ति ही प्रधान होती है।
- किसी महापण्डित का मस्तिष्क यदि समाज और देश की उन्नति में नहीं लगता तो उसका पाण्डित्य किस काम का?
- जो पूंजी पाकर स्वयं उसका सदुपयोग नहीं करता और दूसरों की सहायता नहीं करता, प्रत्युत दुर्व्यसनों का पोषण करता है, वह इस लोक में निन्दित बनता है और परलोक को पापमय बनाकर दुःखी होता है।
- जीवन, धन और वैभव जाने वाली वस्तुएँ हैं, किन्तु इन जाने वाली वस्तुओं से कुछ लाभ उठा लिया जाय, अपने भविष्य को कल्याणमय बना लिया जाय, इसी में मनुष्य की बुद्धिमत्ता है, विवेकशीलता है।
- स्वेच्छापूर्वक अंगीकार किया हुआ व्रत का नियम साहस और शक्ति प्रदान करता है। प्रतिकूल परिस्थिति में इसके द्वारा अपनी मर्यादा से विचलित न होने की प्रेरणा प्राप्त होती है।
- परिग्रह को हटाने से हिंसा, असत्य, स्तेय, कुशील इन चारों पर रोक लगती है। अहिंसा आदि चार व्रत अपने आप पुष्ट होते रहते हैं।
- प्रमाद और कषाय दोनों सम्यग्दर्शन और विरतिभाव की निर्मलता में बाधक हैं।
- विचार-बल यदि पुष्ट हो तो साधक अहिंसा, सत्य आदि व्रतों का ठीक तरह से निर्वाह कर सकेगा।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

प्रवचन

सुख का नहीं हित का रखें ध्यान

(महासती श्री छोगाजी का संयमी जीवन)

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. द्वारा 29 जुलाई 2011 को सामायिक-स्वाध्याय भवन, पावटा, जोधपुर में चातुर्मासार्थ फरमाए गए इस प्रवचन का संकलन श्री पुखराज जी मुणोत-जोधपुर द्वारा किया गया है।-**सम्पादक**

आत्महित की साधना कर निरंजन-निराकार बनने वाले सिद्ध भगवंत, घनघाती कर्म नष्ट कर सर्वज्ञ-सर्वदर्शी बनने वाले अरिहंत भगवन्त, समिति-गुप्ति की साधना के साथ आरम्भ-परिग्रह का त्याग करने वाले संत-भगवन्तों के चरणों में कोटिशः वंदन।

तीर्थंकर भगवान श्री महावीर की आदेय अनमोल वाणी वर्तमान में बत्तीस आगमों में उपलब्ध है, जिनमें मुख्य हैं ग्यारह अंग-सूत्र। प्रथम अंग आचारांगसूत्र व अन्तिम अंग विपाक सूत्र। चल रहा है प्रसंग सुलभ बोधि का। यशवन्तमुनिजी ने आचारांग के माध्यम से और प्रमोदमुनिजी ने विपाक सूत्र के माध्यम से 'सुलभबोधिपन' का विवेचन अभी किया। सुलभबोधि बनने का रास्ता भी आप सभी के समक्ष रखा। पहले हित की बात, फिर सुख की बात कही। विक्रम् संवत् 2020 में पीपाड़ में दीक्षा प्रदान करते हुए आचार्य भगवन्त ने सभा में फरमाया- ''आज से हम संतवर्ग इन नवदीक्षित शिष्य-मुनि का हित चाहेंगे। हित को प्रधानता देंगे। हित के सामने सुख को गौण कर देंगे।'' सभी पारिवारिकजनों के साथ-साथ गुरुभगवन्त का उद्‌बोधन उपस्थित सभी धर्मप्रेमी सज्जनों, संघ के अधिकारियों, कार्यकर्ताओं ने सुना। महासतीवर्ग ने भी सुना।

आपने भी अनेक बार, अनेक उद्‌बोधन गुरु भगवन्त, संत-सतीवर्ग से सुने हैं। चिन्तन करें कि आपने सुना क्या और कर क्या रहे हैं? सुनने का कुछ अर्थ भी निकला या इधर से सुना उधर से निकाल दिया। तेरा तुझको अर्पण। सार यह कि आप रहे वहीं के वहीं, जहाँ थे। सुनकर विचार और आचार में परिवर्तन यदि नहीं आया तो वह सुनना व्यर्थ गया। परिवर्तन आना चाहिए, महापुरुषों की संगति से, उनके श्रीमुख से श्रुत की गई जिनवाणी से, पर आया नहीं। कारण क्या? क्यों नहीं आया जीवन व्यवहार में परिवर्तन? क्यों रह गये आप वहीं के वहीं। चले तो नौ दिन, पर गति इतनी मंथर कि ढ़ाई कोस ही चल पाए।

मैंने कहीं पढ़ा है कि आत्मा में अनन्तज्ञान, अनन्तदर्शन की सत्ता प्रत्येक समय

विद्यमान रहती है। सत्ता है, पर उसे प्राप्त करना है। कैसे प्राप्त होगी वह सत्ता? जब किसी सुयोग्य सद्गुरु का साथ मिलेगा, सहयोग मिलेगा, आशीर्वाद मिलेगा। जब तक सद्गुरु का सहयोग नहीं मिलता, जीव ज्ञान-दर्शन की उस अनन्तधारा में अवगाहन नहीं कर सकता।

पुराने जमाने में धान के कोठे होते थे। उन कोठों में एकत्रित धान के हर बीज में शाखा भी होती है, पत्र (पत्ते) भी होते हैं, पुष्प भी होते हैं और फल भी निहित होते हैं। सभी जानते हैं, किन्तु छोटे से बीज में छुपी इन सभी चीजों की प्राप्ति कैसे होती है? कैसे बनता है नन्हा बीज एक वटवृक्ष? कैसे बढ़ता है वह? कैसे परिवर्तन होता है उसमें।

जब तक बीज को उपजने योग्य जमीन नहीं मिले, भोजन के रूप में खाद न मिले, पानी से उसका सिंचन न हो, सुरक्षा व देख-रेख के लिए माली न मिले तब तक वह छोटा-सा बीज एक बड़े वृक्ष का रूप नहीं ले सकता। ये सारे संयोग उसे मिलेंगे तब वह वृक्ष का रूप धारण कर सकेगा। जैसा बीज, वैसा रूप, पर संयोग सभी अनिवार्य। जिनको जो संयोग चाहिए बढ़ने के लिए, उनकी प्राप्ति ही विकास के द्वार को खोल सकती है।

यही क्रम जीव पर लागू होता है। आत्मा का विकास-क्रम संयोगों का फल है और संयोगों का मिलना जीव की स्वयं की पूर्वार्जित पुण्याई पर निर्भर है। मिल गए यदि संयोग, जागृत हो गई यदि आत्मा और बढ़ गए विकास की तरफ कदम तो पहले व्रती श्रावक, फिर महाव्रती निर्ग्रंथ मुनि, फिर साधना की उत्कृष्टता से अरिहंत, सिद्ध। आत्मा बनेगी महात्मा और महात्मा से कदम बढ़ेंगे उस विकास की सीढ़ी पर जो परमात्म पद की तरफ जाती है। वही है प्रत्येक जीव की मंजिल, वही है हम सभी का लक्ष्य। पर यह होगा कब? जब सद्गुरु-संयोग मिलेगा। आपको यह संयोग मिला है, मिल रहा है फिर आप अभी भी कोठे के बीज ही क्यों? कब तक रहेंगे कोठे में? वृक्ष बनना है, तो भीतर में विद्यमान अनन्त ज्ञानादि की शक्ति को प्रकट करना है तो कोठे से बाहर आना पड़ेगा। मेरे कहने का तात्पर्य समझ रहे हैं न? क्या है यह कोठा? किसे बता रहा हूँ मैं कोठे से उपमित करके?

आपका घर-परिवार, व्यापार-व्यवसाय, आरम्भ-परिग्रह के समस्त कार्य कोठा ही तो है। छोड़ दें तो महात्मा और फिर परमात्मा भी बन सकते हैं। आपमें से कइयों ने आचार्यश्री हस्तीमल जी म.सा. की वाणी भी सुनी होगी, अब यहाँ भी सुन रहे हैं पर यह कहने से कि हमने अमुक-अमुक को सुना, उनकी सेवा की। अब भी कर रहे हैं। पर मैं पूछता हूँ कि आपने बहुत कुछ सुना, किया लेकिन बढ़े कितना? बढ़ेंगे कब, जब छोड़ेंगे अपने इर्द-गिर्द के कोठे को।

जिन्होंने घर-परिवार, धन-माया से मोहासक्ति को छोड़ा और आगे बढ़े, बहुत आगे, ऐसे ही एक महान् सतीजी का जन्मदिवस है आज। शीलवती साध्वी छोगाजी म.सा.

का। सुना है कि जिनका जन्म श्रावण कृष्ण चतुर्दशी के दिन संवत्1940 में बुचेटी ग्राम में हुआ था। पिता थे आपके पन्नालाल जी ललवाणी और मातुश्री का नाम था लक्ष्मीबाई।

गुरु भगवन्त आचार्य पूज्य श्री हस्ती का संवत् 2012 का चातुर्मास अजमेर में था। मेरे मन में वैराग्य का बीजांकुर हो चुका था। उस चातुर्मास में मैं अजमेर था तब वहीं महासतीजी के प्रथम दर्शन का सौभाग्य मुझे मिला। फिर तो वहाँ लगभग प्रतिदिन उनके दर्शन करने जाता, पर कभी सतीजी के जीवन संबंधी जानकारी के लिए पृच्छा नहीं की। सुना है कि मोहनोत परिवार की किसी सेठाणी के साथ संत-सतीदर्शन के लिए आपका जाना होता था, व्याख्यानवाणी भी श्रवण करते थे। ऐसा करते हुए उन्हें वैराग्य आया। अन्य कारण रहा हो तो वह भी मैं नहीं जानता। हमारा प्रसंग था बीज वृक्ष बनता है, क्षमता है उसमें समुचित संयोग मिलने चाहिए। आत्मा संत-संगति को पाकर महात्मा बनती है। पाकर भी राग, पापकर्म नहीं छूटे तो कैसे महात्मा बने?

मेरी इस बात को मैं एक दृष्टांत देकर स्पष्ट कर रहा हूँ। एक गरीब व्यक्ति अपने दारिद्र्य से अत्यन्त व्यथित था। न समय पर भोजन, न पहनने को पूरे वस्त्र, न रहने को छोटी-मोटी झोंपड़ी। वह चाहता था कि यह दारिद्र्य किसी तरह मिट जाये? संयोग से गाँव में एक जोगी आया। गाँव के बाहर मंदिर में डेरा डाला। लोग उसके पास आने लगे। वह लोगों की बातें सुनता। अधिकतर लोग अपने कष्टों की बात करते। जोगी उन्हें कुछ न कुछ उपाय बताता और सान्त्वना देता। एक दिन उस गरीब ने भी सुना जोगी के विषय में। वह भी गया। बैठा, दंडवत् प्रणाम किया। अपने दारिद्र्य का रोना रोया। गरीबी मिटाने की प्रार्थना की।

जोगी बाबा के पास एक लोहे का चिमटा था, जैसा कि हर जोगी रखते हैं। जहाँ जोगी का आसन था, उसी के पास चिमटा रखा रहता था। गरीब की बात सुन जोगी आसन से उठा। पास ही मंदिर की कोठरी में उसकी एक छोटी सी पेटी रखी थी, वह वहाँ गया। पेटी को खोलकर अन्दर से उसमें रखा पत्थर हाथ में लिया और बाहर आ गया। आसन पर बैठ उसने पत्थर को चिमटे के पास रख दिया। रखते समय पत्थर का चिमटे से स्पर्श हो गया। चिमटा स्पर्श पाते ही चमकने लगा। पहले वह लोहे का था अब वह स्वर्ण का बन गया। सोने के चमचमाते चिमटे को वह गरीब देखता रह गया। अभी-अभी तो लौह का था, फिर स्वर्ण कैसे बना? कोठरी में पेटी भी लोहे की थी। दरवाजे से स्पष्ट दिखाई देती थी। पेटी खोलकर पत्थर लाए बाबा। पेटी सोने की क्यों नहीं बनी? गरीब आश्चर्य में डूब गया। वह कभी चिमटे को देखता, कभी पेटी को और फिर देखता हुआ पत्थर को। यदि पत्थर करामाती है तो चिमटा ही क्यों बदला? पेटी में बदलाव क्यों नहीं?

जिज्ञासा प्रबल बनी तो जोगी से जिज्ञासा का समाधान चाहा। गरीब व्यक्ति की बात

सुन जोगी मुस्कुराया। उसने पुनः आसन छोड़ा और अन्दर जाकर पेटी बाहर ले आया। गरीब को दिखाई पेटी। गरीब ने देखा खुली पेटी के भीतर एक कागजनुमा प्लास्टिक टुकड़ा या कुछ और वस्तु है। अब जोगी ने कहा- बंधु! इस पत्थर का लोहे की इस पेटी से संसर्ग ही नहीं था। स्पर्श नहीं हो, संग ही नहीं हो तो पत्थर का टुकड़ा कैसे रंग दिखाए? पेटी की लौह धातु में कैसे परिवर्तन आए? स्पर्श मिल जाता पेटी को, संगति हो जाती दोनों की तो पेटी सोने की हो जाती।

समझ गए होंगे। जहाँ आवरण है, वहाँ प्रतिफल नहीं- परिवर्तन नहीं। चिंतन करिए- कहीं आपके भीतर भी आवरण तो नहीं है? मुझे तो लगता है आप लोगों के भीतर भी कोई पर्दा है। किसका पर्दा? कैसा आवरण? पाप का आवरण। ज्ञान पर आवरण, दर्शन पर आवरण।

संवत् 1952 की चैत्र कृष्णा द्वादशी के दिन छोगाजी ने समस्त पापों का परिहार कर दिया। 'सव्वं सावज्जं जोगं पचक्खामि, तिविहं तिविहेणं'- तीन करण, तीन योग से सर्व सावद्य योगों के प्रत्याख्यान ले लिए। संयमपथ ग्रहण कर लिया। दीक्षा अंगीकार कर ली। पाटे पर विराजमान हो गई। इस अवसर पर सांसारिक मातुश्री ने जो गीत गाया, उसकी प्रारम्भिक पंक्ति थी-

''इण शील धर्म रो लावो, जग में सतियाँ ले गई रे।
ब्राह्मी सुन्दरी दोनों बहनें, रह गई अखण्ड कंवारी रे।।''

दुनियादारी में, सांसारिक परम्परा में कहा जाता रहा कि निस्संतान, निपूती, बांझ का मुँह नहीं देखना। प्रभु, तीर्थंकर भगवन्त कहते हैं- बाल ब्रह्मचारिणी, शीलव्रती नारी तो देवताओं के लिए भी पूज्य है। निःसंतान है, निपूती है, पर उनके दर्शन महान् सौभाग्य की बात है। शील का रतन है जिनके पास उनकी शक्ति, उनका आत्मबल अत्यन्त ओजस्वी। वे ही आग को पानी, विष को अमृत, सर्प को पुष्पमाला बनाती हैं। आदि पुरुष, इस अवसर्पिणी के आदि धर्म-प्रणेता भगवान आदिनाथ की दोनों पुत्रियाँ ब्राह्मी और सुन्दरी का नाम जैन धर्म की सोलह महाविशिष्ट सतियों में आता है। दोनों ने अनेकानेक पतितों का उद्धार कर उनको आत्मकल्याण के पथ पर आगे बढ़ाया। इस काल में महासती छोगाजी म. सा. ने उन्हीं महासतियों के पदचरणों का अनुगमन किया। कहूँ अपने शब्दों में तो वे वर्तमान की ब्राह्मी सम थी, सुन्दरी समान थी। महान् ज्ञानवती, शीलवती, सहस्रों पतितों की उद्धारिणी, अपूर्व संयमनिष्ठ थीं वे। उनका संयममय जीवन महा चमत्कारमय था। उनके जैसा आदर्श, अनुकरणीय, विस्मयकारी जीवन अन्यत्र नहीं देखा।

स्वामीजी चौथमल जी म.सा. कहा करते थे- ''पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियाँ ज्यादा

दीक्षित होती हैं। स्त्रियों में भी वैधव्य जीवन जीने वाली स्त्रियाँ अधिक दीक्षा लेती हैं। बालब्रह्मचारिणी कन्याओं की दीक्षाएँ अत्यल्प, बहुतकम, अंगुलियों पर गिनी जा सके-इतनी ही होती है।" छोगाजी बालब्रह्मचारिणी थी। इसी कारण सतियाँ प्रातः उठकर सर्वप्रथम उन्हीं का मुखदर्शन करती थीं और इसे अपने संयम जीवन के लिए हितकारी मानती थीं।

इतना सरल नहीं है शील पालन, ब्रह्मचर्य की साधना, कामभोग पर नियंत्रण। कहने को सरल पर करने में अति दुष्कर। अच्छे-अच्छे योगी-यति, महात्मा, संन्यासी इसी ब्रह्मचर्य के पालन में स्थिर नहीं रह सके, विचलित बने, डगमगा गए और नीचे पाप के पंक में, गड्ढे में गिर गए। अखण्डता से ब्रह्मचर्य का पालन महान् योगियों, संत-सतियों के ही वश की बात है। इसके लिए चाहिए अत्यन्त धैर्य एवं सहनशीलता।

छोगाजी के चेहरे पर उनके अखण्ड शील के कारण अनोखी आभा दीप्त रहती थी। ओजपूर्ण प्रभावी वाणी के साथ ज्ञान-दर्शन में भी गहनता थी। ज्ञान व क्रिया, दोनों का संगम थीं वे। यही कारण है कि अनेकों दीक्षाएँ उनकी सन्निधि में हुईं। अजमेर में जब वे विराजमान थीं तो वहाँ लाल बुखार का रोग फैला। एक साध्वी इस रोग से पीड़ित बनीं। औषधोपचार से बीमारी ठीक न हो सकी। वे उसी रोग में काल-कलवित हो गईं। जिस रोग से प्रथम साध्वी का संयोग से वियोग हो गया, दूसरे दिन भी अन्य साध्वी को वही रोग हुआ। कुछ रोग आजकल हो ही ऐसे रहे हैं कि उनके विषय में कुछ भी अनुमान नहीं होता। पता नहीं लग पाता कि कारण क्या उनकी उत्पत्ति का। रोग पता चले, दवा दी जाए तब तक चला-चली का समय आ जाता है और रोगी मृत्यु के मुँह में समा जाता है। डेंगूं बुखार, चिकनगुनिया आदि जाने क्या-क्या ऐसी बीमारियाँ हो रही हैं आजकल। लाल बुखार में दूसरी साध्वी भी स्वर्ग सिधारीं। इसके बाद तीसरी साध्वी को भी उसी रोग में मौत ने जकड़ लिया और फिर चौथी साध्वी के साथ भी यही स्थिति रही और वे भी काल कर गई। छोगांजी पाँच साध्वियाँ थी। पाँच में से चार को रोग ने निगल लिया। एक स्वयं ही सती रह गई वहाँ।

ऐसे समय में धैर्य रखना अत्यन्त कठिन कार्य है। पर छोगाजी तो महा धैर्यवती थीं। इतने कष्ट, ऐसे विकट और कठोर समय व परिस्थिति में भी उन्होंने धैर्य नहीं खोया, समत्वभाव में स्थिर रहीं। स्वयं तो अविचलित रहीं ही, दूसरों को भी धैर्य और समत्व का उपदेश दिया। सरल नहीं था, पर विरल व्यक्तित्व की धनीं थीं वे, अतः दुष्कर को भी सहज बना लिया।

संयमी जीवन हो या संसारी-जीवन, दोनों में सहयोग की जरूरत रहती है। तीर्थंकर और प्रत्येक बुद्ध तो प्रबुद्ध होते हैं, महापराक्रमी व आत्मबली होते हैं, अतः उनको सहयोग की अपेक्षा नहीं रहती, आवश्यकता नहीं होती। सामान्य छद्मस्थ व्यक्तियों का धैर्य ऐसे प्रसंगों पर जवाब दे जाता है, साथ छोड़ देता है। सामान्य नहीं थे वे सतीजी। कितना कठोर

आघात, पर न अन्तर में गम और न चेहरे पर शिकन। आयुष्य पूर्ण हुआ, जाना था अतः चले गए। सहनशीलता में धरती के समान, अतः सह गई वह गम, दुःख व्यथा।

अजमेर में यह जो घटना घटी, उसकी सूचना किशनगढ़ में विराजित इन्द्रकंवरजी साध्वी को मिली। उन्होंने तुरन्त अपने संघाड़े की दो सतियों को अजमेर के लिए विहार करवा दिया। स्थिति ऐसी बनी कि वहाँ भी एक सती रोगग्रस्त बन स्वर्गवासी हो गईं।

अखण्ड-शील, शुद्ध संयम एवं निर्मल आत्मभावों का प्रभाव नर-नारियों पर ही नहीं, प्रकृति पर भी पड़ता है और वही चमत्कार मान लिया जाता है। सामान्य लोगों के लिए तो जो अनहोनी घटित हो जाये तो उसमें आश्चर्य का होना कोई अनहोनी नहीं। अजमेर से विहार किया। अनेक ग्राम-नगरों का स्पर्श कर, जिनेश्वर देव की पावन वाणी का प्रकाशन करते, भव्यात्माओं के भीतर जागृति की रश्मियाँ भरते सती छोगाजी गुलाबपुरा पहुँचे। संवत् 2000 में गुलाबपुरा में चातुर्मास हुआ। श्रावण कृष्णा त्रयोदशी या शायद चतुर्दशी रही होगी। बरसात हुई। गुलाबपुरा की नदी में पानी का रेला आया। नदी बहने लगी। नदी जब आती है गाँवों में तो स्वभावानुसार ग्रामीण नदी का बहता पानी देखने जाने लगे। नदी के किनारे-किनारे ग्रामीणों की भीड़। पानी नर-नारियों, पशु-पक्षियों सभी के लिए सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण। कहते हैं कि पानी ही जीवन है। जीने के लिए अन्न से भी अधिक जल की आवश्यकता होती है। भूख को जितने समय सहन किया जा सकता है, उतने लम्बे समय तक प्यास को सहन नहीं किया जा सकता। पीने के लिए ही नहीं, जो कुछ खाते हैं उसकी उत्पत्ति में भी पानी ही मुख्य है। मकान-दुकान-कारखाने आदि के निर्माण में भी पानी चाहिए। चिकित्सा, देवा आदि में भी पानी की प्रमुखता है। अच्छी वर्षा हो तो किसान ही नहीं, छत्तीस ही कौम के नर-नारियों की प्रसन्नता बढ़ जाती है। नहीं हो वर्षा, अकाल की स्थिति होने लगे तो सब लोग मायूस बन जाते हैं। जल है तो ही जीवन है। पृथ्वी, अप, तेजस्, वायु, वनस्पति व त्रस- इन छः ही कायों का जीवन-सम्बल जल है।

शायद किसी सती के मन में भी बहती नदी देखने, नदी में बहता पानी देखने की इच्छा जगी होगी, किसी ने स्थंडिल के लिए (बाहर-भूमिका) जाते समय देखने का विचार किया होगा। छोगा जी को ज्ञात हुआ तो सतियों से कहा- नदी का पानी देखने जाना, मन में उत्पन्न कुतूहल भाव को पूरा करना अपनी श्रमणी-मर्यादा से बाहर है। स्थंडिल के बहाने से उधर जाने में भी दोष लगेगा, कारण कि भावना नदी देखने की है।

कह दिया सतीजी ने नहीं जाना, पर नदी को तो उन तक आना था। जाकर नहीं देखा, वहीं पर स्थानक में ही देख लिया। हुआ यह कि नदी का पानी बढ़ता रहा, बढ़ता ही गया। देर रात वह ग्राम में पहुँच गया, घरों में आ गया, स्तर और भी बढ़ने लगा पानी का। गाँव में हाय-त्राय मच गई। मकान डूबने लगे। लोगों को जान-माल का खतरा पैदा हो गया। कोई

माल बचाकर भाग रहा था, कोई परिवारजनों को सुरक्षित बनाने के लिए भाग-दौड़ कर रहा था तो कुछ को मवेशियों की, पशुओं की चिन्ता लगी और वे उन्हें बचाने में लग गए। बाढ़ की स्थिति हो गई। पानी में नावें उतारी गई और जान-माल की रक्षा के लिए उनका उपयोग होने लगा। एक भला आदमी स्थानक तक लकड़ी का डांगा (नाव) ले आया और बाहर से चिल्लाने लगा- ''महाराज! बाहर आकर नाव में बैठ जाइए। यहाँ रहे तो डूबने, जान जाने का खतरा है।''

वे तो थे अपनी संयम की मर्यादाओं में दृढ़। मना कर दिया। नहीं गए पानी में। नाव में नहीं बैठे। कितनी ही सतियों के प्राण चले गए। किसने बचाया उनको? आयुष्य इतना ही होगा तो हम सतियाँ मर्यादा में रहकर अंतिम प्रत्याख्यान कर प्राण त्यागेंगी। बस यही था चिन्तन उनका। स्थानक एक मंजिल का था। छत तक सीढ़ियाँ थीं। पानी चढ़ा। प्रथम मंजिल तक पहुँचा। सतियाँ प्रथम मंजिल तक पानी चढ़ने से पूर्व ही आ चुकी थीं। पानी और चढ़ने लगा तो इस मंजिल की छत तक बनी सीढ़ियों पर चढ़ने लगीं पर एक-एक सीढ़ी। पानी एक सीढ़ी तक आया तो वे दूसरी सीढ़ी पर, दूसरी तक आया तो तीसरी पर। अंतिम सीढ़ी तक आ गया पानी। छोगाजी आसन लगाए बैठे हुए यह सब देख रहे थे।

अन्तिम सीढ़ी को पार करने लगा पानी तो सतीजी आसन से उठे, आए अंतिम सीढ़ी के पास। नदी के चढ़े जल को देखा। फिर धीर गंभीर स्वर में बोले- ''बहन! तुझे देखने का मन था सतियों का। तुम यहाँ आई अतः धन्यवाद। देख लिया इन्होंने तुम्हें। अब जितना आ गई, उतना बहुत है।''

शब्द जैसे नदी ने सुन लिए हों और आज्ञा का पालन किया हो, ऐसी प्रतिक्रिया हुई। देखते-देखते नदी का पानी उतरने लगा।* प्रातःकाल तक काफी नीचे उतर गया। धीरे-धीरे बाढ़ का प्रभाव भी कम हुआ। जन-जन ने शांति की श्वांस ली।

यह सती जी के शील का, उनके संयम का, मर्यादा-पालन का प्रभाव था। प्राणकंठ में आ चुके थे उनके भी। पर मन शांत था। भीतर शांति थी तो बाहर भी शांति विराजमान थी। संयम की मर्यादा का उल्लघंन नहीं किया। प्राण जाएं तो जाएं, पर अपने प्रत्याख्यान, अपना संयम बनाए रखा। कैसी उत्कृष्ट भावना!

व्रत, महाव्रत पालन की बड़ी महिमा है। आपमें से कई भाई-बहन कह देते हैं- महाराज! नियम, व्रत आदि का क्या लेना? हम तो वैसे ही पालन करते ही हैं। ध्यान रखिए- प्रतिज्ञा लेना, प्रत्याख्यान करना विश्वास की दृढ़ता का सबसे बड़ा कारण है। व्रत और नियम ग्रहण कर रहे हैं, पर साथ ही कह रहे हैं- महाराज! बाहर आदि जाना पड़े, शरीर

---

*बौद्ध दर्शन में शील एवं सत्य के ऐसे प्रभाव को 'सच्चकिरिया' कहा गया है।

का कारण विशेष बन जाए तो छूट। मेरा कहना है कि छूट उनके लिए जो कायर हैं। पहले से ही डरते हैं कि क्या पता हमसे पालना हो सकेगी या नहीं।

सतीजी संवत् 2012 तक अजमेर में विराजित रहे। संवत् 2013 की आषाढ़ कृष्णा चतुर्थी को आपका स्वर्गवास हुआ। संघ के प्रति भी भाव सदैव अच्छे रहे। स्वामीजी श्री लाभचंदजी म.सा. व स्वामीजी श्री चौथमलजी म.सा. को पुनः संघ में लेने के लिए संघर्ष में सतीजी का बड़ा हाथ था। यह संवत् 2005 का प्रसंग है।

यह भी कह रहा हूँ कि इस मारवाड़ को इस समस्त राजस्थान को संभालने, क्षेत्रों में जागृति लाने, भक्तों को निरन्तर प्रेरणा देने का काम महासती मंडल सदा से करता रहा है और आज भी महासतियों का महत्त्वपूर्ण योगदान है। संत तो संघ में कम हैं, अतः संघ की सार-संभाल का कार्य सतीवर्ग ने अपने कंधों पर ले रखा है।

पुनः अपनी बात पर, आज के विषय पर आ रहा हूँ- आप सभी का दायित्व है कि संयमियों के सुख की कामना और उसके लिए पुरुषार्थ करने से पूर्व उनके हित का चिन्तन करें, हित का ध्यान रखें, हित के लिए तत्पर रहें। इससे आपका कल्याण तो होगा ही, हमारा भी आत्मोद्धार होगा। ■

आध्यात्मिक पर्व : पर्युषण

प्रो. सुमेरचन्द जैन

पर्युषण पर्व आत्मा को आत्मा में निवास करने की प्रेरणा देता है। पर्युषण महापर्व आध्यात्मिक पर्व है। इसका जो केन्द्रीय तत्त्व है, वह है आत्मा। आत्मा के निरामय, ज्योतिमर्य स्वरूप को प्रगट करने में पर्युषण महापर्व अहम् भूमिका निभाता है। यह पर्व मानव से मानव को जोड़ने व मानव हृदय को संशोधित करने का पर्व है।

पर्युषण पर्व कषाय शमन का पर्व है। इस पर्व में सभी अपने को अधिक से अधिक शुद्ध एवं पवित्र करने का प्रयास करते हैं। प्रेम एवं सच्ची मैत्री के व्यवहार का संकल्प लिया जाता है। खान-पान की शुद्धि एवं आचार-व्यवहार की शालीनता को जीवन शैली का अभिन्न अंग बनाए रखने के लिए मन को मजबूत किया जाता है। मानवीय एकता, शांतिपूर्ण सह अस्तित्व, मैत्री, शोषणविहीन सामाजिकता, अन्तरराष्ट्रिय नैतिक मूल्यों की स्थापना, अहिंसक जीवन शैली का समर्थन आदि तत्त्व पर्युषण महापर्व के मुख्य आधार हैं।

पर्युषण पर्व आत्मशोधन का पर्व है, निद्रा त्यागने का पर्व है। सचमुच में पर्युषण पर्व एक ऐसा सवेरा है जो निद्रा से उठाकर जागृत अवस्था में ले जाता है। अज्ञान रूपी अंधकार से ज्ञानरूपी प्रकाश की ओर ले जाता है।

-10, इण्डस्ट्रियल एरिया, रानी बाजार, बीकानेर-334001 (राज.)

प्रेरक-संदेश

आत्म-पोषण का अवसर है चातुर्मास

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. द्वारा गुरुपूर्णिमा, 19 जुलाई, 2016 को निमाज, जिला-पाली (राज.) में चातुर्मास प्रारम्भ के अवसर पर किए गये आह्वान का संकलन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतनमलजी मेहता द्वारा किया गया है। -सम्पादक

पंच परमेष्ठी को कोटि-कोटि वन्दन!

पानी से जीवन चलता है, वीतराग वाणी से जीवन बनता है। पानी है तो जीवन है, उसी तरह जीवन बनाने और जीवन को जागृत करने के लिए वीतराग वाणी है। यह सन्देश जैन धर्म का ही है, ऐसी बात नहीं है। हर परम्परा जीवन-निर्माण के लिए सद्ज्ञान और सद्-आचरण को अपनाने की प्रेरणा करती है। वैष्णव परम्परा में देवशयनी एकादशी से चातुर्मास लगता है, जैन परम्परा में आज की पक्खी से चातुर्मास का शुभारंभ है। चातुर्मास के ये चार माह ज्ञान-ध्यान, त्याग-तप, साधना-आराधना और व्रत-प्रत्याख्यान अंगीकार कर जीवन को समुन्नत करने के लिए हैं। आप चाहे ज्ञान से, चाहे तप से, चाहे व्रत-नियम से अथवा संवर-साधना से जिस क्रिया में आपकी रुचि है, आप अपनी भावनानुसार व्रत धारण करें और साधना में आगे बढ़ें। स्वयं करें, अपने परिवारजनों को धर्म-साधना में जोड़ें।

संत-सती एकान्त आत्म-पोषण करते हैं। आप गृहस्थ चातुर्मास के इन पवित्र दिनों में स्वयं आत्म-पोषण करें, परिवारजनों को आत्म-पोषण में सहयोग करें। मैं यहाँ आने वाले भक्तों से अपेक्षा रखता हूँ कि वे सामायिक और संवर की साधना करें, त्याग-तप की आराधना में पुरुषार्थ का परिचय दें। मेरी निमाजवासियों से विशेष रूप से अपेक्षा है कि वे आगम स्वधर्मी बन्धुओं की आवभगत में ही नहीं रहें। व्यवस्था की दृष्टि से करना पड़ता है, करना चाहिए किन्तु व्यवस्था करते हुए भी वे आत्म-पोषण को गौण नहीं करें।

आप आज गुरुपूर्णिमा मना रहे हैं। गुरु पूर्णिमा कब सार्थक होगी? जब आप व्रत-नियम लेकर साधना में गति-प्रगति करेंगे तो ही आपका गुरुपूर्णिमा मनाना सार्थक होगा। अन्यथा गुरु चरण सन्निधि में आए, प्रवचन सुना, भोजन किया, मिलने वालों से मिले, मांगलिक सुनी और चल दिए तो उनके लिए पूर्णिमा हो या अमावस्या सब एक जैसी है।

आप चातुर्मास व्यवस्था के लिए जैसे समितियें बनाकर कार्य-योजना की क्रियान्विति

करते हैं, वैसे ही धर्म-साधना के लिए, आत्म-जागृति के लिए जीवन-निर्माण के लिए कौन ज्ञान में, कौन तप में, कौन सेवा में, कौन संवर-साधना में आगे बढ़ना चाहता है उसमें अपना नाम लिखाए। जैसे आप व्यवस्था की दृष्टि से आवास समिति, भोजन समिति, स्वागत-सत्कार समिति जैसी कई-कई समितियें बनाते हैं, वैसे ही साधना-आराधना में जिसकी जैसी रुचि है, उसमें नाम तो लिखवाए ही, भावनापूर्वक पुरुषार्थ करे तभी गुरुपूर्णिमा से चातुर्मास का शुभारम्भ सफलता की ओर गतिमान होगा। आत्म-पोषण के लिए आप चातुर्मास काल का सदुपयोग करें, यहीं मंगल कामना है।

स्व में आना स्वागत है

(निमाज में 10 जुलाई को मंगल प्रवेश पर उद्‌बोधन)

स्वागत गान से एवं स्थानीय श्रावकों ने शब्दों से संतों का स्वागत किया। मैं भी आप सबका स्वागत करता हूँ। देह से देहातीत बनाने की कला गुरुदेव (आचार्य हस्ती) में थी। वास्तव में स्वागत का अर्थ होता है स्वस्मिन् आगतम्-स्वागतम्। अर्थात् अपने आत्मस्वरूप में आना स्वागत है। आपके द्वारा सद्‌गुणों में आने का मैं स्वागत करता हूँ। वीतरागवाणी से जीवन बनता है, निर्माण होता है। उत्तर से दक्षिण तक ज्ञान की कला सिखाने वाले गुरु के जीवन से आपने क्या प्रेरणा ली? अपना ज्ञान जगाओ। बच्चे इससे वंचित न रहें। आज प्रभावना एक ऐसी चीज़ हो गई है, जिससे धर्म का स्वरूप दब गया। श्रद्धा ज्ञान से वर्धापित होगी। श्रद्धा से ही चारित्र में चरण बढ़ेंगे। हमारा मूल धन, हमारी मूल जानकारियाँ यदि सोई हुई रहेंगी तो कैसे आगे बढ़ेंगें। इसके लिए ज्ञान का दीप प्रज्ज्वलित कीजिए। हर बालक में सामायिक की कमाई एवं प्रतिक्रमण की पूँजी सुरक्षित रहे। यह स्थानकवासी परम्परा की मूल पूंजी है। इसे स्वाध्याय द्वारा सुरक्षित रखना है। कोई भी जैन साधु सामायिक के बिना नहीं होता। शिक्षा व्रत में पहला व्रत सामायिक है। सामायिक करने के लिए उत्सुक रहें। सत्संग ज्ञान का दरवाजा है, पाप का निकंदन करने पर ही आत्मा पवित्र बनती है।

मूल पूंजी का ज्ञान किए बिना कोई नहीं रहे। सामायिक प्रतिक्रमण के लिए सभी का स्वागत कर रहा हूँ। आत्म-स्वरूप में आकर आत्मजयी बनें। आने वाला हर साधक सामायिक का लक्ष्य रखे। सुनकर ज्ञान बढ़ाएँ, आचरण में लायें, आत्मा से जुड़ने का लक्ष्य बने। संघ गुणों से जयंवत है, अतः ज्ञान-दर्शन-चारित्र व तप से पूरित हों, यही कामना है। पाप छोड़कर, आप स्वयं अपना स्वागत कर गुणों का अभिवर्धन करें।

(आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का यह उद्‌बोधन श्री जगदीशजी जैन द्वारा संकलित है।)

प्रवचन

यदि अभाव से बचना है तो स्व-रक्षण की वृत्ति को सर्व-रक्षण में बदलें

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.

तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. द्वारा महावीर भवन, अलवर में 23 नवम्बर, 2015 को फरमाए गए इस प्रवचनांश का संकलन-सम्पादन श्री ओमप्रकाशजी गुप्ता, राजस्थान टाइम्स, अलवर द्वारा किया गया है।-सम्पादक

क्या आप चाहते हैं कि हमारे जीवन में अभाव की स्थिति कभी नहीं आए? रोजमर्रा की जिन्दगी में आप देखते होंगे कि हजारों-लाखों लोगों के पास अभी भी खुद का घर नहीं है। किसी के पास पहनने को अच्छे कपड़े नहीं तो किसी को भरपेट पौष्टिक खाना तक नसीब नहीं होता। आजाद भारत में अभी भी लाखों की संख्या में ऐसे-ऐसे गरीब व असहाय लोग हैं जो फुटपाथ अथवा सड़कों के किनारे रात गुजारते हैं। भीख मांग कर खाते हैं। रोजगार के पर्याप्त साधन न होने से फटेहाल जिन्दगी जीने को विवश हैं। बीमारी का पैसों के अभाव में अच्छा इलाज तक नहीं करा पाते। छोटे-छोटे बच्चे जो पढ़ना-लिखना चाहते हैं, परन्तु इसलिए पढ़ नहीं पाते कि घर की आर्थिक स्थिति डांवाडोल है। अभाव की स्थिति की वजह से सारे सपने चूर-चूर हो जाते हैं। अभाव की यह स्थिति क्यों बनती है, कभी सोचा? सच बड़ा कड़वा होता है।

कर्म सिद्धान्त का कहना है कि पूर्व भवों में जब कभी जीव सब तरह से सम्पन्न था, तब अभाव में रहने वालों की उपेक्षा या अनदेखी करके अपनी ही मनमानी व संवेदनहीनता में लिप्त रहा। जिन्होंने किसी तरह की मदद मांगी अथवा सहयोग की आकांक्षा की, उन सबकी अवहेलना की, परिणामस्वरूप एक दिन जीव को स्वयं किसी न किसी भव में अभाव की स्थिति झेलनी-भुगतनी पड़ती है। जिन्हें भविष्य में अभाव की जिन्दगी से बचना है वे सब स्व-रक्षण की वृत्ति को सर्व-रक्षण की भावना में परिवर्तित करें। यदि हम किसी भी रूप में अभाव से त्रस्त लोगों की मदद-सहयोग-सहकार-सम्बल-प्रोत्साहन देने में तत्पर होंगे, तब निश्चित ही इससे अपना स्वयं का भला अधिक होगा। हम यदि तन या धन से सहयोग करने में असमर्थ हैं, तब मन से तो भला कर ही सकते हैं। प्रतिदिन दिन में 3 बार पावनता के साथ यह मंगल भावना करें कि 'उसका भला, मेरा भला, सबका भला।'

अभावों में रहने वालों के लिए अच्छे-पवित्र व कल्याण के भावों से कभी-कभी बहुत अच्छे परिणाम आते हैं।

विडम्बना यह है कि कलियुगी आदमी इतना संकीर्ण व स्वार्थी हो रहा है कि वह अपने अलावा दूसरों का मन से भी भला नहीं सोच पाता और जो लोग वाकई में भला करते हैं या भलाई के किन्हीं भी कार्यों में जुटते हैं, उनसे प्रेरणा अथवा उनकी प्रशंसा करने की जगह भीतर ही भीतर उनसे जलने-भुनने लगता है। ऐसी संकीर्ण व संकुचित मानसिकता ही अपने जीवन में अभाव का बीजारोपण करती है। इसलिए जो लोग खाते-पीते या सम्पन्न हैं, वे इतना जरूर करें कि उनके द्वारा जो पैसा व्यसन-दिखावा-आड़म्बर-फिजूल के व्यर्थ कार्यों में व्यय किया जा रहा है, उसे गरीब के आँसू पोंछने व अभाव में जीने वालों के बेहतर जीवन हेतु खर्च करें। इसे किसी गरीब पर एहसान नहीं समझें वरन् अपने कर्त्तव्य के साथ भविष्य में अभाव से बचने का अग्रिम प्रयास माना जाए।

जो अभाव में हैं उनसे अपेक्षा है कि वे कभी जीवन में हताशा-निराशा नहीं लाएं और सच्चा व नेक इंसान बनने का अपना लक्ष्य रखकर मन से शिक्षा व गुणों को ग्रहण करते रहें। जब लक्ष्य सही, पावन और समाज व राष्ट्र के हित में होता है, तब वह बालक एक दिन झंझावातों को सहन करते व अभावों की बेड़ियों को तोड़ते हुए ऊँचे मुकाम तक जरूर पहुँचता है। गरीबी व अभाव को कभी अभिशाप नहीं बल्कि उसे जीवन में आगे बढ़ने का सुअवसर समझें, क्योंकि अभावों से जूझने वाले ही एक दिन वह सुनहरा मुकाम पाते हैं जो अमीरी व सुविधाओं में रहने वालों को भी प्राप्त नहीं होता। इतिहास के पन्ने इस बात के प्रमाण हैं कि जिन्होंने अभावों के बीच रहते हुए अपने सुसंस्कारों व श्रेष्ठ शिक्षा के द्वारा स्वर्णिम इतिहास बनाए हैं, हम उन महापुरुषों के जीवन से जितना अधिक सीख पाएँगे उतना ही जीवन निर्माण और एक दिन आत्म-उत्थान की दिशा में भी आगे बढ़ पाएँगे। यह धरती अमीरों से नहीं सत्पुरुषों से गौरान्वित होती आई है। जो अभावों में भी मुस्कुरा कर और हौंसले के साथ आगे बढ़ता रहता है, संसारी लोग एक दिन उसी के पीछे-पीछे भागते हैं। जो हर जीव में आत्मवत् देखना शुरू कर देता है, वही जीव एक दिन मोक्ष के निकट पहुँच पाता है।

सामायिक उपकरण संघ कार्यालय में उपलब्ध

आपको सूचित करते हुए हर्ष है कि सामायिक उपकरण का सेट जिसमें दुपट्टी, चोलपट्टा, आसन, मुँहपत्ती, पूंजणी, माला तथा प्रतिक्रमण की पुस्तक सम्मिलित है, संघ कार्यालय में लागत मूल्य से भी कम **रियायती दर पर 200/- रुपये** में उपलब्ध है। -*पूरणराज अबानी, महामंत्री, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ*

प्रवचनांश

नमो लोए सव्वसाहूणं : अमृत शिक्षा (3)

महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी, शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. की प्रशिष्या एवं व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. की शिष्या महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा. प्रतिदिन 'एक कदम धर्म की ओर' कक्षा को सम्बोधित करते हैं। विभिन्न कक्षाओं में 'नमो लोए सव्वसाहूणं' पद के सम्बन्ध में उन्होंने जो विचार व्यक्त किए, उनका संकलन कर श्रावकरत्न श्री अशोकजी कवाड़, चेन्नई ने हमें उपलब्ध कराया है।-**सम्पादक**

30. जो संग्रह वृत्ति वाले नहीं होते, मात्र आवश्यकता की तथा स्वयं उठा सकें उतनी ही वस्तुएँ रखते हैं, अत: ''नमो लोए सव्वसाहूणं''।
31. जो वेदना उत्पन्न होने पर भी उपचार नहीं करवाने का ही प्रयास करते हैं, उपचार करवा भी लें तो प्रायश्चित्त आदि से शुद्धीकरण करते हैं, अत: ''नमो लोए सव्व-साहूणं''।
32. जिन्हें आहार मिले तो समझते हैं आहार-लाभ, नहीं मिले तो समझते हैं तप-लाभ, ऐसे हर हाल में आनन्द मनाने वाले हैं, अत: ''नमो लोए सव्वसाहूणं''।
33. जो लाभ पर प्रसन्न नहीं होते, अलाभ पर दु:खी नहीं होते, अत: ''नमो लोए सव्व-साहूणं''।
34. जो प्रभु-आज्ञा के अनुरूप ही अपना हर क्षण बनाने में प्रयासरत रहते हैं, अत: ''नमो लोए सव्वसाहूणं''।
35. जो अपनी निद्रा को जीतने का प्रयास करते हैं और नींद में करवट भी लेनी हो तो पूँजकर करवट लेते हैं, अत: ''नमो लोए सव्वसाहूणं''।
36. जो समाज के बीच में रहकर भी सामाजिक नहीं बनते हैं, आध्यात्मिक रहते हैं, अत: ''नमो लोए सव्वसाहूणं''।
37. जिनके नाम की जयजयकार उन्हें अहंकार-विजय की साधना से विचलित नहीं कर पाती, अत: ''नमो लोए सव्वसाहूणं''।
38. जो मात्र कहकर नहीं जीकर जिन-धर्म को सुरक्षित रखते हैं, अत: ''नमो लोए सव्वसाहूणं''।

39. जिनके प्रत्येक वचन प्रवचन होते हैं, क्योंकि वे उनको जीवन में जीते हैं, अत: ''नमो लोए सव्वसाहूणं''।
40. जो भीषण गर्मी में भी निर्दोष पानी न मिलने पर चौविहार-त्याग की आराधना प्रफुल्लित भावों से करते हैं, अत: ''नमो लोए सव्वसाहूणं''।
41. जो जीवन पर्यन्त तीन करण तीन योगों से सावद्य योग का त्याग करते हैं, सामायिक अंगीकार करते हैं व समता में रहते हैं, अत: ''नमो लोए सव्वसाहूणं''।
42. जिनका श्रद्धाबल इतना मजबूत है कि भगवान महावीर को नहीं देखा, मोक्ष को नहीं देखा फिर भी भगवान महावीर के प्रत्येक कथन की पालना करते हुए मुक्ति प्राप्त करने के लिए जी जान से लगे हैं, अत: ''नमो लोए सव्वसाहूणं''।
43. जो सर्दी की रातों में ठिठुरते रहते हैं फिर भी जिनमें जोश ठण्डा नहीं पड़ता, अत: ''नमो लोए सव्वसाहूणं''।
44. जो तपती धूप में गोचरी जाते हैं फिर भी पगतलियों की तपन पर ध्यान नहीं देते, भिक्षाचर्या तप के जतन में लीन होते हैं, अत: ''नमो लोए सव्वसाहूणं''।
45. इतना सहकर, इतना तपकर भी जिन्हें कर्तृत्व का अभिमान नहीं होता, अत: ''नमो लोए सव्वसाहूणं''।
46. जो साता-असाता में भी प्रभु द्वारा बताई गयी आराधना विधि, प्रतिलेखन, प्रतिक्रमण आदि की निर्मल आराधना अखण्डित करते हैं, अत: ''नमो लोए सव्व-साहूणं''।
47. अस्वस्थता की घड़ियों में भी आहार-पानी की निर्दोषता में विकल्प नहीं निकालते, अत: ''नमो लोए सव्वसाहूणं''।
48. आहार के लिये गए, वहाँ वह भी है जिसे कुछ माह पूर्व ही गृहस्थ में माता से जिद्द करके बनवाकर खाते थे, पर वह वस्तु असूझती है तो एक झटके में मुँह फेर लेते हैं, ऐसे त्याग बल के धारी, अत: ''नमो लोए सव्वसाहूणं''।
49. जब कोई नहीं देख रहा तब भी आत्मसाक्षी से शुद्ध संयमाराधना में लगे रहते हैं, अत: ''नमो लोए सव्वसाहूणं''।
50. जिनके जीवन में एक मनोरंजन का साधन नहीं, फिर भी जिनका मन उदासी में नहीं रहता, अत: ''नमो लोए सव्वसाहूणं''।
51. जिनके जीवन में कभी भी साधना-पद्धति के प्रति उदासीनता नहीं होती, अत: ''नमो लोए सव्वसाहूणं''। **(क्रमश:)**

आरोग्य

जीवनशैली और आरोग्य

श्री पी. शिखरमल सुराणा

(गतांक से आगे)

8. आरोग्य व दीर्घ जीवन चाहने वालों! प्रकृति की शरण में आ जाओ, फिर तुम्हें अन्यत्र भटकना नहीं पड़ेगा। प्रकृति के नियमों पर चलना काफी है।
9. चाय, कॉफी आदि पीकर निद्रा का विरोध करना अनुचित है। ऐसे लोग शीघ्र बीमारियों के शिकार हो जाते हैं।
10. जिस अवस्था में शरीर इकट्ठे हुए विजातीय द्रव्य को निकालने में असमर्थ हो जाता है उसी अवस्था को बुढ़ापा, दीर्घ रोग आदि कहते हैं। इस सिद्धान्त के अनुसार अन्य रोगों की भाँति बुढ़ापा भी लगातार विधिपूर्वक कुछ मास तक स्वाभाविक भोजन (फल, शाक, मेवा, दूध) द्वारा दूर किया जा सकता है।
11. स्वाभाविक आहार-विहार करने वाले लोग रोग और अकाल मृत्यु से दूर रहते हैं। क्योंकि उनका शरीर निर्मल, विजातीय द्रव्य से रहित होता है। अगर स्वाभाविक भोजन नीरोग बना सकता है तो क्या उसके द्वारा हम सदा ही रोगों से नहीं बचे रहेंगे?
12. स्वाभाविक जीवन स्वर्गतुल्य व आनन्दमय होता है। स्वाभाविक जीवन जीने वाले रोग व मृत्यु से नहीं घबराते, सदा प्रसन्न व सन्तुष्ट रहते हैं।
13. हमारे धर्म-शास्त्रों में अनेक व्रत-उपवासों की महिमा गायी गई है। जो लोग नियमपूर्वक व्रत उपवास करते हैं, वे नीरोग और दीर्घजीवी देखे गये हैं।
14. आरोग्य के रक्षार्थ उपवास, फलाहार आदि से शरीर को साफ रखना तथा रोगों के मूल कारण खराब/गन्दे भोजन से परहेज करना चाहिये।
15. हर एक मनुष्य का प्रधान कर्त्तव्य है कि वह अपना आहार प्रकृति के अनुकूल, सात्त्विक व उत्तेजना-रहित रखे, ताकि शरीर गन्दगी का पिटारा न बने।
16. आरोग्य व सुख चाहने वालों को कुपथ्य (खराब भोजन) से सख्त परहेज करना चाहिए और खुली हवा में व्यायाम करना चाहिये। उपवास द्वारा पुराने संचित मल को शरीर से निकालते रहना चाहिए, ताकि रोगों के अपार कष्ट उठाने की नौबत न आए।
17. दवा के अधिक प्रचार ने दुनिया को इतना खराब कर डाला है कि प्रकृति के सभी कार्यों में तुरन्त विघ्न डाल दिया जाता है। रोगों के लक्षण उत्पन्न होते ही दवा के जरिए

उन्हें दबा दिया जाता है और शरीर की जीवन-शक्ति को सदा के लिए कमजोर बनाया जाता है।

20. लोग रोग की असलियत को नहीं समझते हैं। वे यह नहीं जानते कि रोग अचानक कभी नहीं आते; कुपथ्य से धीरे-धीरे अन्दर बढ़ते हैं। प्रकृति-विरुद्ध जीवन तथा औषधि सेवन से रोग बढ़ते हैं।

21. दवाइयों के आधार पर रोगों या अकाल मृत्यु से बचे रहने की आशा करना ऐसा ही व्यर्थ है, जैसे कि अनेक छिद्रों वाली छतरी धारण करके मूसलाधार वर्षा से रक्षा की आशा करना।

23. एक बार स्वाभाविक भोजन पर रहकर देखिये। आपका जीवन, आपके विचार और आपकी परिस्थिति में कितना अनुकूल परिवर्तन हो जाता है। आपके मन से डर व चिन्ताएँ दूर हो जाएँगी। शरीर विजातीय द्रव्य के भार से रहित, हल्का, फुर्तीला व नीरोग होने लगेगा और संसार आनन्दमय जान पड़ेगा। **(क्रमशः)**

-राष्ट्रीय अध्यक्ष : अ. भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ (जोधपुर)
इंटरनेशनलज लॉ सेंटर, 61-63, डॉ. राधाकृष्णन रोड़, मैलापुर, चेन्नई-600004

संघ का विकास : आपके हाथ

श्री पी.शिखरमल सुराणा

1. गुरु हस्ती के दो फरमान।
   सामायिक-स्वाध्याय महान्।।
2. गुरु हीरा का यह संदेश।
   व्यसन-मुक्त हो सारा देश।।
3. संघ अध्यक्ष का यह है कहना।
   आपस में बस प्रेम से रहना।।
4. मोक्ष जाना अगर कुशल क्षेम।
   आपस में बस प्रेम ही प्रेम।।
5. चातुर्मास लगा है, सफल बनाना है।
   धर्म-ध्यान करना है, प्रेम बढ़ाना है।।
6. संघ उत्थान, संघ विकास व संघ बढ़ोतरी के लिए आपका सहयोग अपेक्षित है तथा सुझाव लिखकर भेज सकते हैं।

-संघ का प्रथम सेवक

शोधालेख

आत्मा का अस्तित्व

डॉ. सागरमल जैन

जैन-दर्शन में जीव या आत्मा को एक स्वतन्त्र तत्त्व या द्रव्य माना गया है। जहाँ तक हमारे आध्यात्मिक-जीवन का प्रश्न है, आत्मा के अस्तित्व पर शंका करके आगे बढ़ना असम्भव है। जैन-दर्शन में आध्यात्मिक-विकास की पहली शर्त आत्म-विश्वास है। विशेषावश्यकभाष्य के गणधरवाद में आत्मा के अस्तित्व को सिद्ध करने के लिए निम्नलिखित तर्क प्रस्तुत किये गये हैं-

1. जीव का अस्तित्व 'जीव' शब्द से ही सिद्ध है, क्योंकि असद् वस्तु की कोई सार्थक संज्ञा ही नहीं बनती है। (गाथा 1575)
2. जीव है या नहीं- यह सोचना मात्र ही किसी विचारशील सत्ता अर्थात् जीव की सत्ता को सिद्ध कर देता है। सचेतन प्राणी ही यह सोच सकता है कि यह स्तम्भ है या पुरुष? (गाथा 1571)
3. शरीर में स्थित जो यह सोचता है कि 'मैं नहीं हूँ, वही तो जीव है। जीव के अतिरिक्त संशयकर्त्ता अन्य कोई नहीं है। यदि आत्मा ही न हो, तो ऐसी कल्पना का प्रादुर्भाव ही कैसे हो कि मैं हूँ या नहीं? जो निषेध कर रहा है, वह स्वयं ही आत्मा है। संशय के लिए किसी ऐसे तत्त्व के अस्तित्व की अनिवार्यता है, जो उस विचार का आधार हो। बिना अधिष्ठान के कोई विचार या चिन्तन सम्भव नहीं हो सकता। संशय का अधिष्ठान कोई-न-कोई अवश्य होना चाहिए। महावीर गौतम से कहते हैं- हे गौतम! यदि कोई संशयकर्त्ता ही नहीं है, तो ''मैं हूँ'' या ''नहीं हूँ''- यह संशय कहाँ से उत्पन्न होता है? तुम स्वयं अपने ही विषय में सन्देह कैसे कर सकते हो? फिर किसमें संशय न होगा? क्योंकि संशय आदि जितनी भी मानसिक और बौद्धिक-क्रियाएँ हैं, वे सब आत्मा के कारण ही हैं। जहाँ संशय होता है, वहाँ आत्मा का अस्तित्व अवश्य स्वीकारना पड़ता है। वस्तुतः जो प्रत्यक्ष अनुभव से सिद्ध है, उसे सिद्ध करने के लिए किसी अन्य प्रमाण की आवश्यकता नहीं। आत्मा स्वयंसिद्ध है, क्योंकि उसी के आधार पर संशयादि उत्पन्न होते हैं, सुख-दुःखादि को सिद्ध करने के लिए भी किसी अन्य प्रमाण की आवश्यकता नहीं (जैन दर्शन-महेन्द्रकुमार, पृष्ठ-4)। ये संशय, विचारणा आदि सब आत्मपूर्वक ही हो सकते हैं। आचारांगसूत्र (1.5.5.166) में कहा गया है कि जिसके द्वारा जाना जाता है, वही आत्मा है।

आचार्य शंकर ब्रह्मसूत्रभाष्य (3.1.7) में ऐसे ही तर्क देते हुए कहते हैं कि जो निरसन कर रहा है, वही तो उसका स्वरूप है। आत्मा के अस्तित्व के लिए स्वतःबोध को आचार्य शंकर भी एक प्रबल तर्क के रूप में स्वीकार करते हैं। वे कहते हैं कि सभी को आत्मा के अस्तित्व में भरपूर विश्वास है, कोई भी ऐसा नहीं है, जो यह सोचता हो कि 'मैं नहीं हूँ' (ब्रह्मसूत्र शांकरभाष्य 1.1.2)। अन्यत्र, शंकर स्पष्ट रूप से यह भी कहते हैं कि सत्ता से बोध को पृथक् नहीं किया जा सकता (ब्रह्मसूत्र, शांकरभाष्य, 3.2.21)। यदि हमें आत्मा का स्वतः बोध होता है, तो उसकी सत्ता निर्विवाद है।

पाश्चात्त्य-विचारक देकार्त ने भी इसी तर्क के आधार पर आत्मा के अस्तित्व को सिद्ध किया है। वह कहता है कि सभी के अस्तित्व में सन्देह किया जा सकता है, परन्तु सन्देहकर्त्ता में सन्देह करना तो सम्भव नहीं है, सन्देहकर्ता का अस्तित्व सन्देह से परे है। सन्देह करना विचार करना है और विचारक के अभाव में विचार नहीं हो सकता। मैं विचार करता हूँ, अतः 'मैं हूँ'। इस प्रकार देकार्त के अनुसार भी आत्मा का अस्तित्व स्वयंसिद्ध है (पश्चिमीदर्शन-दीवानचंद, पृ. 106)।

4. आत्मा अमूर्त्त है, अतः उसको उस रूप में तो नहीं जान सकते, जैसे घट, पट आदि वस्तुओं का इन्द्रिय-प्रत्यक्ष के रूप में ज्ञान होता है, लेकिन इतने मात्र से उनका निषेध नहीं किया जा सकता। जैन आचार्यों ने इसके लिए गुण और गुणी का तर्क दिया है। घट आदि जिन वस्तुओं को हम जानते हैं, उनका भी यथार्थ बोध-प्रत्यक्ष नहीं हो सकता, क्योंकि हमें जिनका बोध या प्रत्यक्ष होता है, वह घट के रूपादि गुणों का प्रत्यक्ष है, लेकिन घट मात्र रूप नहीं है, वह तो अनेक गुणों का समूह है, जिन्हें हम पूर्णतः नहीं जानते, रूप (आकार) तो उनमें से एक गुण है। जब रूपगुण के प्रत्यक्षीकरण को घट का प्रत्यक्षीकरण मान लेते हैं और हमें कोई संशय नहीं होता, तो फिर ज्ञान-गुण से आत्मा का प्रत्यक्ष क्यों नहीं मान लेते? (विशेषावश्यकभाष्य, गाथा 1558)।

आधुनिक वैज्ञानिक भी अनेक तत्त्वों का वास्तविक बोध-प्रत्यक्ष नहीं कर पाते हैं, जैसे ईथर; फिर भी कार्यों के आधार पर उनका अस्तित्व मानते हैं एवं स्वरूप-विवेचन भी करते हैं, फिर आत्मा के कार्यों के आधार पर उसके अस्तित्व को क्यों न स्वीकार किया जाए? वस्तुतः आत्मा या चेतना के अस्तित्व का प्रश्न महत्त्वपूर्ण होते हुए भी विवाद का विषय नहीं है। भारतीय-चिन्तकों में चार्वाक तथा पाश्चात्य-चिन्तकों में ह्यूम आदि जो विचारक आत्मा का निषेध करते हैं, वस्तुतः उनका निषेध आत्मा के अस्तित्व का निषेध नहीं, वरन् उसकी नित्यता का निषेध है। वे आत्मा को एक स्वतंत्र या नित्य-द्रव्य के रूप में

स्वीकार नहीं करते हैं, लेकिन चेतन-अवस्था या चेतना-प्रवाह के रूप में आत्मा का अस्तित्व तो उन्हें भी स्वीकार है। चार्वाक-दर्शन भी यह नहीं कहता कि आत्मा (चेतना) का सर्वथा अभाव है। उसका निषेध मात्र आत्मा को स्वतन्त्र या मौलिक तत्त्व मानने से है। बुद्ध अनात्मवाद की प्रतिस्थापना में आत्मा (चेतना) का निषेध नहीं करते हैं, वरन् उसकी नित्यता का निषेध करते हैं। ह्यूम भी अनुभूति से भिन्न किसी स्वतंत्र आत्मतत्त्व का ही निषेध करते हैं। 'न्यायवार्त्तिककार' का यह कहना समुचित जान पड़ता है कि आत्मा के अस्तित्व के विषय में दार्शनिकों में सामान्यतः कोई विवाद ही नहीं है, यदि विवाद है, तो उसका सम्बन्ध आत्मा के विशेष स्वरूप से है न कि उसके अस्तित्व से। स्वरूप की दृष्टि से कोई शरीर को ही आत्मा मानता है, कोई बुद्धि को, कोई इन्द्रिय या मन को और कोई विज्ञान-संघात को आत्मा समझता है। कुछ ऐसे व्यक्ति हैं, जो इन सबसे पृथक् स्वतन्त्र आत्म-तत्त्व के अस्तित्व को स्वीकार करते हैं (न्यायवार्त्तिक, पृ.366)। जैनदर्शन आत्मा को स्वतन्त्र द्रव्य के रूप में स्वीकार करता है।

आत्मा एक मौलिक तत्त्व

आत्मा एक मौलिक तत्त्व है अथवा अन्य किसी तत्त्व से उत्पन्न हुआ है, यह प्रश्न भी महत्त्वपूर्ण है। सभी दर्शन यह मानते हैं कि संसार आत्म और अनात्म का संयोग है, लेकिन इनमें मूल तत्त्व क्या है? यह विवाद का विषय है। इस सम्बन्ध में चार प्रमुख धारणाएँ हैं- (1) मूल तत्त्व जड़ (अचेतन) है और उसी से चेतन की उत्पत्ति होती है। अजितकेश-कम्बली, चार्वाक आदि दार्शनिक एवं भौतिकवादी-वैज्ञानिक इस मत का प्रतिपादन करते हैं। (2) मूल तत्त्व चेतन या बोध है और उसी की अपेक्षा से जड़ की सत्ता मानी जा सकती है। बौद्ध- विज्ञानवाद, शांकर-वेदान्त तथा बर्कले इस मत का प्रतिपादन करते हैं। (3) कुछ विचारक ऐसे भी हैं, जिन्होंने परम तत्त्व को एक मानते हुए भी उसे जड़-चेतन उभयरूप स्वीकार किया और दोनों को ही उसका पर्याय माना। भगवद् गीता, रामानुज और स्पिनोजा इस मत का प्रतिपादन करते हैं। (4) कुछ विचारक जड़ और चेतन- दोनों को ही परम तत्त्व मानते हैं और उनके स्वतंत्र अस्तित्व में विश्वास करते हैं। सांख्य, जैन और देकार्त इस धारणा में विश्वास करते हैं।

जैन-विचारक स्पष्ट रूप से कहते हैं कि कभी भी जड़ से चेतन की उत्पत्ति नहीं होती। सूत्रकृतांग की टीका में इस मान्यता का निराकरण किया गया है। शीलांकाचार्य लिखते हैं कि- 'भूत-समुदाय स्वतन्त्रधर्मी है, उसका गुण चैतन्य नहीं है, क्योंकि पृथ्वी आदि भूतों के अन्य पृथक्-पृथक् गुण हैं, अन्य गुणों वाले पदार्थों से या उनके समूह से भी किसी अपूर्व (नवीन) गुण की उत्पत्ति नहीं हो सकती, जैसे रुक्ष बालु-कणों के समुदाय से स्निग्ध

तेल की उत्पत्ति नहीं होती। अतः चैतन्य आत्मा का ही गुण हो सकता है, भूतों का नहीं, जड़ भूतों से चेतन आत्मा की उत्पत्ति नहीं हो सकती (सूत्रकृतांग टीका 1.1.8)।' शरीर भी ज्ञानादि चैतन्य गुणों का कारण नहीं हो सकता, क्योंकि शरीर भौतिक-तत्त्वों का कार्य है और भौतिक-तत्त्व चेतनाशून्य हैं। जब भूतों में ही चैतन्य नहीं है, तो उनके कार्य में चैतन्य कहाँ से आ जायेगा? प्रत्येक कार्य कारण में अव्यक्त रूप से रहा है। जब वह कारण कार्यरूप में परिणत होता है, तब वह शक्तिरूप से रहा हुआ कार्य व्यक्त रूप में सामने आ जाता है। जब भौतिक-तत्त्वों में चेतना नहीं है, तब यह कैसे सम्भव है कि शरीर चैतन्य-गुण वाला हो जाय? यदि चेतना प्रत्येक भौतिक-तत्त्व में नहीं है, तो उन तत्त्वों के संयोग से भी वह उत्पन्न नहीं हो सकती। रेणु के प्रत्येक कण में न रहने वाला तेल रेणु-कणों के संयोग से उत्पन्न नहीं हो सकता। अतः यह कहना युक्ति-संगत नहीं है कि चैतन्य महाभूतों के विशिष्ट संयोग से उत्पन्न होता है (जैनदर्शन-महेन्द्रकुमार, पृ.157)। गीता भी कहती है कि असत् का प्रादुर्भाव नहीं होता और सत् का विनाश नहीं होता है (2.16)। यदि चैतन्य भूतों में नहीं है, तो वह उनके संयोग से निर्मित शरीर में भी नहीं हो सकता। शरीर में चैतन्य की उपलब्धि होती है; अतः उसका आधार शरीर नहीं, आत्मा है। आत्मा की जड़ से भिन्नता सिद्ध करने के लिए शीलांकाचार्य एक दूसरी युक्ति प्रस्तुत करते हुए कहते हैं- ''पाँचों इन्द्रियों के विषय अलग-अलग हैं, प्रत्येक इन्द्रिय अपने विषय का ही ज्ञान करती है, जबकि पाँचों इन्द्रियों के विषयों का एकत्रीभूत रूप में ज्ञान करने वाला अन्य कोई अवश्य है और यह वह आत्मा है (सूत्रकृतांग टीका 1.1.8)।''

इसी सम्बन्ध में आचार्य शंकर की भी एक युक्ति है, जिसके सम्बन्ध में प्रो. ए.सी. मुखर्जी ने अपनी पुस्तक 'नेचर ऑफ सेल्फ' में प्रकाश डाला है। शंकर पूछते हैं कि भौतिकवादियों के अनुसार भूतों से उत्पन्न होने वाली उस चेतना का स्वरूप क्या है? उनके अनुसार या तो चेतना उन तत्त्वों की प्रत्यक्षकर्त्ता होगी या उनका ही एक गुण होगी। प्रथम स्थिति में यदि वह चेतना उन गुणों की प्रत्यक्षकर्ता होगी, तो वह उनसे प्रत्युत्पन्न नहीं होगी। दूसरे, यह कहना भी हास्यास्पद होगा कि भौतिक-गुण अपने ही को ज्ञान की विषय-वस्तु बनाते हैं। यह मानना कि चेतना, जो भौतिक-पदार्थों को ही अपने ज्ञान का विषय बनाती है, उतना ही हास्यापद है, जितना यह मानना कि आग अपने को ही जलाती है अथवा नट अपने ही कंधों पर चढ़ सकता है। इस प्रकार शंकर का भी निष्कर्ष यही है कि चेतन (आत्मा) भौतिक-तत्त्वों से व्यतिरिक्त और ज्ञानस्वरूप है।

आक्षेप एवं निराकरण

सामान्य रूप से जैन विचारणा में आत्मा या जीव को अपौद्गलिक, विशुद्ध चैतन्य एवं

जड़ से भिन्न स्वतन्त्र तत्त्व या द्रव्य माना जाता है, लेकिन अन्य दार्शनिकों का आक्षेप है कि जैन-दर्शन के विचार में जीव का स्वरूप बहुत कुछ पौद्गलिक बन गया है। यह आक्षेप अजैन-दार्शनिकों का ही नहीं, अनेक जैन-चिन्तकों का भी है और उनके लिए आगमिक-आधारों पर कुछ तर्क भी प्रस्तुत किये गये हैं। पं. जुगलकिशोर मुख्तार ने इस विषय में एक प्रश्नावली भी प्रस्तुत की थी (अनेकान्त, जून-1942)। यहाँ उस प्रश्नावली के प्रमुख मुद्दों पर ही चर्चा करना अपेक्षित है, जो जीव-सम्बन्धी जैन दार्शनिक-मान्यताओं में ही पारस्परिक-अन्तर्विरोध प्रकट करते हैं-

1. जीव यदि पौद्गलिक नहीं है, तो उसमें सौक्ष्म्य-स्थौल्य अथवा संकोच-विस्तार की क्रिया और प्रदेश-परिस्पन्दन कैसे बन सकता है? जैन-विचारणा के अनुसार तो सौक्ष्म्य-स्थौल्य को पुद्गल की पर्याय माना गया है।
2. अपौद्गलिक और अमूर्त्तिक-आत्मा का पौद्गलिक एवं मूर्त्तिक-कर्मों के साथ बद्ध होकर विकारी होना कैसे सम्भव हो सकता है? (इस प्रकार के बन्ध का कोई दृष्टान्त भी उपलब्ध नहीं है) स्वर्ण और पाषाण के अनादिबन्ध का जो दृष्टान्त भी दिया जाता है, वह विषम दृष्टान्त है और एक प्रकार से तो वह जीव का पौद्गलिक होना ही सूचित करता है।
3. रागादिक को पौद्गलिक कहा गया है और रोगादिक जीव के परिणाम हैं- बिना जीव के उनका अस्तित्व नहीं। (यदि जीव पौद्गलिक नहीं है, तो रोगादि भाव पौद्गलिक कैसे सिद्ध हो सकेंगे?) इसके सिवाय पौद्गलिक-जीवात्मा में कृष्ण, नीलादि लेश्याएँ कैसे बन सकती हैं?

जैन-दर्शन जड़ और चेतन के द्वैत को और उनकी स्वतंत्र सत्ता को स्वीकार करता है। वह सभी प्रकार के अद्वैतवाद का विरोध करता है, चाहे वह शंकर का आध्यात्मिक-अद्वैतवाद हो, अथवा चार्वाक एवं अन्य वैज्ञानिकों का भौतिकवादी-अद्वैतवाद हो, लेकिन इस सैद्धान्तिक-मान्यता से उपर्युक्त शंकाओं का समाधान नहीं होता। इसके लिए हमें जीव के स्वरूप को उस सन्दर्भ में देखना होगा, जिसमें उपर्युक्त शंकाएँ प्रस्तुत की गयी हैं। प्रथमतः, संकोच-विस्तार तथा उसके आधार पर होने वाले सौक्ष्म्य एवं स्थौल्य तथा बन्धन और रागादिभाव का होना सभी बद्ध जीवात्माओं या हमारे वर्तमान सीमित व्यक्तित्व के कारण है। जहाँ तक सीमित व्यक्तित्व या बद्ध जीवात्मा का प्रश्न है, वह एकान्त रूप से न तो भौतिक है और न अभौतिक। जैन चिन्तक मुनि नथमलजी (महाप्रज्ञजी) इन्हीं प्रश्नों का समाधान करते हुए लिखते हैं कि 'मेरी मान्यता यह है कि हमारा वर्तमान व्यक्तित्व न सर्वथा पौद्गलिक है और न सर्वथा अपौद्गलिक। यदि उसे

सर्वथा अपौद्गलिक मानें, तो उसमें संकोच-विस्तार, प्रकाशमय अनुभव, ऊर्ध्वगामि-धर्मिता, रागादि नहीं हो सकते। मैं जहाँ तक समझ सकता हूँ, कोई भी शरीरधारी जीव अपौद्गलिक नहीं है। जैन-आचार्यों ने उसी में संकोच-विस्तार या बन्धन आदि माने हैं, अपौद्गलिकता उसकी अन्तिम परिणति है, जो शरीर-मुक्ति से पहले कभी प्राप्त नहीं होती (तट दो प्रवाह एक, पृ. 54)।' मुनिजी के इस कथन को अधिक स्पष्ट रूप में यों कहा जा सकता है कि जीव का अपौद्गलिक-स्वरूप उसकी उपलब्धि नहीं, आदर्श है। जैन-दर्शन का लक्ष्य इसी अपौद्गलिक-स्वरूप की उपलब्धि है। जीव की अपौद्गलिकता उसका आदर्श है, जागतिक तथ्य नहीं, जबकि ये सभी बातें बद्ध जीवों में ही पायी जाती हैं।

आत्मा और शरीर का सम्बन्ध

महावीर के सम्मुख जब यह प्रश्न उपस्थित किया गया कि "भगवन्! जीव वही है, जो शरीर है, या जीव भिन्न है और शरीर भिन्न है?" तब महावीर ने उत्तर दिया-"हे गौतम! जीव शरीर भी है और शरीर से भिन्न भी है (भगवती सूत्र 13.7.495)।" इस प्रकार, महावीर ने आत्मा और देह के मध्य भिन्नत्व और एकत्व- दोनों को स्वीकार किया। आचार्य कुन्दकुन्द ने आत्मा और शरीर के एकत्व और भिन्नत्व को लेकर यही विचार प्रकट किये हैं। आचार्य कुन्दकुन्द का कथन है कि व्यावहारिक-दृष्टि से आत्मा और देह एक ही हैं, लेकिन निश्चय-दृष्टि से आत्मा और देह कदापि एक नहीं हो सकते (समयसार 27)। वस्तुतः आत्मा और शरीर में एकत्व माने बिना स्तुति, वन्दन, सेवा आदि अनेक नैतिक आचरण की क्रियाएँ सम्भव नहीं हो सकतीं। दूसरी ओर, आत्मा और देह में भिन्नता माने बिना आसक्तिनाश और भेदविज्ञान की सम्भावना नहीं हो सकती है। नैतिक और धार्मिक-साधना की दृष्टि से आत्मा का शरीर से एकत्व और अनेकत्व दोनों अपेक्षित हैं। यही जैनदर्शन की मान्यता है। महावीर ने ऐकान्तिक वादों को छोड़कर अनैकान्तिक दृष्टि को स्वीकार किया था और दोनों विरोधी वादों में समन्वय किया था। उन्होंने कहा कि आत्मा और शरीर कथंचित्-अभिन्न हैं।

आत्मा परिणामी है

जैनदर्शन आत्मा को परिणामी नित्य मानता है, जबकि सांख्य एवं शांकर- वेदान्त आत्मा को अपरिणामी (कूटस्थ) मानते हैं। बुद्ध के समकालीन विचारक पूर्णकाश्यप भी आत्मा को अपरिणामी मानते थे। आत्मा को अपरिणामी (कूटस्थ) मानने का तात्पर्य यह है कि आत्मा में कोई विकार, परिवर्तन या स्थित्यन्तर नहीं होता।

जैन-आचार सम्बन्धी ग्रन्थों में ये वचन बहुतायत से उपलब्ध होते हैं कि आत्मा कर्त्ता है। उत्तराध्ययन सूत्र (20.37) में कहा गया है कि आत्मा ही सुखों और दुःखों का कर्त्ता

तथा भोक्ता है। यह भी कहा गया है कि सिर काटने वाला शत्रु भी उतना अपकार नहीं करता, जितना दुराचरण में प्रवृत्त अपनी आत्मा करती है (उत्तराध्ययन 20.48)।

यही नहीं सूत्रकृतांग (1.1.13) में आत्मा को अकर्त्ता मानने वाले लोगों की आलोचना करते हुए स्पष्ट रूप में कहा गया है- ''कुछ दूसरे (लोग) तो धृष्टतापूर्वक कहते हैं कि करना, कराना आदि क्रियाएँ आत्मा नहीं करता, वह तो अकर्त्ता है। इन वादियों को सत्य ज्ञान का पता नहीं और न उन्हें धर्म का ही भान है। उत्तराध्ययनसूत्र (23.37) में शरीर को नाव और जीव को नाविक कहकर जीव पर नैतिक या अनैतिक-कर्मों का उत्तरदायित्व डाला गया है।

आत्मा भोक्ता है

यदि आत्मा को कर्त्ता मानना आवश्यक है, तो उसे भोक्ता भी मानना पड़ेगा, क्योंकि जो कर्मों का कर्त्ता है, उसे ही उनके फलों का भोग भी करना चाहिए। जैसे आत्मा का कर्तृत्व कर्मपुद्गलों के निमित्त से सम्भव है, वैसे ही आत्मा का भोक्तृत्व भी कर्मपुद्गलों से निर्मित शरीर से ही सम्भव है। कर्तृत्व और भोक्तृत्व- दोनों ही शरीरयुक्त बद्धात्मा में पाये जाते हैं, मुक्तात्मा या शुद्धात्मा में नहीं। भोक्तृत्व वेदनीय-कर्म के कारण ही सम्भव है। जैन-दर्शन आत्मा के भोक्तृत्व को भी सापेक्ष-दृष्टि से शरीरयुक्त बद्धात्मा में स्वीकार करता है।

1. व्यावहारिक- दृष्टि से शरीरयुक्त बद्धात्मा भोक्ता है।
2. अशुद्धनिश्चयनय या पर्यायदृष्टि से आत्मा अपनी मानसिक अनुभूतियों या मनोभावों का वेदक है।
3. परमार्थ-दृष्टि से आत्मा भोक्ता और वेदक नहीं, मात्र द्रष्टा या साक्षीस्वरूप है (समयसार, 81-92)।

आत्मा में भोक्तृत्व मानना कर्म और उनके प्रतिफल के संयोग के लिए आवश्यक है। जो कर्त्ता है वह अनिवार्य रूप से उनके फलों का भोक्ता भी है, अन्यथा कर्म और उसके फलभोग में अनिवार्य सम्बन्ध सिद्ध नहीं हो सकेगा। ऐसी स्थिति में धर्म एवं नैतिकता का भी कोई अर्थ ही नहीं रह जायेगा, अतः यह मानना होगा कि आत्मा भोक्ता है, लेकिन आत्मा का भोक्ता होना बद्धात्मा या शरीरधारी आत्मा के लिए ही समुचित है। मुक्तात्मा भोक्ता नहीं है, वह तो मात्र साक्षीस्वरूप या द्रष्टा होता है।

आत्मा स्वदेह-परिमाण है

यद्यपि जैन-विचारणा में आत्मा को रूप, रस, गन्ध, वर्ण, स्पर्श आदि से विवर्जित कहा गया है, तथापि आत्मा को शरीराकार स्वीकार किया गया है। आत्मा के आकार के

सम्बन्ध में प्रमुख रूप से दो दृष्टियाँ हैं- एक के अनुसार आत्मा विभु (सर्वव्यापी) है और दूसरी के अनुसार अणु है। सांख्य, न्याय और अद्वैत वेदान्त आत्मा को विभु मानते हैं और रामानुज अणु मानते हैं। जैनदर्शन इस सम्बन्ध में मध्यस्थ-दृष्टि अपनाता है। उसके अनुसार, आत्मा अणु भी है और विभु भी है। वह सूक्ष्म है, तो इतना है कि एक आकाश-प्रदेश के अनन्तवें भाग में समा सकता है और विभु है, तो इतना है कि समग्र लोक को व्याप्त कर सकता है। जैन-दर्शन आत्मा में संकोच-विस्तार को स्वीकार करता है और इस आधार पर आत्मा को स्वदेह-परिमाण मानता है। जैसे दीपक का प्रकाश छोटे कमरे में रहने पर छोटे कमरे को और बड़े कमरे में होने पर बड़े कमरे को प्रकाशित करता है, वैसे ही आत्मा भी जिस देह में रहता है, उसे चैतन्याभिभूत कर देता है, किन्तु यह बात केवल संसारी-आत्मा के सम्बन्ध में है। मुक्तात्मा का आकार अपने व्यक्त देह का दो तिहाई होता है (उत्तराध्ययन 36)।

आत्मा के विभुत्व की समीक्षा

1. यदि आत्मा विभु (सर्वव्यापक) है, तो वह दूसरे शरीरों में भी होगा, फिर उन शरीरों के कर्मों के लिए उत्तरदायी होगा। यदि यह माना जाये कि आत्मा दूसरे शरीरों में नहीं है, तो फिर वह सर्वव्यापक नहीं होगा।
2. यदि आत्मा विभु है, तो दूसरे शरीरों में होने वाले सुख-दुःख के भोग से कैसे बच सकेगा?
3. विभु आत्मा के सिद्धान्त में कौन आत्मा किस शरीर का नियामक है, यह बताना भी कठिन होगा। वस्तुतः नैतिक और धार्मिक जीवन के लिए प्रत्येक शरीर परिमाण आत्मा का सिद्धान्त ही संगत हो सकता है, ताकि उस शरीर के कर्मों के आधार पर उसे उत्तरदायी ठहराया जा सके।
4. आत्मा की सर्वव्यापकता का सिद्धान्त अनेकात्मवाद के साथ कथमपि संगत नहीं हो सकता, साथ ही अनेकात्मवाद के अभाव में नैतिक जीवन की सुसंगत व्याख्या भी सम्भव नहीं।

आत्माएँ अनेक हैं

आत्मा एक है या अनेक- यह प्रश्न भी दार्शनिक-दृष्टि से विवाद का विषय रहा है। जैनदर्शन के अनुसार, आत्माएँ अनेक हैं और प्रत्येक शरीर की आत्मा भिन्न है। यदि आत्मा को एक माना जाता है, तो नैतिक-दृष्टि से निम्नलिखित अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं-

एकात्मवाद की समीक्षा

1. आत्मा को एक मानने पर उसके अंशरूप सभी जीवों की मुक्ति और बन्धन एक साथ

होंगे। इतना ही नहीं, सभी शरीरधारियों के नैतिक विकास एवं पतन की विभिन्न अवस्थाएँ भी युगपद् होंगी, लेकिन ऐसा तो दिखता नहीं। सब प्राणियों का आध्यात्मिक एवं नैतिक-जीवन का स्तर अलग-अलग है। यह भी माना जाता है कि अनेक व्यक्ति मुक्त हो चुके हैं और अनेक अभी बंधन में हैं, अतः आत्माएँ एक नहीं, अनेक हैं।

2. आत्मा को एक मानने पर वैयक्तिक नैतिक-प्रयासों का मूल्य समाप्त हो जायेगा। यदि आत्मा एक ही है, तो व्यक्तिगत प्रयासों एवं क्रियाओं से न तो उसकी मुक्ति सम्भव होगी और न वह बन्धन में ही आयेगा।
3. आत्मा के एक मानने पर नैतिक-उत्तरदायित्व तथा तज्जनित पुरस्कार और दण्ड की व्यवस्था का भी कोई अर्थ नहीं रह जायेगा। सारांश में, आत्मा को एक मानने पर वैयक्तिकता के अभाव में नैतिक-विकास, नैतिक-उत्तरदायित्व और पुरुषार्थ आदि नैतिक-प्रयत्नों का कोई अर्थ नहीं रह जाता। मरण, बंधन-मुक्ति आदि के संतोषप्रद समाधान के लिए अनेक आत्माओं की स्वतंत्र सत्ता मानना आवश्यक है (विशेषावश्यक-भाष्य 1582)। सांख्यकारिका (18) में भी जन्म-मरण, इन्द्रियों की विभिन्नता, प्रत्येक की अलग-अलग प्रवृत्ति और स्वभाव तथा नैतिक-विकास की विभिन्नता के आधार पर आत्मा की अनेकता सिद्ध की गयी है।

अनेकात्मवाद की नैतिक-कठिनाई

अनेकात्मवाद नैतिक-जीवन के लिए वैयक्तिकता का प्रत्यय तो प्रस्तुत कर देता है, तथापि अनेक आत्माएँ मानने पर भी कुछ नैतिक-कठिनाइयाँ उत्पन्न हो जाती हैं। इन नैतिक-कठिनाइयों में प्रमुखतम यह है कि नैतिकता का समग्र प्रयास जिस अहं के विसर्जन के लिए है, उसी अहं (वैयक्तिकता) को ही यह आधारभूत बना देता है। अनेकात्मवाद में वैयक्तिकता कभी भी पूर्णतया विसर्जित नहीं हो सकती। इसी वैयक्तिकता से राग और आसक्ति का जन्म होता है, जो तृष्णा का ही एक रूप है और यह तृष्णा ही बन्धन का मूल कारण है। दूसरे, 'मैं' या अहंकार भी बंधन ही है।

जैन-दर्शन का निष्कर्ष

जैनदर्शन ने इस समस्या का भी अनेकान्तदृष्टि से सुन्दर समाधान प्रस्तुत किया है। उसके अनुसार, आत्मा एक भी है और अनेक भी। समवायांग और स्थानांगसूत्र (1.1) में कहा गया है कि आत्मा एक है। अन्यत्र उसे अनेक भी कहा गया है। टीकाकारों ने इसका समाधान इस प्रकार किया कि आत्मा द्रव्यापेक्षा से एक है और पर्यायापेक्षा से अनेक, जैसे

सिन्धु का जल न एक है और न अनेक। वह जल-राशि की दृष्टि से एक है और जल-बिन्दुओं की दृष्टि से अनेक भी। समस्त जल-बिन्दु अपना स्वतन्त्र अस्तित्व रखते हुए उस जल-राशि से अभिन्न ही हैं। उसी प्रकार अनन्त चेतन आत्माएँ अपना स्वतंत्र अस्तित्व रखते हुए भी अपनी चेतना-स्वभाव के कारण एक चेतन आत्मद्रव्य ही हैं (समवायांग टीका 1.1)। भगवान महावीर ने इस प्रश्न का समाधान बड़े सुन्दर ढंग से आगमों के टीकाकारों के पहले ही कर दिया था। वे सोमिल नामक ब्राह्मण को अपना दृष्टिकोण स्पष्ट करते हुए कहते हैं- 'हे सोमिल! द्रव्यदृष्टि से मैं एक हूँ, ज्ञान और दर्शन-रूप दो पर्यायों की प्रधानता से मैं दो हूँ। कभी न्यूनाधिक नहीं होने वाले आत्म-प्रदेशों की दृष्टि से मैं अक्षय हूँ, अव्यय हूँ, अवस्थित हूँ, किन्तु तीनों कालों में बदलते रहने वाले उपयोग-स्वभाव की दृष्टि से मैं अनेक हूँ (भगवती सूत्र, 1.8.10)।'

इस प्रकार भगवान महावीर जहाँ एक ओर द्रव्यदृष्टि से आत्मा के एकत्व का प्रतिपादन करते हैं, वहीं दूसरी ओर पर्यायार्थिक-दृष्टि से एक ही जीवात्मा में चेतन-पर्यायों के प्रवाह के रूप से अनेक व्यक्तित्वों की संकल्पना को भी स्वीकार करते हैं जिससे शंकर के अद्वैतवाद और बौद्धों के क्षणिक-आत्मवाद की खाई को पाटा जा सकता है।

जैन-विचारक आत्माओं में गुणात्मक अन्तर नहीं मानते हैं, लेकिन विचार की दिशा में केवल सामान्य दृष्टि से काम नहीं चलता, विशेष दृष्टि का भी अपना स्थान है। सामान्य और विशेष के रूप में विचार की दो दृष्टियाँ हैं और दोनों का अपना महत्त्व है। महासागर की जल-राशि सामान्य दृष्टि से एक है, लेकिन विशेष दृष्टि से नहीं, जल-राशि अनेक जल-बिन्दुओं का समूह प्रतीत होती है। यही बात आत्मा के विषय में है। चेतना की पर्यायों की विशेष दृष्टि से आत्माएँ अनेक हैं और चेतना-द्रव्य की दृष्टि से आत्मा एक है। जैनदर्शन के अनुसार, आत्मद्रव्य एक है, लेकिन उसमें अनन्त वैयक्तिक आत्माओं की सत्ता है। इतना ही नहीं, प्रत्येक वैयक्तिक आत्मा भी अपनी परिवर्तनशील चैतसिक अवस्थाओं के आधार पर स्वयं भी एक स्थिर इकाई न होकर प्रवाहशील इकाई है। जैनदर्शन यह मानता है कि आत्मा का चरित्र या व्यक्तित्व परिवर्तनशील है, वह देशकालगत परिस्थितियों में बदलता रहता है, फिर भी वही रहता है। हमारे में भी अनेक व्यक्तित्व बनते और बिगड़ते रहते हैं, फिर भी वे हमारे अंग हैं। इस आधार पर हम उनके लिए उत्तरदायी रहते हैं। इस प्रकार, जैनदर्शन अभेद में भेद, एकत्व में अनेकत्व की धारणा को स्थान देकर धर्म और नैतिकता के लिए एक ठोस आधार प्रस्तुत करता है।

-निदेशक, प्राच्य विद्यापीठ, दुपाड़ा रोड़, शाजापुर (मध्यप्रदेश)

चिन्तन

अर्हं : एक चिन्तन

उपाध्याय श्री रमेश मुनि शास्त्री

योग-विज्ञान के सन्दर्भ में नमस्कार मंत्र वस्तुतः महामंत्र है। इसकी शक्ति वर्णनातीत है। इसकी एकनिष्ठ साधना से अध्यात्म-साधक को सर्व प्रकार की अचिन्त्य लब्धियाँ हस्तगत होती हैं। शारीरिक एवं मानसिक आरोग्य प्राप्त होता है, आध्यात्मिक-दृष्टिकोण से समुत्कर्ष होता है। काषायिक-प्रवृत्तियाँ अस्तंगत होने लगती हैं। साधक वीतरागता की ओर अभिमुख हो जाता है। अपने अहं का मूलतः विसर्जन कर के साधक अर्हं की भाव-भूमि पर पहुँचने के लिये यत्नशील भी होता है एवं पदन्यास भी करता है।

यह शत-प्रतिशत सत्य है कि नमस्कार महामंत्र वस्तुतः वर्णों के संयोजन की दृष्टि से सम्पूर्णतः वैज्ञानिक है। आध्यात्मिक दृष्टिकोण से इसमें विलक्षण ऊर्जा है, शक्ति का अक्षय पुंज निहित है। शब्द एवं अर्थ की कसौटी से भी यह प्रखर रूप से पूर्ण खरा है। इस मंत्र में पाँच पद हैं, पैंतीस अक्षर हैं और अड़सठ वर्ण हैं। स्वर और व्यञ्जन पृथक्-पृथक् वर्ण हैं। कोई भी व्यञ्जन स्वर के संयोग से पूर्णता प्राप्त करता है, अन्यथा वह अपूर्ण है। इस अपेक्षा से प्रत्येक व्यञ्जन में दो वर्ण होते हैं, किन्तु स्वर स्वयं पूर्ण होता है, उसे व्यंजन की अपेक्षा नहीं होती है, अतएव स्वर जैसे 'अ' अर्थात् अकार में 'एक' वर्ण है। नमस्कार मंत्र के पैंतीस अक्षरों में से प्रत्येक का अपना विशिष्ट अर्थ है, विशिष्ट ऊर्जाओं के उत्पादन की क्षमता है, जो आध्यात्मिक दृष्टि से अतिशय रूप से महत्त्वपूर्ण है।

इसी सन्दर्भ में यह ज्ञातव्य है कि 'अर्हं' जैन साधना की दृष्टि से अप्रतिम मंत्र है। इसका योग और आत्मिक-उत्कर्ष की साधना में विशिष्ट महत्त्व है। इतना ही नहीं, इसका प्राण-शक्ति को जगाने में अतीव उपयोग है। इस मंत्र की साधना के द्वारा साधक की प्राण-शक्ति का जागरण शीघ्र हो जाता है, उसका प्राणिक शरीर शक्तिशाली बनता है और आज्ञाचक्र एवं मूलाधार चक्र ये दोनों जाग्रत हो जाते हैं। ये जन्म-जन्मान्तर के कर्मों की निर्जरा में भी अतिशय-सहायक हैं, अतएव आत्मशुद्धि और आत्मिक-उत्कर्ष भी इस मंत्र के द्वारा होते हैं। इसके अतिरिक्त अध्यात्म-साधक को शारीरिक-परिस्फूर्ति प्राप्त होती है, उसकी मेधा तीव्र से तीव्रतर होती है, बौद्धिक-स्फुरणा होती है, अतीन्द्रिय ज्ञान की प्राप्ति होती है, चित्त की चंचलता समाप्त होकर एकाग्रता आती है। निष्कर्ष यह है कि प्राणिक-शक्ति के जागरण और चेतसिक-एकाग्रता के लिये यह 'अर्हं' मंत्र प्रभावी है।

इसी सन्दर्भ में 'अर्हं' पद-विन्यास भी सर्वथा रूपेण विचारणीय है। 'अर्हं' का यदि वर्ण और अक्षरों की अपेक्षा से विन्यास किया जाता है, तब उसमें भी "अ,र,ह,म" ये चार वर्ण हैं। इनमें 'अ' वायु तत्त्व है, "र्" अग्नि तत्त्व है, "ह्" आकाश तत्त्व है तथा अनुस्वार आकाश तत्त्व है। इस प्रकार इसमें अग्नि, आकाश और वायु इन तीनों तत्त्वों का समावेश हो जाता है। अग्नि तत्त्व कर्म-निर्जरा में सहायक की भूमिका का निर्वाह करता है, इसके अतिरिक्त वह प्राण-शक्ति और प्राण-शरीर को शक्तिशाली बनाता है, वायु तत्त्व साधक के मनःकोषों को सबल एवं सक्षम बनाकर मेधा-शक्ति को वृद्धिंगत कर देता है तथा आकाश तत्त्व अध्यात्म निष्ठ साधक में अनेक सद्गुण, कष्ट-सहिष्णुता, समभाव एवं तितिक्षा-भाव की अभिवृद्धि करता है, अवगुणों और सन्तापी तरंगों को उसके आभा मण्डल एवं तैजस् शरीर में प्रविष्ट नहीं होने देता है।

यह स्पष्ट है कि साधक "अर्हं" की साधना बहुविध रूपों में सम्पन्न करता है। सर्व-प्रथम वह इसे "नाभिकमल" में स्थापित करके इसकी साधना तेजो बीज के रूप में करता है। "अर्हं" की रेफ को वह रक्तवर्णमय, अग्नि के रूप में देखता है। और रेफ के ऊर्ध्व भाग से वह अग्नि की चिनगारियाँ निकलते देखता है, तदनन्तर अग्नि-ज्वालाओं से कर्म एवं नो कर्म को भस्मीभूत होते हुए देखता है। इस प्रकार इस रूप में "अर्हं" कर्म-निर्जरा में सहायक बनता है। द्वितीय प्रकार की साधना-विधि में वह 'अर्हं' पद का ध्यान करता है। आत्मशुद्धि हेतु वह इसका ध्यान श्वेत-वर्ण में चक्षु ललाट अर्थात् आज्ञा चक्र में करता है।

इसी परिप्रेक्ष्य में यह तथ्य ज्ञातव्य है कि आज्ञाचक्र और मणिपूर चक्र अर्थात् ज्ञान केन्द्र एवं शक्ति केन्द्र का सीधा सम्बन्ध है। साधक 'अर्हं' को शक्ति केन्द्र से उठता हुआ तथा ज्ञान-केन्द्र पर पहुँचता हुआ देखता है। प्राण अर्थात् श्वास द्वारा चढ़ता हुआ और उश्वास-निश्वास द्वारा ज्ञान-केन्द्र से शक्ति-केन्द्र पर आता हुआ देखता है। इस प्रकार साधक एक श्वासोच्छ्वास में "अर्हं" पद का शक्ति केन्द्र से ज्ञान-केन्द्र तक तथा ज्ञान-केन्द्र से शक्ति केन्द्र तक का एक चक्कर पूरा कर लेता है। इस प्रकार के असंख्य चक्र साधक करते हुए, अपनी प्राणधारा को प्रवाहित करता है। योग की अपेक्षा से शक्ति केन्द्र अर्थात् नाभिकमल वास्तव में अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। यहीं से शक्ति का जागरण होता है और ऊर्ध्वगामिनी बनती है। शक्ति-केन्द्र से ज्ञान-केन्द्र में प्राणधारा के प्रवाहित होते समय मध्यवर्ती आनन्द-केन्द्र, विशुद्धि-केन्द्र भी स्वयमेव जाग्रत हो जाते हैं, शक्ति केन्द्र और ज्ञान केन्द्र जाग्रत होते हैं। ज्ञान-केन्द्र पर साधक "अर्हं" को स्फुरायमान होता हुआ देखता है। कभी उसे चंचल और कभी स्थिर करता है। कभी "अर्हं" पद को आकाश-व्यापी देखता है। कभी उसे अणु के समान अति सूक्ष्मरूप से ध्यान का विषय बनाता है। अणुरूप

अर्हं अत्यन्त शक्तिशाली श्वेत-किरणों का विकीर्णन करता है। इससे साधक का समस्त ललाट और कपाल अर्थात् मनः चक्र, सोम चक्र और सहस्रार चक्र प्रकाशित हो जाता है। परिणाम ये तीनों चक्र जाग्रत हो जाते हैं।

शब्दों के उच्चारण से उत्पन्न ध्वनि-प्रवाह मानव की समग्र-चेतना को प्रभावित करता है और उसके प्रकम्पन अनन्त-अन्तरिक्ष में बिखर कर समष्टि-चेतना को प्रभावित कर परिस्थितियों को अनुकूल बनाते हैं। प्रत्येक उच्चारण किया हुआ अथवा मन में सोचा हुआ शब्द चतुर्दश रज्जु-प्रमाण लोक में पहुँच जाता है। जैसे भी शुभ अथवा अशुभ शब्दों का सामूहिक रूप से उच्चारण किया जाता है। उनकी लहरें बनती हैं, वे आकाश में व्याप्त अपने ही सजातीय विचारयुक्त शब्दों को एकत्र करके लाती है। उनसे शब्दानुरूप शुभ अथवा अशुभ वातावरण निर्मित होता है। प्रिय शब्दों का चुनाव उत्तम प्रभाव उत्पन्न करता है और अप्रिय शब्द अशुभ प्रभाव अंकित करते हैं। शब्दों के साथ-साथ अभिधा, लक्षणा और व्यञ्जना की शक्ति भी है। इतना ही नहीं, शब्दों के साथ-साथ अनेक रूप में भावनाएँ, प्रेरणाएँ, संवेदनाएँ और अभिव्यञ्जनाएँ जुड़ी हुई हैं। उच्चारण के त्रिविध रूप भी है। प्रथम सूक्ष्म है, द्वितीय अति सूक्ष्म है और तृतीय परम सूक्ष्म है। ये तीनों प्रकार के उच्चारण साधक को ध्येय की अभीष्ट दिशा में अवश्य योगदान करते हैं। शब्दों में मित्रता और शत्रुता उत्पन्न करने की क्षमता निहित है। एक भी श्रेष्ठ शब्द स्वर्गलोक और इहलोक में काम दुहा धेनु के समान होता है। शोक-संवाद सुनते ही मानव अर्ध मूर्च्छित सा हो जाता है। तर्क, युक्ति, प्रमाण एवं अनुभूति के आधार पर प्रभावशाली वक्तव्य देते ही जन-समूह की विचारधारा अति शीघ्र परिवर्तित हो जाती है।

यथार्थता यह है कि शब्द की शक्ति अद्भुत है। जब हम कण्ठ, तालु आदि मुख्य अवयवों के द्वारा सोद्देश्य रचना कर सुगठित शब्द-समुच्चय का उच्चारण करते हैं, तब विभिन्न प्रकार की प्रतिक्रियाएँ अर्थात् हलचलें होती हैं, जिनका प्रभाव स्थूल शरीर के अंगों और उपांगों पर अंकित होता है। सूक्ष्म शरीर स्थित उपत्यकाओं, नाडी-गुच्छकों तथा विद्युत-प्रवाहों पर भी प्रभाव अंकित हुए बिना नहीं रहता है। इस प्रकार शब्द-शक्ति सर्वप्रथम अपने उत्पादन-स्थल को और तत्पश्चात् परिपार्श्व के स्थलों को उसी प्रकार प्रभावित करती हैं, जिस प्रकार अग्नि जहाँ पैदा होती है, सर्वप्रथम उस स्थान को उष्ण कर देती है, उसके पश्चात् अन्य क्षेत्रों को प्रभावित करती है। जैसे हम "अर्हम्" का उच्चारण नाभि से प्रारम्भ कर क्रमशः हृदय, तालु, बिन्दु, और अर्धचन्द्र तक ऊपर ले जाते हैं, तब इस उच्चारण से क्या प्रतिक्रिया होती है? इस पर भी ध्यान केन्द्रित करें। जब हमारा उच्चारण सूक्ष्म हो जाता है, तब ग्रन्थियों का भेदन होने लगता है। आज्ञाचक्र तक पहुँचते-पहुँचते

हमारी ध्वनि यदि अति सूक्ष्म-सूक्ष्मतम हो जाती है, तब उन ग्रन्थियों का भेदन प्रारम्भ हो जाता है, जो ग्रन्थियाँ सुलझती नहीं है, वे भी इन सूक्ष्मतर-सूक्ष्मतम उच्चारण से सुलझ जाती है। 'अर्हम्' के भावनापूर्वक उच्चारण से उत्पन्न तरंगें ग्रन्थि-संस्थान को प्रभावित करती हैं, तथा अन्तःस्रावी ग्रन्थियों को सन्तुलित एवं व्यवस्थित कर देती है। ''अर्हं'' पद के जप-ध्यान से सम्पूर्ण चक्र शीघ्र ही जागरित हो जाते हैं। इसका प्रमुख कारण यह है कि ध्वनि शास्त्र की दृष्टि से ह्रस्व (अ) और प्लुत (हँ) दोनों प्रकार की ध्वनियों का इसमें संयोजन है। ''हँ'' प्लुत ध्वनि महाप्राण ध्वनि है। अतएव साधक जब इसका उच्चारण करता है, तब उसे प्राण-शक्ति अधिक रूप से लगानी पड़ती है। अर्हं के उच्चारण के समय प्राण शक्ति अधिक ऊर्जस्वी बनती है।

यह स्पष्ट है कि उपांशु जप करते समय जब साधक अन्तर्जल्प अथवा सूक्ष्म वचन योग द्वारा इस मंत्र का जप-ध्यान करता है, तब उसकी ध्वनि-तरंगें अर्थात् भाषा वर्गणा के सूक्ष्मतम पुद्गल शक्ति केन्द्र अर्थात् नाभिकमल से ऊर्ध्वगामी बनकर सीधे आज्ञाचक्र तथा सहस्रार चक्र से टकराते हैं, सम्पूर्ण मस्तिष्क और उसके ज्ञानवाही तन्तु झनझना उठते हैं। भाषा-वर्गणा की सूक्ष्म ध्वनि तरंगें विद्युत् तरंगों में परिवर्तित हो जाती हैं। परिणामस्वरूप साधक का सम्पूर्ण तैजस्- शरीर उत्तेजित होकर तीव्र गति से परिस्पन्दन करने जैसा प्रतीत होता है। इसका प्रभाव भी कार्मण-शरीर पर अंकित होता है, उसके प्रकम्पनों की गति भी अभिवर्धित हो जाती है। परिणाम यह आता है कि तैजस् शरीर स्थित सर्वचक्र जाग्रत अर्थात् अनुप्राणित हो जाते हैं और सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण तथ्य यह है कि कर्मनिर्जरा अति तीव्र गति से होती है, फलतः आत्म-शुद्धि होती है तथा सद्ज्ञान और शरीर सम्बन्धी अनेक विशिष्ट लब्धियों की प्राप्ति होती है।

सारपूर्ण शब्दों में यही कहा जा सकता है कि अध्यात्म-साधक को 'अर्हं' पद के जप-ध्यान से अनेक प्रकार के लाभ प्राप्त होते हैं। उसकी मस्तिष्कीय-शक्ति नितान्त प्रबल हो जाती है, प्राणवत्ता और सक्रियता बढ़ जाती है। परिणामस्वरूप साधक के लिए अतीन्द्रिय ज्ञान के मार्ग खुल जाते हैं, ज्ञान-तन्तुओं के सजग और शक्तिशाली बनने से विशिष्ट ज्ञान की प्राप्ति होती है। साधक की वासना-कामना और उत्तेजना समाप्त हो जाती है। अनिवर्चनीय सुख एवं आनन्द की प्राप्ति होती है। शरीर में स्फूर्ति एवं अप्रमत्तता आती है। इस प्रकार अर्हं की यह साधना साधक के लिये अतिशय लाभकारी, शक्ति, स्फूर्ति तथा शान्ति का केन्द्र-बिन्दु है। यह ध्यान-साधना कर्म-निर्जरा एवं आत्म-शुद्धि की प्रबल साधना है। अतएव यह अध्यात्मयोगी साधक के अवश्य करणीय है, यह वह आलोक-पथ है, जो अतिशय-उपादेय है, अहर्निश आदरणीय है और आजीवन आचरणीय है।

English-Section

Concept of Consciousness In Jainism

Dr Dharm Chand Jain

Philosophy is the root cause of origination and development of science, because philosophy gives ideas for inventions and experiments. But there is a basic difference between science and philosophy ; science has made its field of experiments on matter *(pudgala)* only, whereas philosophy has much wider field of knowledge and formless entities like soul. If we think about the concept of Consciousness according to the various branches of science, then consciousness can be defined as the activity of sense-organs, mind, brain and the cells, on one hand and when consciousness is defined according to Jaina philosophy then it is an attribute of a soul, which could not be known through the empirical or materialistic instruments on the other hand.

Consciousness and soul

The word 'consciousness' is used mainly in two meanings – 1. Alertness (awareness) 2. Feeling of livingness (cetanā). In Jainism *'apramāda'* word is used in the sense of alertness and *'upayoga'*, *'prāṇa'*, *'sañjñā'* for the feeling of livingness. In Jainism, a soul is considered as the ultimate source of consciousness. Consciousness is the very nature of a soul with or without body. If the soul departs from the body, sense organs and brain do not work; the body is called dead. So it is a question for the scientists that how the consciousness arises and how it vanishes. Where does it come from and where does it go? Except the Cārvāka thinkers, all the branches of Indian philosophy accept a concept of soul which is the source of consciousness. Nyāya and Vaiśeṣika philosophers mention soul as omnipresent, but they accept its consciousness limited to body. Vedānta philosophers propound omnipresent *brahma* and living beings as its part (*caitnayāṃśa*). Buddhist philosophers do not accept soul as eternal entity. They accept a flow of consciousness which is

called *vijñāna* or *citta*.

Jain philosophy is specific in this regard. It stresses that the soul of living beings resides within the body. Every living being is having a different or independent soul. A soul is a knower; sense organs, mind and brain are the instruments for knowing the objects. This soul has a nature of consciousness which serves consciousness in different parts of the body including brain, nervous system and every cell.

It is difficult to define a soul, but consciousness is the very nature of a soul. According to Uttarādhyayanasūtra knowledge (*jñāna*) intuition or observation (*darśana*), conduct (*cāritra*), penance (*tapa*), internal power (*vīrya*) and cognitive application (*upayoga*) are the nature of a soul[1]. We can know a soul through its attributes or activities. Knowledge (*jñāna*) and observation (*darśana*) are the main characteristics of a soul. In Vyākhyāprajñapti sūtra, it is stated that soul is knowledge (right or perverted) and knowledge is soul. Soul is *darśana* and *darśana* is soul[2]. In this way the nature of a soul can be defined as knowledge (*jñāna*) and observation or intuition (*darśana*). Application of these two is called as *upayoga*. This *upayoga* is consciousness.

There are eight types of soul – 1. A soul as a substance (*dravyātmā*) 2. A soul with passions (*kaṣāyatmā*) 3. A soul with activities of mind, speech and body (*yogātmā*) 4. A soul with cognitive activity *(upayogātmā)* 5. A soul with attribute of knowledge (*jñānātmā*) 6. A soul with attribute of intuition (*darśanātmā*) 7. A soul with conduct (*cāritrātmā*) and 8. A soul with attribute of internal power (*vīryātmā*)[3]. Basically a soul is a substance, but when it exhibits any of the above characteristics or it enjoins passions etc. then it is addressed by respective names.

Consciousness and its various levels

Consciousness can be technically termed as '*upayoga*' in Jainism. *Upayoga* is an application of cognitive and intuitive ability of a soul. Consciousness includes an attitude, vision and conduct of a living being. Cognition of happiness and sorrow also denote consciousness.

There are many levels of consciousness; we can put them in the following categories :

1) Consciousness as *apramattatā* or alertness.
2) Consciousness as *upayoga* or knowing activity.
3) Consciousness as *prāṇa* (active ability of sense organs, mind, speech, body, respiration and life-span).
4) Consciousness in mind
5) Consciousness in body
6) Consciousness as *sañjñā* (eagerness to eat, feeling fear, sexual desire, desire of possessiveness).
7) Consciousness as v*edanā*
8) Consciousness expressed in *vīrya* or enthusiasm.

In this way, there are many levels or kinds of consciousness experienced by a living being. A pure and complete consciousness is found in the liberated souls (having destroyed the eight *karmas*[4]) and in pious souls having destroyed the four *ghāti* karmas (namely *jñānāvaraṇa, darśanāvaraṇa, mohaniya* and *antarāya*).

Variations in Consciousness and *apramattatā*

Mostly living beings on the earth are having karmic bondage, hence the consciousness is not fully manifested in them. There are six categories of the living beings on the basis of variation in manifestation of the consciousness. The living beings having only one tactile sense organ are the lowest in manifestation of their consciousness. Two sensed beings can manifest more consciousness than one sensed, three sensed beings more than the two sensed beings; In this way five sensed beings are able to manifest more consciousness. The being having mind with the five sense organs are quite more able in expressing consciousness. The human beings possessing a right view can express more consciousness. The degree of consciousness increases in experience of pious conduct and character. In Jainism a holy monk with five *mahāvrata*s ((i) abstinence from violence (ii) abstinence from falsehood (iii) abstinence from theft (iv) abstinence from sexual desire (v) abstinence from possessiveness), five *samiti*s or vigilances (in

movement, speaking, eating, handling things and evacuation) and three *guptis* (as control of mind, speech and body) bears more vividness in consciousness. A monk having alertness in every activity expresses more consciousness. In this way living with alertness shows high level of consciousness. A laity man having five small vows is also on the path to live with better consciousness than a lay man, if he is alert in doing activity with awareness.

Consciousness as *upayoga*

'*Upayoga*' denotes the cognitive function of a living being. It includes knowing through sense organs, mind and directly through a soul.

- *Upayoga* is of two kinds

i) Knowing in a constructive or articulate form i.e. *jñāna*

ii) Knowing in *nirvikalpaka* or in-articulate form i.e. *darśana*.

Jñāna and *darśana* are the key factors of *upayoga* or cognitive function. In Nandisūtra and other texts of Jain philosophy five types of knowledge are mentioned as *matijñāna* (sensuous knowledge), *śrutajñāna* (scriptural or verbal knowledge), *avadhijñāna* (visual intuition), *manaḥparyāya jñāna* (intuition of mental modes) and *kevaljñāna* (pure and perfect knowledge). Among these knowledges *matijñāna* appears in a soul through sense-organs, or mind or by both. Sense organs and mind are the instruments; consciousness comes in these organs from the soul. *Matijñāna* or *ābhinibodhika jñāna* includes recognition, thinking, reasoning, intellect and inference in it. Knowledge of former birth (*jāti smaraṇa jñāna*) is also a phenomenon of *matijñāna*. Four types of intellect (*autpāttikī, vainayikī, karmajā* and *pāriṇāmikī*) are also the part of *matijñāna*. All intellectual activities of a person denote consciousness. *Śrutajñāna* appears in a living being as verbal knowledge or as discriminative knowledge (*vivekajñāna*). Discriminative knowledge is a significant nature of consciousness. *Avadhijñāna, manaḥparyāyajñāna* and *kevalajñāna* appear directly in a soul. Through *avadhijñāna* material world can be known without the use of sense organs and mind. *manaḥparyāyajñāna* is also direct

knowledge, by which mental modes of others are known by a conscious monk. *Kevalajñāna* is a pure and perfect knowledge with which everything and its every mode is perceived lucidly.

Knowledge illuminates itself as well as the object. In Niyamasāra Ācārya Kundakunda propounds the self-luminosity of knowledge. He says –

> "Knowledge is not without a soul and soul is not without knowledge. It is doubtless, hence, knowledge is self and object illuminating. *Darśana* is also self and object illuminating like knowledge."[5]

Darśana is also a significant term in Jain scriptures to denote consciousness. It is an in-articulate cognition, which is succeeded by articulate-cognition i.e. knowledge. There are four types of *darśana*- (a) *cakṣu-darśana* (in-articulate cognition through eyes) (b) Acakṣu-*darśana* (in-articulate cognition through mind and sense organs other than eyes) (c) *Avadhi-darśana* (in-articulate cognition directly by soul succeeded by *avadhi-jñāna*) (d) *Kevala-darśana* (in-articulate cognition or intuition directly by a soul succeeded by *Kevalajñāna*).

Every soul has an essential attribute of in-articulate cognition and articulate cognition. Both of these cognitive attributes are manifested as consciousness in a sequence of in-articulate and articulate manner. The scientists have explored the system of knowing through sense organs and their link with the nervous system and brain, but they do not have reached up to the source of consciousness.

There are four stages of knowing the material objects through sense organs i.e. *avagraha, īha, avāya* and *dhāraṇā. Avagraha* is a primary knowledge in which an object is known without its specific properties. Īha is a knowledge having inclination to know the object with its property, and the ascertaining knowledge about the object is called *avāya*. When that *avāya* knowledge goes into retention, then it is named as *dhāraṇā* knowledge. These four stages are very important in learning process. Why children do not learn the lesson

properly? Its answer is lying in the Jaina principle of learning through stages of *matijñāna*. This principle is useful in the educational psychology. This is a psychological science of learning that if a learning process is up to retention, then memory takes place. Without retention memory cannot take place.

Consciousness as *Prāṇa*

Prāṇa (vitality) is another technical term in Jaina scriptures which shows consciousness in a living being. This '*prāṇa*' word has a different meaning from the meaning which is referred in Yoga philosophy. In Yoga philosophy *prāṇa* word has been used for vital airs which are of five kinds- *prāṇa* (air inhaled and exhaled), *apāna* (air goes out through anus), *vyāna* (air pervaded in the whole body), *udāna* (air in the throat), *samāna* (air in the stomach). In Jainism *prāṇas* are of 10 types 1. Auditory sense 2. Visual sense 3.Olfactory sense 4. Gustatory sense 5. Tactile sense 6. Mental force 7. Power of speech 8. Power of body 9. Respiration and 10. Karma related to life span (*āyuṣya karma*). The *Prāṇas* depict the living power of the five sense organs, body, speech, mind, respiration and *āyuṣya karma*. Every sense organ has power to work. If that sense organ is damaged or harmed then that does not work as knowing instrument. A person can live life even in the non-working position of some sense organs, but the working power of sense organs denotes consciousness. I hear a word. I see a bird, I smell a flower, I taste a candy. I touch a chair- all these knowing activities show consciousness of sense organs and also of a knower. A knower remains the same in knowing process with the help of different sense organs. We feel consciousness in the functioning of mind and speech. We feel consciousness in the whole body also. In the violence these *prāṇas* are affected and at the time of death these *prāṇas* are destroyed. According to Jainism sense organs, body, mind, speech are made of *pudgala* or material contents, but these are having consciousness due to association with the conscious soul.

Consciousness in Mind

In Jainism, mind is made of matter (*pudgala*), but it has a

quality of thinking and desire, hence mind also bears consciousness. A conscious mind is very useful for the real development of a human being. If it is controlled or restrained, then it is useful for spiritual development, if it is uncontrolled or wanton, it is a big cause for fall of a person. Neurologists talk about brain and accept that mind is a product of brain. According to Śvetāmbara Jain texts this mind is a separate entity and pervaded in the whole body, whereas Digamber texts, accept its shape as eight feathered lotus flower and its residence is in the heart only. But mind is used in every knowing activity of sense organs and its own. In Vyakhyāprajñapti sūtra a question has been raised that a mind is conscious (*sacitta*) or unconscious (*acitta*)? Answer has been given that mind is not conscious, it is unconscious[6]. Here it is to be clarified that mind is different from a soul[7] and it is made of matter or *pudgala*[8], hence it is not conscious, but it is found only in living beings[9] and formed at the time of thinking only[10].

A sense organ is associated with an object, mind is associated with that sense organ and the soul is associated with the mind. This is the procedure of knowing the objects through sense organs. Somewhere a soul can know the objects directly through the mind. Sorrow and happiness can be known in this manner. Psychologists accept mind as a separate entity and Freud mentions three types of mind as- conscious, unconscious and sub-conscious. We are aware of the conscious mind. A big part of our mind remains unconscious, which has a store of imprints of our unfulfilled wants and *sa?skāras*. Sub-conscious mind has a function to get some feelings or desires from conscious mind to unconscious mind and from unconscious mind to conscious mind.

Consciousness in body

Jaina scriptures enumerate five types of bodies as {1} Gross body (audārika) {2}Protean body(*vaikriya*) {3}Translocational body(*āhāraka*) {4}Luminious body (*taijasa śarīra*) {5}Karmic body (*kārmaṇa śarīra*). In these five types of body, we are aware of the gross body only. All human beings, animals, birds, insects, plants

etc. are having gross or *audārika* body. This body is made of gross material. *Vaikriya* body is found in heavenly bodies (*devas*) and hell bodies (*nārakas*) by birth. In human beings this body may enjoin the gross body after some required spiritual achievement. This body can have different modes on the will of its owner. *Āhāraka* or translocational body is a subtle body which is used by a monk having a vast knowledge of 14 *purva*s. This body is used to get answers from a Tīrtha?kara residing in a distant place like Mahāvideha. This subtle body comes out from the gross body and after getting answer, it enters again at its place. This body may be a mystery for the biologists. *Taijasa* and Karmic bodies are more subtle and these are not obstructed by any obstacle. These two bodies are found in every non-liberated soul. Karmic body is a store house of *Karma*- bondage, and Luminous or *Taijasa* body maintains a level of energy and it is helpful in the procedure of digestion etc. These two subtle bodies live with a soul even in the way of getting a new birth.

Biologists have done experiments on gross body, but they do not know about *vaikriya, āhārak, taijasa* and karmic bodies. In present human beings *vaikriya* and *āhāraka* bodies are often unavailable, but *taijasa* and Karmic bodies are liable for investigation. If something is known after experiments that might be a pace in the biological science, knowing the mystery of life.

Consciousness as *Sañjñā*

An instinct desire or *sañjñā* also indicate consciousness in a living being. There are four famous *sañjñās* - 1. Eagerness for food (*āhāra sañjñā*) 2. Feeling of fear (*bhaya sañjñā*) 3.Sexual desire (*maithuna sañjñā*) 4. Desire of possessiveness (*parigraha sañjñā*). These four *sañjñā*s are experienced in every living being including in the plants. Every living being feels hunger and wants to take food. It makes an effort for gaining food. The feeling of fear is also a characteristic of worldly living beings. All living beings fear from death, harm etc. This fear is found only in the worldly soul. Sexual desire is also a phenomenon of consciousness. This desire may have three forms – 1. Desire of intercourse of a male with female. 2. Desire

of intercourse of a female with male. 3. Sexual desire of hermaphrodite. This is a desire of reproduction. Possessiveness is also found in conscious beings. Human beings, insects and even plants bear this phenomenon. The non-living things do not bear these four *sañjñā*s.

Consciousness as *Vedanā*

Vedanā is another technical term of Jainism, which denotes an experience of happiness and sorrow, coldness and hotness etc. by a living being. This '*vedanā*' is felt on the level of mind and body. It may be a result of the karma-bondage. Pleasure or comfort may be felt through five sense organs and mind.

Consciousness as *Vīrya*

Enthusiasm (*vīrya*) is also a significant nature of consciousness. A living being feels enthusiasm with in him to do something. Where does from this enthusiasm come? Generally it is accepted that enthusiasm comes from the food which we eat. Vaidic statement '*annaṃ vai prāṇāḥ*' proves it. It is true that without food body cannot run for a long time. Food is the source of energy to work through body. Body is made of matter *(pudgal)*, so materialistic *(paudgalika)* food is required to sustain it. Soul has its own enthusiasm or power which is expressed in mental power and in emotional balance. Soul gives consciousness to body, but it has to leave the body, if that is not capable to sustain with consciousness. If the body is decayed and *prāṇas* are arrested then soul leaves that body and goes to take birth in a new body with two subtle bodies namely *taijas* and *kārmaṇa.*

Conclusion

Science has reached in its research up to consciousness of brain, cells and genes and it has proved that cells of the body are changing every moment. Body cells are renewed in a certain time interval; hence food is needed for this activity of change. This gross body cannot survive without food. According to Jainism, animation in gross body, brain, genes etc. is found due to consciousness of the soul. In the presence of a soul all of these work consciously.

Science has done experiments on the matter or *pudgala* having eight touch qualities[11]. Gross body, blood, brain, genes are the matter of eight touch qualities. Jaina scriptures propound a matter of four touch quality and two touch quality also. *Kārmaṇa* and *Taijas* bodies are the example of four touch quality matter. These should be taken up for an experiment by the scientists. *Paramaṇu* or atom in Jainism has been propounded with a quality of two touches of smooth (positive charge) or rough (negative charge) and hotness or coldness. Matter can be the part of experiment by instrument, but the real consciousness of soul is difficult to come under the purview of experiments. Its approval has three sources according to Jaina philosophers-

1. Self-perception or self-realization
2. Inference- There are many logical arguments by which an entity of soul is approved. In *Rājapraśnīyasūtra Keśīśramaṇa* has given so many arguments to king *Pradeśhi* for establishment of a soul which is different from a body. Sense organs, mind are the instruments; someone should be the user of these instruments and that user is a soul.
3. Canonical literature- The enlightened souls have told about the independent existence of a soul, by which consciousness is felt in a body.

It is interesting to know that violence of *prāṇas*, falsehood, theft, sexual copulation, possessiveness, anger, pride, deceit, greed, attachment, aversion etc. 18 sins appear in a soul[12], but these are having a characteristic of subtle *pudgal* having five colours, two odours, five tastes and four touches (cold, hot, smooth and hard). Scientists have done experiments on subtle matter, but still they have to do experiments on the intensity of anger, pride, deceit, greed, attachment, aversion etc. These experiments will help a human being in understanding the intensity of these passions and disorder. Knowing the intensity a person will be aware enough to reduce these sinful emotions and activities. At present the examination of blood, sonography, MRI, CT scan are quiet helpful in the physical health.

The examination of anger etc. will be quiet helpful for mental and spiritual health.

Endnote:-

[1] *Nāṇaṃ ca daṃsaṇaṃ ceva carittaṃ ca tavo tahā.*
vīriyaṃ uvaogo ya eyaṃ jīvassa lakkhaṇaṃ
– *Uttarādhyayanasūtra*, 28.3

[2] *Goyamā āyā siya nāne, siya annāne, nāne puṇa niyamaṃ āyā. Goyamā āyā niyamaṃ daṃsaṇe, daṃsaṇe vi niyamaṃ āyā.*
–*Vyākhyāprajñapti sūtra, Śataka* 12, *Uddeśaka* 10, *Sūtra* 10-18

[3] *Vyākhyāprajñaptisūtra, Śataka* 12, *Uddeśaka* 10, *Sūtra* 1

[4] Eight *karmas* are –*jñānāvaraṇa, darśanāvaraṇa, vedanīya, mohanīya, āyuṣya, nāma, gotra* and *antarāya.*

[5] *appāṇaṃ viṇu nāṇaṃ, nāṇaṃ viṇu appago na saṃdeho।*
tamhā saparapayāsaṃ nāṇaṃ tahā daṃsanaṃ hodi॥
- *Niyamasara*, 171

[6] *Sacitte bhante! maṇe? Goyama! No sacitte maṇe, acitte maṇe.- Vyākhyāprajñapti sūtra, Śataka 13 Uddeśaka* 7, *Sūtra* 11(2)

[7] *Āyā bhante! Maṇe? Aṇṇe maṇe? Goyamā! No āyā maṇe, aṇṇe maṇe –Ibid, sūtra* 10

[8] *Rūvi bhante! maṇe arūvi maṇe ? Goyamā rūvi maṇe, no arūvi maṇe* – Ibid, *sūtra* 11(1)

[9] *Jīvāṇaṃ bhante maṇe, ajīvāṇaṃ maṇe ? Goyamā ! jīvāṇaṃ maṇe no ajīvāṇaṃmaṇe* – Ibid *sūtra* 11(4)

[10] *Puvvi? bhante maṇe, maṇṇijjamāṇe maṇe? Maṇa-samaya-vīikkante maṇeṃ Goyamā! No puvviṃ maṇe, maṇṇijjamāṇe maṇe no maṇa-samaya-vīikkante maṇe*-Ibid, *sūtra* 12

[11] Eight types of touch are – cold, hot, smooth (positive charge), rough (negative charge), light, heavy, soft and hard.

[12] *Vyākhyāprajňapti Sūtra*, Śataka 20, Uddeśaka 3, Sūtra 1

Bibliography

Niyamasāra of Kundakunda, Jaipur : Kundakunda Kahāna Trust, Todarmal, Smāraka.

Uttarādhyayanasūtra (Part 3), Prakrit with Hindi translation and commentary, Jaipur : Samyagjñāna Pracāraka Maṇḍala, 1987

Vyākhyā prajñaptisūtra, Beawar, Agama prakaśana samiti.

-3 K 24-25, Kudi Housing Board, Jodhpur-342005 (Raj.)

संगोष्ठी-आलेख

जैन जीवन-शैली में विकृतियों के विभिन्न रूप*

प्रो. श्रीयांस कुमार सिंघई

जितेन्द्रियो जिन: अर्थात् जितानि इन्द्रियाणि येन स जिन:। यहाँ इन्द्रिय ज्ञान-वृत्तियों को जीतने वाले केवलज्ञानी परमात्मा को ही जिन कहा जा सकता है। 'जिनस्य भाव: कर्म वा' की दृष्टि से दिव्यध्वनि स्वरूप जिनों के उपदेश या जिनवाणी को जिनाज्ञा समझना चाहिए, जिसका अनुयायी जैन है। अत: जिनाज्ञाओं की मर्यादा में चलने वाले जीवन को जैन जीवन माना जाता है। अनेकविध सांस्कृतिक मूल्यों एवं सामाजिक परिधियों के अन्तर्गत जैन जीवन आज भी जिया जा सकता है। किन्तु जीवन के प्रत्येक आयाम में अहिंसक आचार-विचार, वस्तुपरिज्ञानमूलक सत्यनिष्ठा और अन्तरोन्मुखी धर्मसाधना के लक्ष्य को पा लेने की जिजीविषा होनी चाहिये।

इस प्रकार जैनत्व की मर्यादा में मानव जीवन का आकलन करते हुए उसमें व्याप्त जन्म से मरणपर्यन्त जीवन व्यवहारों को जीते चले जाने की प्रणालियों या रीति रिवाजों की पद्धति को 'जैनजीवन शैली' कहा जा सकता है। जैन जीवन शैली को अपनाकर जीवन जीने का अधिकार उन सभी के लिए उपादेय हो जाता है जो दया, अनुकम्पा, करुणा, परोपकारिता के लिये जीते हुए अपनी आत्मिक अभ्युन्नति को चाहते हैं।

किसी भी व्यक्ति में जब स्वार्थलिप्सा, स्वेच्छाचारिता, तृष्णा, लक्ष्यभ्रष्टता, असंतोष, अज्ञानमूलक प्रवृत्तियों को अपनाने की उद्यमशीलता, धनार्जन की प्रमुखता, भोगविलासप्रियता, साम्प्रदायिक व्यामोह, जातिवाद, वर्गसंघर्ष का दुराग्रह आदि पनपने लगते हैं तो उसमें बहुविध विकृतियों का प्रादुर्भाव होता है। मनुष्य जीवन के परिप्रेक्ष्य में इनका आकलन संभव भले ही हो, परन्तु उन सभी विकृतियों को रेखाङ्कित करना हमें अभीष्ट नहीं है। तथापि सुखाभास से बचकर जैनत्व की मर्यादा में जीवन जीने की जिजीविषा रखने वाले व्यक्तियों के जीवन में विकृतियों का रोग बेकाबू न हो जाये, इसलिये विकृति के विषय में कुछ कहना भी जरूरी लग रहा है। विकृतियों का निदान समय पर कर पाने की प्रेरणा उन्हें हो जाये और उनका अमूल्य मनुष्य भव भोगों एवं रोगों की बलिवेदी पर नष्ट न हो जाये इस भावना से मनुष्य जीवन के दो प्रमुख पहलुओं को

* आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म. सा. के सान्निध्य में 6-7 अक्टूबर 2012 को जयपुर में आयोजित 'जैन जीवन-शैली' विषयक राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी में प्रस्तुत आलेख।

विकृतियों के विषय में केन्द्रित करना हमें अभीष्ट है। वे दो पहलू हैं-

1. आजीविका के लिये पुरुषार्थ का पहलू
2. धार्मिक निष्ठा के लिये पुरुषार्थ का पहलू

प्रत्येक मनुष्य के लिये इन दोनों ही पुरुषार्थों का सम्पादन आवश्यक है। अत: विवेक की छत्रछाया में सावधानी के साथ हमें जैन जीवन शैली को अपनाना ही चाहिये। उसके बिना विकृतियों का साम्राज्य बढ़ता ही जायेगा। जिससे बचने के लिये विकृतियों को मूलरूप में समझना जरूरी है-

(क) आजीविका के लिये किये गये पुरुषार्थ में समाविष्ट विकृतियों को इस प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता है-

1. धनोपार्जन की असीम अभिलाषा से समुत्पन्न विकृतियाँ।
2. नित्य आवश्यक कर्त्तव्यों के निर्वाह में अविवेक और अनुशासनहीनता से उत्पन्न विकृतियाँ।
3. पारिवारिक एवं सामाजिक सम्बन्धों में विनयाचार के अभाव से समुत्पन्न विकृतियाँ।
4. राजकीय नियमों के उल्लंघन की निष्ठा से जन्य विकृतियाँ।
5. राष्ट्रप्रेम या राष्ट्रीय कर्त्तव्य के प्रति उदासीन रहने के कारण उत्पन्न विकृतियाँ।
6. भोग एवं उपभोग के संसाधनों से प्रतिष्ठा अर्जित करने के कारण उत्पन्न विकृतियाँ।
7. कर्त्तव्य निर्वहण में शारीरिक क्षमताओं के दुरुपयोग से प्रसूत विकृतियाँ।
8. अमर्यादित भोगों की चाह से आहार-विहार जैसी मूल प्रवृत्तियों को अपना लेने के कारण समुत्पन्न विकृतियाँ।
9. पारिवारिक जीवन में भौतिक लक्ष्य प्रमुख कर आभ्यन्तर सुखशान्ति से विमुख हो जाने सम्बन्धी विकृतियाँ।
10. निर्भय होकर हिंसा, झूठ ,चोरी, कुशील आदि पापवृत्तियों से जन्य विकृतियाँ।
11. पुण्य पर भरोसा नहीं होने के कारण कुत्सित उपायों से पुरुषार्थ को सफल बनाने की विकृतियाँ।

(ख) मनुष्य का जीवन भौतिक भोगोपभोग की परिधि में कतई संतुष्ट नहीं होता है। असीम प्रयास भी उसे संतुष्ट बनाने में असमर्थ साबित हुए हैं। आजीविका के बल पर समुपलब्ध हुई सामग्री दया, दान-त्याग आदि धार्मिक भावनाओं के बिना कतई हितकारी नहीं है। अत: धार्मिक जीवन जीने का पुरुषार्थ न रहे और अज्ञानमूलक दुराग्रह पनप जाये तो जो विकृतियाँ पनपने लगती हैं उन्हें धार्मिक कर्त्तव्य निर्वहन के क्षेत्र में इस प्रकार वर्गीकृत किया

जा सकता है-

1. धार्मिक मूल भावना से शून्य होकर धर्मानुरागिता की विकृतियाँ।
2. देवगुरु धर्म के प्रति अनभिज्ञता से उत्पन्न विकृतियाँ।
3. धर्मायतनों के प्रति साम्प्रदायिक व्यामोह से समुत्पन्न विकृतियाँ।
4. साम्प्रदायिक अनुराग के अन्धानुकरण से समुत्पन्न विकृतियाँ।
5. श्रावक समाचारी के परिपालन में वैश्वीकरण से समुत्पन्न विकृतियाँ।
6. पूजा पाठ आदि कर्त्तव्यों का निर्वाह परिणामविशुद्धि के लिये न करके आरम्भ परिग्रह बढ़ाने की भावना से करने पर समुत्पन्न विकृतियाँ।
7. धर्म प्रभावना के कार्यों में भौतिक प्रदर्शन से उत्पन्न विकृतियाँ।
8. स्वाध्याय के प्रति उदासीनता और स्वेच्छाचारिता से जन्य विकृतियाँ।
9. धर्मग्रन्थों के लेखन, सम्पादन, प्रकाशन आदि में साम्प्रदायिक अन्धानुसरण से समुत्पन्न विकृतियाँ।
10. शास्त्र स्वाध्याय में वीतरागी लक्ष्य से भ्रष्ट होकर शिष्य वर्ग तैयार करने पर वर्गसंघर्ष की विकृतियाँ।
11. अपने भौतिक स्वार्थों, अभिप्रायों की पुष्टि के लिये देव-गुरु-धर्म की परम्परा के उपयोग से समुत्पन्न विकृतियाँ।
12. संयमपालन में शिथिलाचारजन्य विकृतियाँ।
13. व्रताचार विषयक कर्त्तव्यों में अनास्था एवं उनसे भोगाभिलाषा पूर्ति की कामना से उत्पन्न विकृतियाँ।
14. धार्मिक कार्यों का मूल्यांकन धनबल एवं जनबल से करने पर समुत्पन्न विकृतियाँ।
15. धार्मिक निष्ठा में विरक्ति को भूलकर पापाचार या पुण्याचार से भोगासक्ति को महत्त्व देने की विकृतियाँ।
16. व्यवहारधर्म के निर्वहण में अन्तर्दर्शन की चेतना प्रसुप्त रहने के कारण उत्पन्न होने वाली विकृतियाँ।
17. व्यवहार धर्म को भौतिक परिवेश में उलझाकर व्यापारीकरण के प्रयासों से जन्य विकृतियाँ।
18. श्रावक या मुनि की जीवन शैली में व्रतों की मर्यादा को लांघकर मात्र प्रदर्शन के लिये व्रतपालन से समुत्पन्न विकृतियाँ।
19. भौतिक चकाचौंध में मूल आध्यात्मिक लक्ष्य भूलकर मात्र पुण्याचरण के पक्षपात से

उत्पन्न विकृतियाँ।

उपर्युक्त विकृतियों के साथ हमारा आजीविका विषयक पुरुषार्थ हो या व्यवहारधर्म की परिपालना का पुरुषार्थ, दोनों ही स्थितियों में हमारे जैन होने की कोई सार्थकता नहीं है। अतएव हमारा कर्त्तव्य बन जाता है कि हम अपनी चर्या अर्थात् जीवन जीने की शैली को निर्दोष एवं लक्ष्य केन्द्रित बनायें। सचमुच ही यदि हमारी जीवन शैली में अहिंसा और अपरिग्रह की प्रतिष्ठा आ जाये तो सत्यानुराग जन्य विवेक से अवश्य ही हमारे जीवन में आगे का मार्ग प्रशस्त हो सकेगा। परिणामत: हमारा जीवन आदर्श जैन जीवन शैली का निदर्शन बनकर उभयत्र अर्थात् लोक-परलोक विषयक दशाओं में या भव भवान्तरों में हितकारी होगा। निर्दोष जैन जीवन शैली के बिना भले ही हम असीम धन वैभव या भोग संसाधन जुटा लें, कितना भी व्यवहारधर्म अर्थात् पूजा पाठ समाचारी विषयक धार्मिक कर्त्तव्यों को कर लें, कहीं हमें चैन नहीं मिलेगा और संतुष्टि का अभाव हमें हर कदम पर व्याकुल बनाये रखेगा। अत: जरूरी है कि विकृतियों से शून्य आदर्श जैन जीवन शैली को हम अपनी सामर्थ्य की परिधि में ही अपनायें। कम सामर्थ्य होने पर कठोर एवं उत्कृष्ट जीवन शैली को नहीं अपनायें अन्यथा लाभ की जगह नुकसान की ही समस्या बन जायेगी। लोभ-लालच एवं मोहान्धता की वृत्ति यदि हमारे व्यवहारधर्म में ही पैर पसार लेगी तो फिर परमार्थ धर्म की सुध कहाँ से आयेगी। मेरा मानना है कि उपर्युक्त प्रकार से होने वाली विकृतियों को हम अपने पुरुषार्थ से बाहर रखें, उनसे बचें तो हमारी निर्दोष जैन जीवन शैली परमार्थ धर्म के प्रादुर्भाव का प्रमुख कारण बनकर समूचे मनुष्य जीवन को सार्थक कर पायेगी जिससे व्यक्ति-व्यक्ति के सुधरने और सुसंस्कारित होने के फलस्वरूप समाज और राष्ट्र समुन्नत होकर धन्य हो जायेगा। सर्वत्र अमन चैन और खुशहाली पसर जायेगी।

-प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, जैनदर्शन विभाग,
राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान (मा.वि.वि.), जयपुर परिसर, जयपुर-18

माँ-बाप के उपकार

श्रीमती कमला सुराणा

दु:ख सहना माँ-बाप के खातिर, फर्ज तो है अहसान नहीं।
कर्ज है इनका तेरे सिर पर, भिक्षा या कोई दान नहीं।।
माता-पिता के चरण जो छुए, चार धाम तीरथ फल पायें।
जो आशीष वो दिल से दें, प्रकृति से भी टाले न जाएं।।

-7, महावीर नगर, रेजीडेन्सी रोड़, जोधपुर-342003 (राज.)

तत्त्व-चर्चा

जिज्ञासा-समाधान

उत्तराध्ययन सूत्र को आधार बनाकर साधु-साध्वियों से किए गए प्रश्नों के उत्तरों से श्री सौभाग्यमलजी जैन-व्याख्याता द्वारा संकलित समाधान।-**सम्पादक**

प्रश्नः- देहादि वस्तुओं के आश्रय से ही लक्ष्य की प्राप्ति होगी, यही मूल में भूल है।

उत्तरः- देहादि वस्तुओं का आश्रय अर्थात् विनाशी का आश्रय। इनके आश्रय से अपना हित होगा, यही धारणा भ्रम मूलक है। देहादि के रहते हुए भी उनके आश्रय का त्याग सभी साधकों के लिए अनिवार्य है। अमूर्त प्राप्ति के लक्ष्य से युक्त साधक मूर्त्त का आश्रय भला कैसे ले सकता है? साधक को देह तो कारागृह, विनाशी, अशुचि का पिण्ड और चिता की अमानत लगता है। साधना का पिपासु तो व्यवहार में सुदेव, सुगुरु, सुधर्म रूप तीन तत्त्वों का आश्रय लेता है। निश्चय में तो मात्र एक स्व आत्म तत्त्व का, शुद्ध ज्ञान का आश्रय लेता है, उसी में रमण करता है, शुद्ध उपयोगवान् बनता है।

उत्तराध्ययन सूत्र की गाथा (6.12) साधक को यह प्रेरणा कर रही है- "जे केइ सरीरे सत्ता, वण्णे रूवे य सव्वसो, मणसा काय वक्केणं सव्वे ते दुःखसंभवा।" जो मन-वचन-काया से शरीर में तथा विविध रूप आदि विषयों में सब प्रकार से आसक्त हैं, वे सभी अपने लिए दुःख उत्पन्न करते हैं, अर्थात् मन से बाल अज्ञानी जीव यह चिंतन करते रहते हैं कि हम सुंदर एवं बलवान कैसे बनें? वचन से रसायनादि से संबंधित प्रश्न करते रहते हैं तथा काया से विगय आदि का सेवन करते रहकर शरीर को बलिष्ठ बनाने का प्रयत्न आदि करते रहते हैं, यही उनकी शरीरासक्ति है तथा दुःख उत्पन्न करने का हेतु है।

छठे अध्ययन में ही विद्यावान पुरुष के लक्षण बताते हुए कहते हैं-"अप्पणा सच्चमेसेज्जा" अपने द्वारा सत्य का अन्वेषण करे। "पासे समियदंसणे" तब पराधीनता असह्य हो जाती है, उसके बाद-"मित्तिं भूएसु कप्पए" विश्व प्रेम की अभिव्यक्ति होती है। अर्थात् सबसे मैत्री कर मोह को तोड़ता है। "सव्वं मे चइत्ताणं कामरूपी भविस्ससि।" परिवर्तनशील की दासता से मुक्त होकर चिन्मय जीवन में प्रवेश हो जाता है।

देह का आश्रय तभी लिया जाता है जब देह जनित व्यापार में जीवन बुद्धि होती है। यह देहाभिमान प्राणी को अशुचि कर्म, निरर्थक-चिंतन, संकल्प-विकल्प स्थिति में आबद्ध करता है। यह नियम है कि किसी भी अवस्था में आबद्ध होने से रुचि-अरुचि का द्वन्द्व

चलता रहता है। यह आबद्धता इन्द्रिय दृष्टि उत्पन्न कराती है, फिर आत्मा पर इन्द्रिय दृष्टि ही शासन करती है। परिणामस्वरूप भोग की रुचि और सबल बन जाती है। अन्तर्दृष्टि का उदय न होने से जड़ता-पराधीनता-सुखलोलुपता बनी ही रहती है। वह प्राणी बार-बार सुखी और दुःखी होता रहता है। भोग प्रवृत्ति के इस दुष्परिणाम की अनुभूति से व्यक्ति को इन्द्रिय दृष्टि पर संदेह होता है और विवेक दृष्टि का आदर बढ़ने लगता है- "शरीर मोक्ष ले जाने का साधन है, इसकी सार-संभाल भी अति आवश्यक है। इस तरह की आश्रय बुद्धि घटने लगती है। सुख-लोलुपता का प्रभाव मिटते ही जिस शरीर में सत्यता, सुंदरता, सुखरूपता प्रतीत होती थी वह शरीर मल-मूत्र की थैली तथा अनेक व्याधियों का मन्दिर लगने लगता है और फिर देह से मोह-विच्छेद की भावना बलवती होती है। शरीर की आसक्ति समाप्त होती है, भीतर से शब्द निकलते हैं- "खणंवि न रमामिऽहं" मैं इस अशाश्वत शरीर में क्षणमात्र भी रमण नहीं करता हूँ। कारण कि- "इमं सरीरं अणिच्चं असुइं असुइसंभवं, असासयावासमिणं, दुक्खं केसाण भायणं।" (19.13) अर्थात् यह शरीर अनित्य है, अपवित्र है, अशुचि का उत्पत्ति स्थान है। इसमें निवास अशाश्वत है, यह दुःख और क्लेशों का भाजन है। इस पर आसक्ति करे अथवा नहीं करे, पहले या बाद में इसे तो छोड़ना ही पड़ता है। यह पानी के बुलबुले के समान अशाश्वत है, व्याधि और रोगों का घर, जन्म-जरा-मरण से ग्रस्त यह शरीर आश्रय का कारण कैसे हो सकता है?

ज्ञानी भगवंत फरमाते हैं- "पुव्वकम्मखयट्ठाए इमं देहं समुद्धरे" अर्थात् मुक्तिगमन का ऊर्ध्व लक्ष्य अपनाकर साधक बाह्य विषयों की आकांक्षा कभी न करे। इस शरीर को सिर्फ पूर्व-संचित कर्मों का क्षय करने के लिए धारण करे। साध्य-साधक-साधन ये तीन साधना के अंग हैं। साध्य को प्राप्त करने के लिए साधक साधन का प्रयोग करता है। साधन हैं- ज्ञान, दर्शन, चारित्र। इनकी साधना में देह का आश्रय नहीं मात्र उपयोग होता है। व्यवहार समकित के 67 बोल में- इस देह से अरिहंत द्वारा संस्थापित चतुर्विध संघ की सेवा-भक्ति की प्रेरणा दी गई है। इस देह को त्यागी-तपस्वी-व्रती के सेवा में लगाने से साधक सुगमता पूर्वक परिवर्तनशील की दासता से मुक्त होता है।

देह के आश्रय से तो लोभ-मोह ही उत्पन्न होता है। इसी कारण भगवती सूत्र शतक 25, उद्देशक 6 में कहा है-"संयम लेकर भी देह पर दृष्टि केन्द्रित करने वाले को बकुश कहा है। वह अपने उत्तर गुणों में दोष लगाता है और मोक्ष का अधिकारी नहीं बन पाता है।"

शास्त्रकार प्रेरणा देते हैं कि देह से अतीत होने की व्याकुलता बढ़ने पर ही प्राणी देह को साध्य की सिद्धि में साधन बनाता है। अतः उसके जीवन में अनशन, ऊणोदरी,

रसपरित्याग, काय-क्लेश, कायोत्सर्ग आदि आराधनाएँ जीवन में बढ़ने लगती हैं। इतना ही नहीं और आगे बढ़ने के लिए "आयावयाहि चय सोग- मल्लं" आतापना आदि लेकर देह के राग को गलाया जाता है। अर्थात् गर्मी में चिलचिलाती धूप में देह को सूर्य की किरणों के हवाले कर देता है और रात्रि में रोम-रोम को बींधने जैसा कष्ट देने वाली कड़कड़ाती सर्दी की लहरों के नाम कर देता है। प्रतिदिन देह को वोसिराने के विशेष शुद्ध अध्यवसाय से भावना भायी जाती है। जब लगता है कि यह देह उपयोगी नहीं है तो यावज्जीवन के लिए इस देह का आश्रय छोड़कर नित्य, अविनाशी देवाधिदेव का आश्रय लिया जाता है। यही भूल नाश का आमूलचूल उपाय है।

जीवन धन्य बनाया

(तर्ज- ऐसा अपना घर हो)

श्री धर्मचन्द जैन

गुरु हीरा की गौरव गाथा, सुनकर मन हरषाया,
जीवन धन्य बनाया।।टेर।।
श्रुतसागर आयरियाणं को, शत-शत शीष झुकाया।
जीवन धन्य बनाया।।
जन्म लिया पीपाड़ शहर में, गांधी कुल उजियारे,
माँ मोहिनी के लाल कहाये, मोती जी के दुलारे।
गुरु हस्ती का शरणा पाकर, संयम पथ अपनाया।।1।।
शांत सौम्य मुख मण्डल जिनका, संयम तेज निराला
सहज सरल सन्तोष गुणों से, जीवन बना विशाला,
तीजे पद के आराधक बन, मुक्ति पथ अपनाया।।2।।
गुरु आज्ञा में बने समर्पित, आगम ज्ञान प्रवीणा
विनय विवेक से शोभित होकर, तत्त्व बोध कर लीना,
प्रवचन शैली अद्भुत पाकर, जिनशासन चमकाया।।3।।
शीलव्रतों के अद्भुत प्रेरक, व्यसन मुक्ति उपदेशक
निशि भोजन के त्याग कराते, सामायिक आराधक,
विषम भाव को दूर हटाकर, समता गुण विकसाया।।4।।
अन्दर-बाहर एक रूप है, श्रद्धा पूरित जीवन
ध्यान मौन स्वाध्याय गुणों से, अनुप्राणित है तन-मन
शुद्ध स्वरूपी बनने खातिर, धर्म का मर्म बताया।।5।।

-रजिस्ट्रार, अखिल भारतीय जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड जोधपुर (राज.)

काव्य

वीर प्रभु की अन्तिम वाणी (23)

मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा.

श्रद्धेय मुनिश्री द्वारा रचित यह पद्यानुवाद सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के पूर्व कार्याध्यक्ष एवं उत्कृष्ट कवि श्री सम्पतराजजी चौधरी-दिल्ली द्वारा संशोधित-सम्पादित है।-**सम्पादक**

(तर्जः- गुण सौरभ से रहे महकता, ऐसा अपना घर हो)

वीर प्रभु की अन्तिम वाणी, सुनलो और सुनालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।
उत्तराध्ययन में गुंजित होती, प्रभु शिक्षा अपनालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।

(बत्तीसवाँ अध्ययन : प्रमाद स्थान)

सुस्वादु किम्पाक फलों का, प्रतिफल है दुःखदाई,
वैसे कामगुणों का सेवन, देता है अकुलाई,
देवों को भी दुःख है इनसे, इनका संग छुड़ालो ।। 656 ।।
साधक यदि समाधि चाहे, धारण करले समता,
अनचाहे पर द्वेष करे ना, प्रिय पर करे न ममता,
इन्द्रिय विषयों में सम रहके, आकुल चित्त सम्भालो ।। 657 ।।
चक्षु ग्राह्य विषय रूप है, राग-द्वेष का कारण,
प्रियाप्रिय में सम रहना है, वीतरागता लक्षण,
रति-अरति इस पर तज करके, मन का द्वन्द्व मिटालो ।। 658 ।।
प्रिय में जो आसक्ति रखता, रागातुर कहलाता,
कामी पतंगा दीप शिखा का, अकाल मरण है पाता,
रूप-रंग में लिप्सा छोड़ो, अकाल अन्त को टालो ।। 659 ।।
अप्रिय रूप देख करके जो, द्वेष-भाव है रखता,
वैर-विरोध की गांठ बांध वह, मनोव्यथा से जलता,
रूप को दोष नहीं दो इसमें, समता भाव धरालो ।। 660 ।।
रूप मनोहर लख के जो भी, अनुरक्ति है करता,
बुरे रूप को देख के मन में, मत्सर भाव में जलता,

दुःख पाते अज्ञानी ऐसे, विरति भाव अपनालो ।। 661 ।।
मनोज्ञ रूप की अभिलाषा का, अनुसरण जो करता,
निज का स्वार्थ पूरा करने, जीव की हिंसा करता,
क्लेशयुक्त अज्ञानी जन अब, ऐसी आश मिटालो ।। 662 ।।
सुन्दर रूप-रंग से जो भी, अनुराग है रखता,
मोह-भाव के कारण उसका, अर्जन-रक्षण करता,
मिले न तृप्ति भोग काल में, ममता मोह छुड़ालो ।।663।।
रूप-भोग में रमने वाला, संतुष्टि नहीं पाता,
आकुल-व्याकुल ऐसा लोभी, चौर्य कर्म अपनाता,
असन्तोषी दुःखी रहेगा, क्षुधा-दोष को टालो ।।664।।
तृष्णा से अभिभूत हुआ वो, वस्तु अदत्त चुराता,
झूठ कपट बढ़ते पर दुःख का, अन्त नहीं है आता,
तृष्णा दुःख की खान है जानो, इसको दूर भगालो ।।665।।
झूठ बोलते आगे-पीछे, दुःख ही दुःख है पाता,
रूप-अतृप्त दुःखी होकर, शरणहीन हो जाता,
दुःखद अंत है असत् बोल का, सत्य वचन अपनालो ।।666।।
सुन्दर काया की आसक्ति, कोई सुख ना देती,
जिसको पाने दुःख उठाते, भोगों में दुःख देती,
सौख्य नहीं मिलता भोगों में, भोग का रोग मिटालो ।।667।।
द्वेष रूप से जो है रखता, वह भी दुःख ही पाता
कर्मों का बन्धन करके वो, उदय काल पछताता,
द्वेष भाव सारे तज करके, दुःख के हेतु मिटालो ।।668।।
रूप विरक्ति से ही मानव, शोक मुक्त हो चलता,
जल में शतदल की भांति वो, भव दुःख में ना रहता,
राग-द्वेष ना करो रूप से, दुःख परिपाटी टालो ।।669।।
जैसा कहा रूप विषय में, वैसे अन्य को जानो,
शब्द, गन्ध, रस, स्पर्श, अरू, मन-भावों को भी मानो,
प्रियाप्रिय में सम रह करके, राग द्वेष मिटालो ।।670।।
श्रोत्रेन्द्रिय का विषय शब्द है, इसमें ना भरमाना,

शब्द राग से मृग का जैसे, अकाल मरण को पाना,
शब्द में राग द्वेष को तज के, दुःख की राह छुड़ालो ।।671।।
घ्राणेन्द्रिय का विषय गन्ध है, इसमें ना भरमाना,
गन्ध-राग से साँप का जैसे, अकाल मरण को पाना,
'गन्ध' में राग-द्वेष को तज के, दुःख की राह छुड़ालो ।।672।।
रसनेन्द्रिय का विषय 'रस' है, इसमें ना भरमाना,
जैसे मीन[1] का माँस-राग में, बिंध के जान गँवाना,
'रस' में राग-द्वेष को तज के, दुःख की राह छुड़ालो ।।673।।
'स्पर्श' विषय है प्राणी तन का, इसमें ना भरमाना,
जैसे महिष शीत-रागी का, नक्र[2] से जान गँवाना,
'स्पर्श' में राग-द्वेष को तज के, दुःख की राह छुड़ालो ।।674।।
मन का विषय 'भाव' है जानो, इसमें ना भरमाना,
कामगुणों से कुंजर का, जैसे जान फँसाना,
राग-द्वेष हो नहीं भावों में, दुःख की राह छुड़ालो ।।675।।
इन्द्रिय-मन के विषय यहाँ, रागी के दुःख-कारण,
होते नहीं वीतराग के, किंचित् दुःख के कारण,
राग-द्वेष विषयों से छोड़ो, समता भाव धरालो ।।676।।
कामासक्त विविध भावों से, दुष्परिणाम है पाता,
दीन-हीन लज्जित बनके, अनचाहा हो जाता,
विकृत भाव दुःखों के कारण, भाव शुद्ध कर डालो ।।677।।
शिष्य न चाहे सेवा के हित, तप-लब्धि ना चाहे,
इन्द्रियवश में हो जाने से, विकृत होती राहें,
दीक्षा लेकर के साधकजन, अंतवेदना टालो ।।678।।
विकृति पाकर सुखाभिलाषी, मोह सिंधु में गिरता,
कल्पित दुःख निवारण हेतु, फिर उद्यम है करता,
ऐन्द्रियक सुख आसक्ति तज के, भावी दुःख मिटालो ।।679।।
ऐन्द्रियक विषय विरक्तों में, राग-द्वेष नहीं लाते,
समता धारण करने से, मनोविकार मिट जाते,

1. मछली, 2. मगरमच्छ

संकल्पों को तज के सारे, तृषा क्षीण कर डालो ।।680।।
वीतरागता की प्राप्ति पर, मोह कर्म कट जाता,
ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, अन्तराय भी जाता,
केवलज्ञानी-दर्शी बनकर, अनास्रवी बन चालो ।।681।।
सब भावों को करे प्रकाशित, शुक्ल ध्यान वह ध्याता,
आयु क्षय हो जाने पर वह, शिवपद को पा जाता,
पाकर कर्म-रोग से मुक्ति सुख अनन्त बसालो ।।682।।
अनादिकाल से दु:ख मुक्ति का, मार्ग यही बतलाते,
सम्यक् अपना करके प्राणी, अनन्त सुखों को पाते,
छोड़ प्रमाद को अब तो चेतन, मोक्ष मार्ग अपनालो ।।683।।

(क्रमशः)

संकलनकर्ता- नवरतन डागा, पूर्व महामंत्री, अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ,
'लक्ष्य' 76, नेहरुपार्क, बख्तसागर स्कीम, जोधपुर-342003 (राज)

प्रमाण-पत्र

श्री ललित गर्ग

एक बार रूसी लेखक टॉलस्टाय से उनके एक मित्र ने कहा, मैंने तुम्हारे पास एक व्यक्ति को भेजा था। उसके पास उसकी प्रतिभा के काफी प्रमाणपत्र थे। लेकिन तुमने उसे चुना नहीं। मैंने सुना है कि तुमने उस पद के लिए जिस व्यक्ति को चुना है, उसके पास ऐसा कोई प्रमाणपत्र नहीं था। आखिर उसमें कौनसा ऐसा गुण था कि तुम ने मेरी बात की उपेक्षा कर दी? लिओ टॉलस्टाय ने कहा, मैंने जिसे चुना है उसके पास अमूल्य प्रमाणपत्र है। उसने मेरे कमरे में आने से पहले इजाजत मांगी थी। बगैर आवाज किए वह कमरे में प्रविष्ट हुआ। उसके कपड़े साधारण, परन्तु साफ सुथरे थे। उसने बैठने से पूर्व कुर्सी साफ कर ली थी, उसमें आत्मविश्वास था। वह मेरे प्रश्न का ठीक और संतुलित जवाब दे रहा था। मेरे प्रश्न समाप्त होने पर वह इजाजत लेकर उठा और चुपचाप चला गया। उसने किसी तरह की चापलूसी या चयन के लिए सिफारिश की कोशिश भी नहीं की। ये ऐसे प्रमाणपत्र थे, जो बहुत कम व्यक्तियों के पास होते हैं। ऐसे गुण सम्पन्न व्यक्ति के पास यदि लिखित प्रमाणपत्र न भी हो तो कोई बात नहीं। आप ही बताइए, मैंने ठीक चयन किया या नहीं? टॉलस्टाय ने यहाँ सफलता से ज्यादा अच्छाई-गुण को महत्त्व दिया। एक सफल व्यक्ति गुणवान हो जरूरी नहीं है, लेकिन एक गुणवान व्यक्ति जरूर सफल होता है।

-ई-253, सरस्वती कुँज अपार्टमेंट, 25, आई.पी.एक्सटेंशन, पटपड़गंज, दिल्ली-92

शोधालेख

पर्यावरण-संरक्षण : विश्व जागृति की आवश्यकता

डॉ. वीरेन्द्र जैन

वर्तमान समय में 'पर्यावरण प्रदूषण' अखिल विश्व के समक्ष एक विकरालता धारण किये हुए है। पर्यावरण संरक्षण के लिए आज प्रत्येक स्तर पर अनेक अन्वेषण व शोध कार्य हो रहे हैं, जिनका औचित्य मात्र हमें सुरक्षित एवं जीवित रखना है। प्राचीन ग्रन्थों से पर्यावरण-संरक्षण के विषय में बहुत प्रेरणा मिलती है, महाभारत में कहा गया है- ''जो यहाँ है वह अन्यत्र है, जो यहाँ नहीं वह कहीं नहीं।''[1] प्राचीन ग्रन्थ वेद, उपनिषद्, ब्राह्मणों, पुराणों, जैन साहित्य एवं बौद्ध साहित्य में पर्यावरण चेतना के प्रखर स्वर मुखरित होते हैं। जैन ग्रन्थों में पर्यावरण संरक्षण के स्वर इस रूप में स्फुटित होते हैं-

जैन धर्म में 84 लाख योनियों[2] (जन्म लेने के स्थानों) का वर्णन किया गया है, जिनमें पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, वनस्पति आदि स्थावर एकेन्द्रिय तथा द्वीन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय मानवों तक त्रसों का वर्णन प्राप्त होता है। इन चौरासी लाख योनियों में से 7 लाख योनि में वनस्पतिकायिक जीव[3] पाये जाते हैं, जो इस वायु मण्डल और प्राणियों को प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। केवल वनस्पति ही जीव है ऐसा नहीं, अपितु पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु में भी चैतन्यता का समावेश है, आचार्य नेमिचंद्र सिद्धान्तिदेव लिखतें हैं-

पुढविजल तेवाऊ वणप्फदी विविहथावरेइन्दी।
विग तिग चदु पंचक्खा तस्स जीवा होंति संखादी।।[4]

ये सभी जीव हमारी तरह ही सुख-दुःख, अनुकूलता, प्रतिकूलता का वेदन करते हैं, लेकिन अन्तर इतना है कि हम अपनी वेदनाओं को व्यक्त रूप से सहन करते हैं। फिर ये हमारी भोग और उपभोग की वे सभी वस्तुएँ प्रदान करते हैं, जिनसे हमारा जीवन चलता है। कल्पना कीजिए क्या वायु के बिना हम जीवन जी सकतें हैं? जल के बिना हमारा अस्तित्व रह पायेगा? वनस्पति औषध, अनाज के बिना हम जीवन यापन कर सकेंगे? नहीं, तो क्या इन वनस्पतियों का हनन अनावश्यक रूप से करना उचित है? मूलाचार ग्रन्थ में आचार्य लिखते हैं-

होदि वणप्फदि वल्ली रुक्खतणादी तहेव एइंद्री।
ते जाण हरित जीव जणित्ता परिहरेदव्वा।।[5]

बेल, वृक्ष, घास आदि वनस्पति को जीव समझो तथा इनके हनन का परित्याग करो।

यदि हम इन वनस्पतियों का इसी प्रकार नाश करते रहे तो वह दिन दूर नहीं जब हमें प्राण वायु के लिए भी मछली की तरह तड़प-तड़प कर मरना पडेगा, परन्तु वह प्राण वायु प्राप्त नहीं होगी, क्योंकि यह वृक्षों से ही उत्पन्न होती है। दूसरी बात वृक्षों से ही वर्षा होती है, जिससे यह पृथ्वी शस्य श्यामला होती है, जब वृक्ष ही नही होगें तो पूरी पृथ्वी रेगिस्तानमय हो जायेगी। क्या ऐसी धरा की हम कल्पना कर सकते हैं?

हिंसा को बढ़ावा

2006 में संयुक्त राष्ट्र संघ की ओर से की गई पहल के अनुसार, दुनिया में पर्यावरण की दुर्दशा करने में सबसे बड़ा योगदान मवेशी उद्योग का है, खाद्य पदार्थों में अंशदान के लिए आधुनिक तरीकों से पशुओं की तादाद बढ़ाने और उन्हें बड़े पैमाने पर मार कर खाने से वायु और जल प्रदूषण, भूमि क्षरण, जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता को नुकसान हो रहा है। यह भी निष्कर्ष निकाला गया कि स्थानीय से लेकर वैश्विक स्तर पर पर्यावरणीय समस्याओं में सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान कर्ताओं में मवेशी क्षेत्र का स्थान एकदम से शीर्ष पर दूसरा या तीसरा है।[6] भारतीय संविधान की धारा ''51 ए (जी)'' के अंतर्गत भी हमारा यह कर्तव्य है कि हम सभी जीवों पर दया करें और इस बात को याद रखें कि हम किसी को जीवन प्रदान नहीं कर सकते तो उसका जीवन लेने का भी हमें कोई हक नहीं है।

विश्व में हिंसक व्यापार पर्यावरणविदों के लिए सबसे बड़ी समस्या बना हुआ है। मांसाहार एवं हिंसक व्यापारों की बढ़ती वृत्ति पर एक दृष्टि-

बिहार में कुछ दिनों पहले आये क्रूर अध्यादेश ने 2 दिन में 250 नील गायों को मार दिया गया और उन्हें मारने के लिए मुम्बई व हैदराबाद से शूटरों को बुलाया गया। उन्हें मारने के पीछे निराधार तर्क था कि ये किसानों की फसलों को चर के चौपट कर जाती हैं।

''बिहार सरकार की पहली अधिसूचना मंत्रालय ने एक दिसंबर 2015 को जारी की थी, जिसमें नीलगाय और जंगली सुअर को बिहार के कुछ जिलों में एक साल के लिए हिंसक जानवर घोषित किया गया था। इस साल तीन फरवरी को दूसरी अधिसूचना जारी हुई जिसमें जंगली सुअर को उत्तराखंड के कुछ जिलों में एक साल के लिए हिंसक जानवर घोषित किया गया। गत 24 मई को जारी अधिसूचना में रेसस मकाक (बंदर) को हिमाचल प्रदेश के कुछ जिलों में हिंसक जानवर घोषित किया गया।''[7] जहाँ एक ओर सरकार पर्यावरण विविधता वृद्धि हेतु करोडों डॉलर खर्च रही है, वहीं दूसरी ओर निरीह पशु का दिनदहाड़े राजनैतिक छत्रछाया में कत्ले-आम हो रहा है।

पर्यावरण प्रदूषण बढ़ने से हमारे कीट-पतंगें एवं तितलियों की कई जातियाँ नष्ट हो गई

हैं। समुद्री भागों में मूंगें की चट्टानों की वृद्धि रुक गयी है। जिसका कारण प्रदूषण एवं वैश्विक गरमाहट (Global Warming) को बताया गया है। समुद्री भागों से ह्वेल, शार्क, डालफिन आदि विशाल काय मछलियों की कई जातियाँ कम होती जा रही है, जो अवशेष है, वे विलुप्ति के कगार पर हैं। विश्व व्यापार संगठन (W.T.O.) अपने निर्धारित कानूनों के द्वारा विकासशील देशों की जैविक विविधता का व्यापार करने जा रहा है । जिससे यह संकट और बढ़ेगा। इसका सीधा प्रभाव हमारी मौसम प्रणाली, विविधता के क्षेत्रों एवं विभिन्न पर्यावरण प्रणालियों पर पड़ेगा। जिससे जन जीवन संकट में पड़ जायेगा।[8]

दरअसल यह सब विदेशी कंपनियों के ग्लैमर युक्त विज्ञापनों का एक षड्यंत्र है। जिन्हें देखकर अच्छे खासे पढ़े लिखे लोग इनके मोह में ज्यादा पड़ते हैं, आजकल McDonald, Piza Hut, Dominos, KFC के खाद्य पदार्थ यहाँ भारत में भी काफी प्रचलन में हैं तथा कथित आधुनिक लोग अपना स्टेटस दिखाते हुए इन जगहों पर बड़े अहंकार से जाते हैं, कॉलेज के छात्र-छात्राएं अपनी जन्मदिन-पार्टी दोस्तों के साथ यहाँ न मनाएं तो इनकी नाक कट जाती है, वैसे इन पार्टियों में अधिकतर लडकियां ही होती हैं, क्योंकि लड़के तो उस समय बीयर बार में होते हैं।

मैंने भी अपने बहुत से मित्रों व परिचितों को बड़े शौक से इन जगहों पर जाते देखा है, बिना यह जाने कि ये खाद्य सामग्रियाँ कैसे बनती हैं? यहाँ जयपुर में ही मांस का व्यापार करने वाले एक व्यक्ति से एक बार पता चला कि किस प्रकार वे लोग मांस के साथ साथ पशुओं की चर्बी से भी काफी मुनाफा कमाते हैं। ये लोग चर्बी को काट काट कर कीमा बनाते हैं व बाद में उससे घी व चीज बनाते हैं। मैंने पूछा कि इस प्रकार बने घी व चीज का सेवन कौन करता है? तो उसने बताया कि McDonald, Piza Hut, Dominos आदि इसी घी व चीज का उपयोग अपनी खाद सामग्रियों में करते हैं व वे इसे हमसे भी खरीदते हैं।

इसके अलावा सूअर के मांस से सोडियम इनोसिनेट अम्ल का उत्पादन होता है, जिससे भी खाने पीने की बहुत सी वस्तुएं बनती हैं। सोडियम इनोसिनेट एक प्राकृतिक अम्ल है जिसे औद्योगिक रूप से सूअर व मछली से प्राप्त किया जाता है। इसका उपयोग मुख्यत: स्वाद को बढाने में किया जाता है।

जो देश विश्व पर्यावरण को सजाने और संवारने के विषय में उपदेश देते हैं वहाँ की स्थिति के विषय में श्रीमती कान्ता शर्मा लिखती है- "अमेरिका एवं ब्रिटेन में यह बात देखने में आई है कि सन् 1983 से 1992 के बीच अमेरिका का सरीसृप व्यापार 20 गुना बढ़ गया था। इसमें 28 से 82 प्रतिशत तक उछाल आया, सन् 1995 में अमेरिका ने 20.5

लाख सरीसृपों का निर्यात कर भारी आर्थिक लाभ कमाया।[9] इसके भावी दुष्परिणाम के विषय में लिखा है-

''जलवायु में तीव्र गति से होने वाले परिवर्तन के कारण देश की 50 प्रतिशत जैव विविधता पर संकट है। अगर तापमान से 1.5 से 2.5 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि होती है तो 25 प्रतिशत प्रजातियां पूरी तरह समाप्त हो जाएंगी। जैव विविधता जलवायु और वर्षा का कारक है जिससे पृथ्वी की उर्वरा शक्ति बढ़ती है और भू-गर्भ का जलस्तर बना रहता है। खाघ पदार्थो का सत्तर फीसद हिस्सा मधुमक्खियों व तितलियों तथा तीस फीसद चिड़ियों के परागमन से तैयार होता है। इसलिए सृष्टि में सभी जीव-जंतुओं की अपनी महत्ता है। पृथ्वी सिर्फ छह अरब लोगों का ही घर नहीं, बल्कि 28 अरब जीव-जंतुओं की भी दुनिया है। इसमें कोई संदेह नहीं कि जैव विविधता का मानव जीवन के अस्तित्व में अहम योगदान है।''[10] जब शौर्य मनोबल क्षीण होता है तो दुस्साहस की धौंस दर्शाने के लिए क्रूर-कायर मनुष्य, पशुहिंसा व मांसाहार का सहारा लेता है, लेकिन कायरता इस तरह छुपाए नहीं छुपती, निर्बल निरीह पशु पर अत्याचार को भला कौन बहादुरी मानेगा। उस छुपी कायरता को उजागर होना ही होता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

1. यदिहास्ति तदन्यत्र, यन्नेहास्ति न तत्कचिद्।। -आश्वमेधिक पर्व, अध्ययन 69
2. सामण्णेय य एवं णव जोणीओ हवंति वित्थारे।
   लक्खाण चतुरसीदी जोणीओ होंति णियमेण।। गोम्मटसार जीवकाण्ड- भाग 1
3. लाख योनि-णिच्चिदरधादु सत्तय तरूदस वियलिंदिएसु छच्चेव।
   सुरणिरयतिरियचउरो चोद्दस मणुए सयसहस्सा।। 89।। -गोम्मटसार जीवकाण्ड- भाग 1, 7
4. बृहद्द्रव्य संग्रह, गाथा 11, श्रीपरमश्रुत प्रभावक मण्डल श्रीमद् रायचंद्र आश्रम, अगास।
5. मूलाचार -अध्याय 5, 217 गाथा- भारतीय ज्ञान पीठ प्रकाशन
6. "Livestock's long shadow & Environmental issues and options", Fao-org-2009, P. 9
7. जनसत्ता समाचार पत्र, दिल्ली प्रकाशन, 8 जून 2016
8. ताज रावत - विश्व पर्यावरण संरक्षण एवं प्रबन्ध
9. श्रीमती कान्ता शर्मा - वक्ता एवं पर्यावरणविद्, शिमला विश्व पर्यावरण संरक्षण एवं प्रबन्धन की प्रस्तावना में
10. http://hindi.indiawaterportal.org/node/23103

-सहायक प्रोफेसर, ओजस्वनी कॉलेज, दमोह (मध्यप्रदेश)

शाकाहार

शाकाहारी जीवनशैली पर रोकें हमला

डॉ. दिलीप धींग

केन्द्र सरकार अचल सम्पत्ति अधिनियम में कुछ ऐसे परिवर्तन करने जा रही है, जिससे भारत की शाकाहारी जीवनशैली पर करारा आक्रमण होगा। 'राजस्थान पत्रिका' चेन्नई के 13 जून 2016 सोमवार के अंक में मुखपृष्ठ पर प्रकाशित समाचार के अनुसार घर बेचते समय या किराये पर देते समय कोई भी मकान-मालिक या बिल्डर; क्रेता या किरायेदार को उसकी खानपान सम्बन्धी आदतों और धर्म, जाति, आचरण आदि के बारे में पूछताछ नहीं कर सकेगा। अन्य अखबारों और ई-अखबारों में भी इस आशय के समाचार छपे हैं। खबर के अनुसार अचल सम्पत्ति अधिनियम (नियमन और विकास), 2016 रियल इस्टेट एक्ट (रेग्युलेशन एंड डवलपमेंट), 2016 पहले ही पारित किया जा चुका है तथा अक्टूबर से पहले इसे लागू किया जायेगा। लागू करने से पूर्व इसमें परिवर्तन की तैयारी है, ताकि कोई भी मकान-मालिक या बिल्डर अपने क्रेता या किरायेदार से धर्म, जाति, रंग, लिंग, समलैंगिक जिन्दगी (सेक्शुअल ओरियंटेशन) तथा खानपान को लेकर भेदभाव नहीं कर सके। दोषी पाये जाने पर बिल्डर को तीन साल की सजा और अर्थदण्ड तक भुगतना पड़ सकता है।

संवैधानिक समानता का सूत्र उन योजनाओं, नीतियों और सुविधाओं में लागू होता है, जो सरकारी हों। सरकारी नौकरी तथा प्रत्यक्ष रूप में सरकार द्वारा प्रवर्तित/संचालित आवासीय व व्यावसायिक भवन योजनाओं में इस प्रकार के भेदभाव अनुचित हैं। लेकिन आश्चर्य है, ऐसी योजनाओं के प्रपत्रों में भी सरकार अभ्यर्थी की जाति, धर्म, वर्ग और लिंग पूछती है।

जहाँ तक क्रेता या किरायेदार के खानपान के बारे में जानकारी लेने पर सरकार की आपत्ति की बात है तो यह आपत्ति सरासर गलत, असामाजिक और असंवैधानिक है। कोई भी मकान-मालिक अपना मकान किस प्रकार के आचरण और जीवनशैली वाले व्यक्ति को किराये दे या बेचे, इसमें सरकार क्यों अंकुश लगाये? सम्पत्ति-मालिक द्वारा अपनी सम्पत्ति को किराये देने और बेचने में उचित आजादी और विवेक का उपयोग करना पूर्ण संवैधानिक और व्यावहारिक है। संविधान में नागरिकों को स्वतंत्रतापूर्वक व्यवसाय करने का अधिकार दिया गया है।

यदि कोई मकान-मालिक अपना घर या घर का हिस्सा किसी शराबी, मांसाहारी या

समलैंगिक को किराये नहीं देना चाहे या बेचना नहीं चाहे और इसमें सरकार द्वारा यदि प्रतिबंध लगाया जाता है तो यह मौलिक अधिकारों पर कुठाराघात है। ऐसा करना अहिंसामय भारतीय संस्कृति, भारतीय सामाजिक मूल्यों और संविधान का अपमान है। ऐसे मनमाने और अतार्किक कानून का पूरी तरह से विरोध किया जाना चाहिये।

यह सर्वथा स्वाभाविक बात है कि एक ही प्रकार की जीवनशैली वाले व्यक्ति साथ-साथ और आसपास रहना पसन्द करते हैं। व्यसनमुक्त और शाकाहारी जीवनशैली वाले अपने पड़ोसी, अपने किरायेदार और अपने मकान मालिक यदि समान जीवनशैली वाले ही चुनते हैं तो यह उनका मौलिक अधिकार है। चयन के इस स्वाभाविक अधिकार में किसी भी प्रकार का कानूनी प्रतिबंध जीने के मौलिक अधिकार पर खुला हमला है। ऐसे अविचारित कानून से तो भारत की सांस्कृतिक अस्मिता और सामाजिक समरसता ही छिन्न-भिन्न हो जायेगी। व्यक्ति, परिवार और समाज के सहज विकास में तरह-तरह की परेशानियाँ पैदा हो जायेंगी। भारत के पारिवारिक और सामाजिक मूल्य नष्ट-भ्रष्ट हो जायेंगे।

देश में अनेक स्थानों पर ऐसी कॉलोनियाँ, सोसाइटियाँ और अपार्टमेंट मिल जायेंगे, जिनमें सभी या अधिकांश परिवार शाकाहारी और नशामुक्त होते हैं। वे लोग बेहतर जीवनशैली का चयन कर शान्तिमय वातावरण में अपना जीवन जीते हैं। वे लोग अपने आसपास मद्य-मांस की बदबू पसन्द नहीं करते हैं, मारे जाने वाले पशु-पक्षियों की चीख-चीत्कार नहीं सुनना चाहते हैं, मांस के लोथड़े नहीं देखना चाहते हैं तो क्या गलत है? यह तो अच्छा ही है कि समाज की बस्तियाँ निरीह प्राणियों के खून-खराबे से दूर रहें।

यह तथ्य है कि देश और दुनिया के अनेक व्यक्ति, समुदाय और धर्म मांसाहार का निषेध करते हैं। कितने ही समुदायों में मांसाहार पूरी तरह निषिद्ध भले ही नहीं हो, लेकिन वहाँ भी अनेक पवित्र दिनों में मांस खाना ठीक नहीं समझा जाता है। स्पष्ट है कि मांस सर्वत्र और सदैव स्वीकार्य आहार नहीं है। इसके विपरीत शाकाहार सर्वस्वीकार्य है। मांसाहार से किसी को एतराज हो सकता है, लेकिन शाकाहार से किसी को कोई एतराज नहीं है। शाकाहार एक सामाजिक और मानवीय आहार है। शाकाहारी जीवनशैली वाले लोगों और समुदायों के साथ कानून के डण्डे से जबर्दस्ती गैर-शाकाहारी जीवनशैली वाले लोगों को बसाना अन्याय है। इस सम्बन्ध में कानून चुप ही रहे तो अच्छा है। अचल सम्पत्ति के मालिक या बिल्डर किस प्रकार की जीवनशैली वाले क्रेता और किरायेदार को अपनी सम्पत्ति हस्तान्तरित करते हैं, यह उनका अपना स्वविवेक और अधिकार है। मनमाने कानून बनाकर सरकार को उसमें हस्तक्षेप नहीं करना चाहिये।

वस्तुतः खानपान का बिन्दु भेदभाव से नहीं, जीवनशैली से जुड़ा है। यहाँ जैन दिवाकर

मुनि चौथमलजी और जैन सन्त आचार्य तुलसी के जीवन-प्रसंगों का उल्लेख करना ठीक रहेगा। जब उन्हें पूछा गया कि क्या फलां उपेक्षित जाति के व्यक्ति के घर से वे आहार ग्रहण करेंगे? उनका उत्तर था कि वे मानवीय एकता के विश्वासी हैं। जिस चौके में शुद्ध सात्त्विक शाकाहार बनता है, उस चौके से बिना किसी भेदभाव के वे गोचरी (आहार) ग्रहण कर सकते हैं। उन्होंने अपने जीवन में सहज रूप से वैसा किया। जैन इतिहास, सन्तों के जीवन और भारतीय समाज में समता और समरसता के ऐसे सैकड़ों उदाहरण मिल जायेंगे।

वस्तुत: शाकाहार समता और समरसता को बढ़ाने वाला आहार है। ऐसे सात्त्विक आहार की किसी भी रूप में खिलाफत करना समता, समरसता और श्रेष्ठता की खिलाफत करना है। यह तथ्य है कि शाकाहार मात्र आहार ही नहीं, अपितु एक अत्यन्त सुविकसित, सम्पूर्ण जीवनशैली है। शाकाहारी जीवनशैली मानव सभ्यता और संस्कृति के उत्कर्ष के साथ जुड़ी है। कोई भी व्यक्ति या व्यक्तियों का समुदाय यदि शाकाहारी जीवनशैली वाले वातावरण में रहना चाहें तो उनके इस स्वाभाविक और सामाजिक अधिकार की रक्षा की जानी चाहिये। यदि बिल्डर, कॉलोनाइज़र या अचल सम्पत्ति व्यवसायी लोगों की शाकाहारी जीवनशैली का समर्थन करते हैं तो यह पूर्णत: न्यायसंगत है। अनेक क्रेता और किरायेदार भी शाकाहारी मकान मालिक, शाकाहारी इलाके और शाकाहारी घर चाहते हैं। यह चाहत किसी भी तरह से गलत नहीं है। सरकार को नागरिकों की इस सकारात्मक चाहत में घालमेल और हस्तक्षेप से बचना चाहिये।

लोगों के शान्तिपूर्ण जीवन, व्यावसायिक स्वतंत्रता तथा जीवनशैली चयन के इस स्वाभाविक अधिकार के खिलाफ कोई भी विचार और कानून नितान्त अन्यायपूर्ण है। ऐसे अन्याय को पानी आने से पहले ही पाल बांधकर रोका जाना चाहिये। अचल सम्पत्ति व्यवसायियों, बिल्डरों, जनप्रतिनिधियों, न्यायविदों और सम्बन्धित महानुभावों से आग्रह है कि वे इस सम्बन्ध में अपनी सकारात्मक भूमिका निभाएँ और सरकार तक तथ्यों के साथ, तर्कपूर्ण तरीके से अपनी बात पहुँचायें।

-निदेशक : आई.सी.पी.एस.आर.,
सुगन हाउस, 18, रामानुजा अय्यर स्ट्रीट, साहुकारपेट, चेन्नई-600079

धोवन पानी हेतु निःशुल्क राख उपलब्ध

सम्पूर्ण भारत में कहीं भी धोवन पानी हेतु राख कोरियर/डाक द्वारा निःशुल्क भेजी जाती है। राख मंगवाने के लिए अपना नाम, डाक का पता, पिनकोड सहित मोबाइल नं. 077427-31886 पर एस.एम.एस. करें या अक्षय जैन, मोबाइल नं. 094797-05060 पर सम्पर्क करें।

धारावाहिक

लग्न की वेला (21)

आचार्य श्री उमेशमुनि जी 'अणु'

दूसरे दिन से मुनियों का आगमन प्रारम्भ हो गया। संघ की प्रमुख साध्वियों को भी सूचना दी गयी। लोगों में उत्साह था। कुछ ही दिनों में आचार्यश्री के प्रायः समस्त साधुओं का पदार्पण हो गया और साध्वियाँ भी विशाल संख्या में पधार गयीं।

आचार्यदेव के आदेश से एक दिन सूर्योदय के मुहूर्त भर बाद विचार-विमर्श के लिये चतुर्विध संघ की सभा हुई। आचार्यदेव पाट पर विराजमान हैं। उनके दाहिनी ओर उपाध्याय और गणी मुनिराज प्रथम पंक्ति में विराज रहे हैं। दूसरी पंक्ति में स्थविर संत और उसके बाद क्रम से अन्य मुनि-मण्डल, बायीं ओर प्रथम पंक्ति में अर्धगोलाकृति में महत्तरा, प्रवर्तिनी और गणिनी साध्वियाँ, दूसरी पंक्ति में स्थविराएँ और क्रमशः अन्य साध्वियाँ स्थित हैं। आर्याओं के समीप के भाग में अर्हद्दासी, मेरुसुन्दरी, सिद्धिदेवी, रतिमाला, सत्यबाला, मधुप्रिया आदि प्रमुख उपासिकाएँ अन्य श्राविकाओं के साथ बैठी हुई हैं और मुनिराजों के समीप के भाग में आचार्यदेव के सन्मुख संघदास, गुणसुन्दर, नगरश्रेष्ठी, समरादित्य, भवदत्त आदि प्रमुख सदस्यों के साथ श्रावकवृन्द समुपस्थित हैं।

आचार्यदेव ने महामंत्र का तीन बार उच्चारण किया। उस समय समस्त संघ नमस्कार-मुद्रा में स्थित रहा। अब आचार्यदेव मंगलपाठ बोलने लगे। उनके उच्चारण के बाद समस्त संघ उसका उच्चारण करता रहा। फिर आचार्यप्रवर ने संक्षेप में अपनी बात रखी- ''मुझे प्रसन्नता है कि आप संत-सती-गण संदेश पाते ही उग्र विहार करके यहाँ पधार गये। इतने समय तक आप मेरी आज्ञा में विचरण करते हुए आराधना के मार्ग पर अपने चरण बढ़ाते रहे। अब यह शरीर वृद्ध हो गया है- जीर्ण हो गया है। अतः अब कार्य भार से मेरे मुक्त होने का क्षण आ गया है। इसलिए किन्हीं सुयोग्य मुनिराज को आचार्यपद पर मैं अपने समक्ष ही स्थापित कर दूँ- ऐसी मेरी भावना है। इसीलिये मैंने आपको कष्ट दिया है। इस बहाने मैं अपने संघ के बहुत बड़े भाग को मिल सका- यह परम हर्ष की बात है। अब मैं इस गुरुतर कार्य में आपका सहयोग चाहता हूँ। यदि आप सब मिलकर अपने शास्ता को चुन लें तो मुझे प्रसन्नता होगी।''

मुनियों और साध्वियों में अपने-अपने दल में परस्पर विचार-विमर्श होने लगा। स्थविर मुनियों में आचार्यदेव की बात से आश्चर्य छा गया। उनके अनुसार 'आचार्य के विद्यमान रहते हुए कुछ भी कारण न होने पर संघ अपना नया आचार्य चुनें'- यह परम्परा

नयी होगी। इससे कई उलझनें खड़ी हो सकती हैं। आचार्यपद का चयन सर्वसाधारण जन का विषय नहीं है। अतः वरिष्ठ स्थविर मुनिराज खड़े हुए। उनके खड़े होते ही सर्वत्र शान्ति छा गयी और सभी उनकी बात सुनने के लिये उत्सुक हो गये। वे बोले- ''आचार्यदेव क्षमा करें। आपकी दृष्टि हम समझ रहे हैं। परन्तु हमारा संघ साधकों का संघ है। यहाँ मत नहीं, आज्ञा प्रधान है। आचार्यदेव को यह अधिकार है कि वे अपना उत्तराधिकारी स्वयं चुनें। यदि कारणवशात् आचार्यश्री इस कार्य में अक्षम हों तो यह कार्य प्रमुख मुनिराज करें। चतुर्विध संघ में तो इस प्रकार के अधिकार की तो बात कैसे सोचें? हमारे आचार्यश्री सभी प्रकार से सक्षम हैं, निष्पक्ष हैं और आपश्री में हम सभी का विश्वास है। अतः ऐसी स्थिति में चतुर्विध संघ अपने शास्ता का चयन करे- यह अनुचित लगता है। आचार्यदेव स्वयं दूरदर्शी हैं। इसके दूरगामी परिणाम कैसे होंगे- यह आपश्री स्वयं सोच सकते हैं। यदि मेरी भाषा में कुछ गलत प्रयोग हो गया हो तो मैं करबद्ध होकर क्षमा चाहता हूँ।'' यह कहकर स्थविर मुनिराज ने आचार्यश्री को अपना मस्तक नमाया और वे बैठ गये। प्रमुख मुनिराजों ने 'ठीक फरमाया' कहकर उनकी बात का समर्थन किया और अन्य मुनियों ने मौन रहकर।

महत्तरा साध्वी खड़ी हुई। वे आचार्यदेव को वन्दना करके बोली- ''गुरुदेव! विद्यमान साधु-साध्वियों में आपके द्वारा दीक्षितों की ही संख्या अधिक है। आपके गुरुभ्राता उपाध्यायप्रवर और स्थविर अनगार तथा आपकी गुरु बहिनें साध्वियाँ भी आपको गुरु तुल्य ही मानते हैं, क्योंकि उन्हें ज्ञान आपने ही प्रदान किया है। आपके समान ज्ञानी, वत्सल, निश्छल, यशस्वी, सर्व-हित-चिन्तक और सर्व-संघ के विश्वासपात्र साधना-मार्ग के अनुभवी आचार्य विरले ही होते हैं। आचार्य प्रभो! आप महान् हैं- उदार हैं, जो आप अपने से अत्यन्त लघु साधु-साध्वियों और शिष्य-शिष्याओं में ही अपने अधिकार को विकेन्द्रित करना चाहते हैं, यह आपके सदाशय के अनुरूप ही है। परन्तु हम तो आप अनुभवी की आज्ञा-पालन में ही हित देखते हैं। मैं अपने साध्वी वर्ग की ओर से विश्वास दिलाती हूँ कि गुरुदेव जिन्हें भी योग्य समझकर आचार्यपद पर स्थापित करेंगे- उनकी आज्ञा हम शिरोधार्य करेंगी।'' यह कहकर वे बैठ गयीं। अन्य साध्वियों ने उनकी बात का अनुमोदन किया। प्रमुख अर्हद्दासी खड़ी हुई और हाथ जोड़कर बोली- ''हमें विश्वास है कि हमारे गुरुदेव निष्पक्ष हैं। गम्भीर चिन्तन के बाद ही गुरुदेव वचन मुखकमल से बाहर निकालते हैं। गुरुदेव ने हमें जो कहा, वह कई दृष्टियों से चिन्तन करके ही कहा होगा। गुरुदेव का प्रत्येक वचन सुपरिणाम ही लाता है और इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है- अभी कहे गये वचन। उन सुविचारित वचनों का कैसा उत्तम फल आ रहा है? अत्यन्त अल्प समय में हम सब एकमत हो रहे हैं। हम श्राविकाएँ हैं। संघ में हमारा स्थान सबसे अन्त में है। फिर भी धन्य हैं- गुरुदेव को कि

जिस विषय में हमारी राय का कोई विशेष महत्त्व नहीं है, जिसका कोई खास असर नहीं होता है, उस विषय में गुरुदेव हमारा मात्र मत ही जानना नहीं चाह रहे हैं, परन्तु हमें अधिकार दे रहे हैं। मैं तो इसमें गुरुदेव की दीर्घ-दृष्टि देख रही हूँ। फिर भी हमें हमारा कर्त्तव्य देखना है। हम सब श्राविकाएँ गुरुदेव की इस सम्बन्ध में जो भी आज्ञा होगी, उसे सहर्ष स्वीकार करेंगी।'' अर्हद्दासी की बात सुनकर साधु, साध्वियाँ और श्रावक तो प्रसन्न हुए ही, परन्तु आचार्यदेव भी मुस्करा दिये। इससे श्राविका-वर्ग में हर्ष की लहर दौड़ गयी।

आचार्यदेव ने श्रावकों की ओर दृष्टि डाली। जिसका स्पष्ट अर्थ यही था कि वे उनका अभिप्राय भी जानना चाहते हैं। संघदास ने सार्थवाह की ओर और सार्थवाह ने नगरश्रेष्ठी की ओर देखा। नगर-श्रेष्ठी ने धीमे से कहा- ''गाथापतिजी! इस विषय में आप ही कुछ फरमाइये।'' गाथापति ने खड़े होकर आचार्यदेव को नमस्कार किया और फिर बोले- ''हम गुरुदेव के बहुत ऋणी हैं। गुरुदेव की असीम कृपा से यहाँ का संघ समस्त संघों का प्रतिनिधि संघ माना जाता है। आज गुरुदेव के अनुयायी समस्त संघ यहाँ के संघ के धर्म-कार्य के निर्णय को प्रधान निर्णय मानते हैं और उस निर्णय का कोई उल्लघंन नहीं करते हैं। इतना ही नहीं, अन्य सामाजिक कार्यों में भी यहाँ के संघ को प्रमाण मानकर चलते हैं। यह सब गुरुदेव की महतीकृपा का फल ही है। हम श्रावक-श्राविकाएँ आचार्यदेव के उपासक हैं। जिनेश्वरदेव की वाणी के अनुसार हम श्रमण-भगवन्तों के उपासक हैं। आज हमारे सन्मुख, गुरुदेव ने अपने संघ के नये आचार्य के चयन का प्रश्न रखा है। हम उपासक तो अपने गृह-व्यापार में लीन रहने वाले जीव हैं और अल्प रूप में ही संतों के सम्पर्क में आते हैं, परन्तु गुरु भगवान हमें पुरुष-परीक्षक कहा करते हैं, फिर भी गुरु भगवान की परीक्षा के समक्ष हमारी परीक्षा का कहाँ स्थान है? अतः गुरुदेव की दृष्टि में जो भी योग्य होंगे, उन्हें श्रमण-श्रमणीवृन्द अपने आचार्य के रूप में स्वीकार करेगा, वे ही मुनिराज आचार्य रूप में और उनकी आज्ञा को स्वीकार करने वाला श्रमण-श्रमणीवृन्द ही हमारे शिरसा वंद्य होंगे।'' यह कहकर गाथापति ने वंदना करके अपना स्थान ग्रहण किया।

आचार्यदेव की सेवा में विराजमान गणी यशोराजजी महाराज खड़े हुए। वे आचार्यदेव के पादारविन्दों में नमस्कार करके अपने भाव व्यक्त करने लगे- ''स्थविर भगवान, भगवती आर्या महत्तरा उपासक-अग्रणी संघदासजी और उपासिका शिरोमणि देवी अर्हद्दासी के विचार चतुर्विध संघ के विचार का प्रतिनिधित्व करते हैं। सभी ने आचार्यदेव के नियोजन में विश्वास प्रकट किया है। आचार्यदेव हमारे परमोपकारी हैं। अतः हमें गुरुदेव के प्रति विश्वास निष्ठ होना ही चाहिए और वैसी ही एकनिष्ठ श्रद्धा आप सबने गुरुदेव के प्रति दरसाई है। अब मैं गुरुदेव से प्रार्थना करता हूँ कि वे नये आचार्यदेव का निर्वाचन करके

हमें कृतार्थ करें।''

आचार्यप्रवर का शरीर संलेखना से कृश हो गया। फिर भी वे किसी विशिष्ट शक्ति से सम्पन्न लग रहे थे। उनके मुख के चारों ओर मनोमोहक अनुपम तेजोवलय प्रतीत हो रहा था। वे परमशक्ति से फरमाने लगे- 'देवानुप्रियों! नये आचार्य की नियुक्ति के लिये मैंने आपके विचारों को विविध रूप से जानने का प्रयास किया- व्यक्तिशः भी और सामूहिक रूप से भी। उन सभी प्रयत्नों से यह निष्कर्ष आया कि आपकी मुझमें प्रगाढ़ श्रद्धा है। मैं मेरे संघ को इतना एकनिष्ठ देखकर बड़ा प्रसन्न हूँ। अब इस महत्त्वपूर्ण पद के योग्य जो मुनिराज हैं, उसका नाम मैं घोषित करता हूँ। मुझे इस पद के योग्य मुनिराज धर्मप्रियजी लगते हैं। मैं उनका नाम इस पद के लिये घोषित करता हूँ। वे इस पद से और यह आचार्य पद उनसे अलंकृत होने योग्य है। अभी मैं और अवकाश देता हूँ कि इस विषय में किसी को कुछ कहना हो तो वे कह सकते हैं। अगर किसी को शंका हो तो उसका यथाशक्य समाधान किया जाएगा।''

उपाध्याय, स्थविर अनगार और सातों गणी मुनिराज बड़े हर्ष के साथ खड़े हुए। वे सभी आचार्यदेव की ओर मुख करके, अंजलि बाँधकर मस्तक पर लगाते हैं और कहते हैं, एक साथ- ''तहत्ति आपकी आज्ञा शिरोधार्य है।'' महत्तरा, प्रवर्तनी और गणिनियों ने भी खड़े होकर यही क्रम दुहराया। फिर उपाध्यायजी ने फरमाया- ''हमें इस विषय में कुछ भी शंका-कुशंका नहीं है। आचार्यदेव का चयन अत्युत्तम है। धर्मप्रिय मुनिराज आपके ज्येष्ठ शिष्य ही नहीं वे श्रेष्ठ भी हैं। मैं निवेदन करूँगा कि वे आचार्यदेव के चरण-कमल में समुपस्थित होकर उनकी आज्ञा को स्वीकार करें और आचार्यदेव का आशीर्वाद ग्रहण करें।'' परन्तु धर्मप्रियजी मुनि खड़े नहीं हुए। उपाध्याय और स्थविर मुनि उनके पास आये। उन्हें उनकी आँखों में अश्रु दिखायी दिये। वे बोले- ''अरे! धर्मप्रियजी यह क्या कर रहे हो? यह मंगल-वेला है। आचार्यदेव का आशीर्वाद ग्रहण करो।''

उन्होंने उन्हें हाथ पकड़कर उठाया और आचार्यदेव के पास ले गये। मुनिराज ने गुरु भगवान के चरणों में अपना शीष रख दिया और रुद्ध कण्ठ से बोले- ''भगवन्! आपने यह क्या किया? मेरे से योग्य हैं- मेरे कई गुरुभ्राता! यह मिठाई नहीं है---'' वे आगे नहीं बोल पाये। आचार्यदेव निर्लिप्त भाव से बोले- ''जो हुआ है वह योग्य ही हुआ है। सभी सहमत हैं। वत्स! यह मत समझो कि यह काँटों का ताज है। यह मत भूलो कि जो आचार्य अपने कर्त्तव्य का पालन करता है तो वह भव के फेरे घटाता है।''

''जो आज्ञा, गुरुदेव की''- स्वस्थ होकर धर्मप्रियजी अनगार ने कहा- ''प्रभो! आप राह बताना! प्रभो! मैं बालक हूँ....।'' उनका हृदय फिर भर आया। आचार्यदेव ने अपने चरणों से उनका मस्तक उठाते हुए कहा- ''भावुक मत बनो, मुनिराज! अपने आप पर

नियन्त्रण करो। अब आप अनुशास्ता हैं।''

मुनिराज ने गुरुदेव के चरणों में वन्दना की और उन्होंने मस्तक पर हाथ फिराते हुए मंगलमय आशीर्वाद दिया- ''यह पद स्व-पर के उत्थान का साधक बने। तुम्हारा शासन यशस्वी हो।'' उस समय का वातावरण अत्यन्त भाव-पूर्ण बन गया। साधु-साध्वी आदि सभी श्रद्धातिरेक से गद्‌गद् हो गये। श्रावक-संघ ने जयघोष किया-

पूज्य गुरुदेव पूज्य श्री मुनिचन्द्राचार्य की जय!

नव आचार्य पूज्य श्री धर्मप्रिय मुनिवर की जय!

कुछ देर बाद सर्वत्र शान्ति छा गयी। सभी अपने-अपने स्थान पर स्थित हो गये। तब आचार्यदेव ने फरमाया- ''देवानुप्रियों! अब मुझे कुछ बातें और कहनी हैं। अब ये आपके लम्बे समय तक भावी आचार्य नहीं रहेंगे।'' आचार्यश्री की इस बात से वहाँ उपस्थित सभी जनों के श्वास ऊँचे हो गए। आचार्यश्री ने आगे कहा- ''इन्हें जल्दी ही आचार्य-पदासीन करना है। स्थविर इसके लिये दिन का निर्णय करें।'' स्थविरों ने गणित करके और उपाध्याय से विचार-विमर्श करके दो दिन बतलाये, चैत्र शुक्ला नवमी और त्रयोदशी। फिर चतुर्विध संघ ने विचार-विमर्श करके चैत्र शुक्ला त्रयोदशी का दिन इस पावन कार्य के लिये नियत किया।

तब आचार्यदेव ने स्वीकृति देते हुए कहा- ''आपने इस कार्य के लिये कुछ लम्बी कालावधि नियत की है। बीच में पन्द्रह दिन पड़े हुए हैं। फिर भी जैसी संघ की इच्छा। अब मैं यह बतला देना चाहता हूँ कि यह कार्य अपने सामने ही सम्पन्न करवाना क्यों चाह रहा हूँ? मेरी संलेखना चल रही है। अब जघन्य संलेखना जितना भी समय नहीं है। आचार्यपद प्रदान के दूसरे ही दिन यावज्जीवन का अनशन प्रारम्भ कर देने के भाव हैं.....''

महत्तरा साध्वी खड़ी होकर बोली- ''भन्ते! यह दुःखद वियोग की बात इस समय क्यों सुना रहे हैं?''

''आर्ये! समाधि-मरण हम मुनियों के जीवन का परम मंगल कार्य है।'' आचार्यदेव ने मुस्कराते हुए कहा- ''यह हमारा चिर-अभिलषित कार्य है। इसके लिये तो हम नित्य तीसरे मनोरथ का चिन्तन करते हैं। वियोग तो अवश्यंभावी है और त्यागियों के लिये न सुख मंगल है और न दुःख अमंगल है....।''

''भन्ते! मेरा यह आशय नहीं है। पर यह कार्य सम्प्रति किस.....।''

''आधार से किया जा रहा है? यही आपकी शंका है न! आर्ये! किसी पुष्ट आधार से यह संलेखना प्रारम्भ की गयी है- यह मैं आपको फिर बता दूँगा।

''जय हो- विजय हो, गुरुदेव की। समाधि-मरण तो साधना-मंदिर का परम पावन स्वर्ण कलश है, भगवन्!

(क्रमशः)

कविता

आत्मसम्मान और अभिमान

डॉ. रमेश 'मयंक'

मनुष्य के आचरण में
उन्नतिकारक-आत्म-सम्मान,
और
अवनतिकारक-अभिमान।
आत्म-सम्मान
व्यक्ति का गौरव बढ़ाता,
न्याय-नीति का हेतु बनाता,
अभिमान-
प्रतिष्ठा को ठेस पहुँचाता
हीनता पूर्ण; आदर्श और आचरण
सबकी नजरों से गिराता।
स्वाभिमानी
निर्धन होकर भी होता
न्याय-नीति का पक्षधर, सहयोगी
धर्म की राह पर चलने को तत्पर
जबकि- आत्म गौरव से हीन होकर
धनवान भी
अनीति पूर्ण- कपटी व्यवहार से
ठोकर खाता; संभल नहीं पाता
उपहास, असहयोग का पात्र बन जाता
वह याचना करे तो भी
सही नहीं समझा जाता
लोग कहते - आ गया भेष बदलकर
मुखौटा धारण कर।
सहयोग पाने के लिए चाहिए
स्वच्छ मन; सत्य निष्ठा व शिष्ट वचन
पवित्र आचरण; संयम
और- आदर्श का अनुसरण
जबकि- असहयोग की स्थिति में
कलुषता बढ़ती; कटुता पनपती
समाज वर्ग भेद का शिकार हो जाता
सामाजिक वैषम्य
वर्ग अंतराल की खाइयों को
थोड़ा करता जाता।
हम- आचरण में आत्म-निर्भर बनें
संतोष अपनाएँ; आत्म सम्मान बचाएँ
जीवन में प्रसन्नता को गले लगाएँ
इसके विपरीत
अभिमान पाला तो, अंहकार अपनाया तो
अनीति का समर्थन जुटाया तो
सद्मार्ग से भटक जाना है
स्वयं की नजरों में भी
ऊपर उठ नहीं पाना है।
हे परम सत्ता के अधिष्ठाता!
गलत आचरण से बचाना
सिंह शावक को
सियारों के बीच रखकर
आत्म-गौरव को मत भुलाना
और- जोड़कर धर्म से
सन्मार्ग पर अग्रसर करते जाना।

(जिनवाणी अगस्त 2015 के सम्पादकीय 'अभिमान और स्वाभिमान' के आधार पर रचित)

-बी-8, मीरा नगर, चित्तौड़गढ़-312001 (राज.)

युवा-स्तम्भ

Jain Thought : कर्म और हम

श्री प्रमोद महनोत

हिन्दू, जैन, बौद्ध आदि अनेक धर्मों की मान्यताओं के अनुसार जीव चार गतियों में अनन्त काल से भटक रहा है। वह अर्जित कर्मों के कारण फल भोगता है। आधुनिक युग में यह 'Theory of Karma' के नाम से जाना जाता है।

अगर जीव का भटकना रोकना है तो हमें उन कर्मों पर नियन्त्रण करना होगा जो हमारी आत्मा को दूषित (Contaminate) करते हैं। ऐसे कर्मों के मूल कारण 'कषाय' हैं जो चार हैं:- क्रोध (Anger), मान (Ego), माया (Deceit), लोभ (Greed)। ये चारों कषाय तीन योगों के साथ निरन्तर सक्रिय रहते हैं। तीन योग हैं- 1. मन (Thoughts), 2. वचन (Speech) एवं 3. काया (Physical, Body) की प्रवृत्ति। उपर्युक्त योगों में से हर एक की तीन स्थितियाँ हैं जिन्हें हम "करण" कहते हैं-स्वयं नहीं करूँ (I will personally not do it), कराऊँ नहीं (will not get done through others), करते हुए को भला जानू नहीं (I will not appreciate anybody doing wrong)।

काया और वचन पर तो कन्ट्रोल करना इतना कठिन नहीं है, पर मन चूँकि चलायमान हैं सो उसकी Thought प्रक्रिया निरंतर चलती ही रहती है। माइंड के वर्किंग के तीन 'सोपान' (Steps) हैं। 1. संरम्भ (Clicking of an Idea), 2. समारम्भ (Mental preparation of the act), 3. आरम्भ (Mentally Implementation or starts of the act). उपर्युक्त समस्त का समावेश करें तो :- 4 कषाय X 3 योग X 3 स्थितियाँ X 3 सोपान = 108

इस तरह कर्म बंधन के 108 Entry Points हैं। सोचने का विषय है कि हम Daily routine में कर्म बंधन करते कैसे हैं? इसका स्वयं पर अध्ययन करें तो पाते हैं कि कर्म बंधन सामान्यतः- शारीरिक क्रिया से 15 प्रतिशत, वचन से 25 प्रतिशत एवं मन से 60 प्रतिशत होता है। दूसरे शब्दों में हम पाप कर्मों को तीन तरह से आमन्त्रित करते हैं,पर अगर हमारा विवेक जागृत रहेगा तो हम अनावश्यक कर्म बंधन से मुक्त हो सकते हैं।

यह बतलाता है कि अधिकतर कर्मों का संचय हम बिना कोई कार्य किए भी करते हैं, मात्र मन से व्यर्थ चिन्तन करके अथवा किसी का बुरा सोचकर हम कर्म बाँधते रहते हैं। कभी भद्दे मजाक करके, तो बिना कारण किसी की निन्दा करके या टिप्पणी करके भी अनावश्यक कर्म बंधन करते रहते हैं। हम 40 प्रतिशत कर्म बंधन अनावश्यक रूप से बिना सोचे-समझे कर लेते हैं। अगर हम विवेकपूर्वक काम करें, तो अधिकांश कर्म-बंधनों से आसानी से बच सकते हैं। अत: हमारा विवेक सदैव जागृत रहे, यह आवश्यक है।

Simply we have to remain prudent and watchful on each and every act to curtail accumulation of bad KARMAS so that we have not to pass though bad times.

-सी-345, हंस मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर (राज.)

स्वास्थ्य-विज्ञान

पीने योग्य शक्तिवर्धक पानी कैसा हो?

डॉ. चंचलमल चोरडिया

शरीर में जल के कार्य

हवा के पश्चात् शरीर में दूसरी सबसे बड़ी आवश्यकता पानी की होती है। पानी के बिना जीवन लम्बे समय तक नहीं चल सकता। शरीर में लगभग दो तिहाई भाग पानी का होता है। शरीर के अलग-अलग भागों में पानी की आवश्यकता अलग-अलग होती है। जब पानी के आवश्यक अनुपात में असंतुलन हो जाता है तो, शारीरिक क्रियाएँ प्रभावित होने लगती हैं।

हमारे शरीर में जल का प्रमुख कार्य भोजन पचाने वाली विभिन्न प्रक्रियाओं में शामिल होना तथा शरीर की संरचना का निर्माण करना होता है। जल शरीर के भीतर विद्यमान गंदगी को आंखों से आंसुओं, नाक से श्लेष्म, मुँह से कफ, त्वचा से पसीने एवं आंतों से मल-मूत्र द्वारा शरीर से बाहर निकालने में सहयोग करता है। शरीर में जल की कमी से कब्ज, थकान, ग्रीष्म ऋतु में लू आदि की संभावना रहती है। जल के कारण ही हमें, पाँच प्रकार के रसों- मीठा, खट्टा, कड़वा, तीखा और कषैला का अलग-अलग स्वाद अनुभव होता है। शरीर का तापक्रम नियन्त्रित होता है। शारीरिक शुद्धि के लिए भी जल आवश्यक होता है। शरीर के निर्माण तथा पोषण में अपनी अति-महत्त्वपूर्ण भूमिका के कारण किसी भी परिस्थिति अथवा रोग में पानी पीना वर्जित नहीं होता है। अत: हमें यह जानना और समझना आवश्यक है कि हम कैसा पानी पीयें और कैसा पानी न पीयें। पानी का उपयोग हम कब और कैसे करें? पानी कितना, कैसा और कब पीयें? पानी का उपयोग कब और कैसे न करें?

जल की विशेषताएँ

पानी अपने सम्पर्क में आने वाले विभिन्न तत्त्वों को सरलता से अपने अन्दर समाहित कर लेता है। चुम्बक, पिरामिड के प्रभाव क्षेत्र में पानी को कुछ समय तक रखने से उसमें चुम्बकीय और पिरामिड ऊर्जा के गुण आ जाते हैं। सोना, चांदी, तांबा, लोहा आदि बर्तनों अथवा धातुओं के सम्पर्क में पानी को कुछ अवधि तक रखने से पानी संबंधित धातु के गुणों वाला बन जाता है। रंगीन बोतलों को पानी से भरकर सूर्य की धूप में रखने से पानी संबंधित रंगों के स्वास्थ्यवर्धक गुणों से परिपूर्ण होने लगता है। इसी प्रकार मंत्रों द्वारा मंत्रित करने से, रत्नों एवं क्रिस्टल के सम्पर्क से पानी उनसे प्रभावित हो जाता है। अत: यथासंभव पीने के

पानी के उपयोग में आने वाले पानी को मिट्टी के बर्तनों में संग्रह करना चाहिए। आजकल शुद्ध पानी के नाम से वितरित बोतल बंद मिनरल पानी प्राय: प्लास्टिक बोतलों अथवा पाउचों में उपयोग में लेने से पूर्व बहुत दिनों तक संगृहीत रहता है। ऐसा पानी प्लास्टिक के हानिकारक रासायनिक तत्त्वों से प्रभावित न हो असंभव ही लगता है। जिसका अन्धानुकरण कर ऐसा पानी पीने वालों को दुष्प्रभावों के प्रति सजगता हेतु सम्यक् चिन्तन करना चाहिए। स्वास्थ्य मंत्रालय से भी जनहित में इस विषय पर सम्यक् स्पष्टीकरण अपेक्षित है।

पीने योग्य पानी कैसा होना चाहिए?

शुद्ध एवं स्वच्छ, हल्का, छाना हुआ, शरीर के तापक्रम के अनुकूल पानी जनसाधारण के पीने हेतु उपयोगी होता है। अत: यदि पानी गंदा हो तो पीने से पूर्व किसी भी विधि द्वारा पानी को शुद्ध करना चाहिए। रोगाणुओं एवं जीवाणुओं से रहित पानी ही पीने योग्य होता है। शुद्ध पानी में भी जलवायु एवं वातावरण के अनुसार निश्चित समय पश्चात् जीवों की उत्पत्ति की पुन: संभावना रहती है। अत: उपयोग लेते समय इस तथ्य की छानबीन कर लेनी चाहिए एवं आशंका होने पर पीने से पूर्व पुन: छानकर ही पीना चाहिए। इसी कारण हमारे यहाँ प्रतिदिन पीने के पानी को छानने का प्रचलन था। परन्तु पश्चिम के अन्धानुकरण एवं भ्रामक विज्ञापनों से प्रभावित होने के कारण आज हम हमारी मौलिक स्वास्थ्यवर्धक जीवनशैली से दूर होते जा रहे हैं। बहुत दिनों से संगृहीत बोतलों और पाउचों में बंद पुराने पानी को प्राय: पीने से पूर्व कोई नहीं छानता अत: ऐसा पानी जीवाणुओं से मुक्त नहीं हो सकता। फलत: अहिंसक साधकों के लिए ऐसा पानी पीने हेतु निषेध है।

स्वास्थ्य हेतु क्षारीय पानी गुणकारी

पानी की दूसरी महत्त्वपूर्ण आवश्यकता उसके अम्ल-क्षार के अनुपात की होती है। जिसको pH के आधार पर मापा जा सकता है। पानी का pH जब 7 होता है तो इसमें अम्ल एवं क्षार तत्त्व बराबर मात्रा में होते हैं। pH यदि 7 से कम होता है तो पानी अम्ल की अधिकता वाला और 7 से अधिक pH वाला पानी क्षार गुणों वाला होता है।

स्नायु एवं मज्जा के पोषण हेतु शरीर में अम्ल तत्त्व की बहुत कम मात्रा की आवश्यकता होती है। रक्त में आवश्यकता से अधिक अम्ल होने से रक्त विषाक्त बन अनेक रोगों का कारण बन जाता है। शरीर में अधिकांश विजातीय तत्त्वों के जमाव एवं रोगों में अम्ल तत्त्व की आवश्यकता से अधिक उपलब्धता भी प्रमुख कारण होती है। हमारे शरीर में गुर्दो का मुख्य कार्य अम्ल की अधिकता को बाहर निकालना एवं शरीर में अम्ल एवं क्षार का संतुलन बनाए रखना होता है।

शरीर में क्षार तत्त्व की कमी के कारण शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता क्षीण होने

लगती है एवं रक्त में सफेद कोशिकाएँ कम होने लगती हैं। हड्डियाँ कमजोर होने लगती हैं। अम्लपित्त (Acidity), गैस, जोड़ों में दर्द एवं कब्जियत जैसे रोगों की संभावना बढ़ने लगती है। जिससे शरीर को सुचारू रूप से संचालित करने वाला सारा तंत्र अनियन्त्रित होने लगता है तथा शरीर रोगों का घर बन जाता है। ऐसी स्थिति में प्रकृति शरीर के अन्य तन्तुओं से क्षार तत्त्व खींचकर अपना पोषण करने लगती है। परिणामस्वरूप शरीर के वे अवयव जिसमें से क्षार तत्त्व शोषित कर लिए जाते हैं, नि:सत्त्व, निर्बल एवं रोगी हो जाते हैं।

डॉ. शेरी रोजर्स (Dr. Sherry Rogers), डॉ. इंगफ्रेइड हॉबर्ड (Dr. Ingfreid Hoberd), टोकियो जापान की पानी संस्था के निदेशक डॉ. हिडेमित्सु हयासी (Dr. Hidemitu Hayashi- Director of the water Institute Tokya-Japan), डॉ. डेविड कारपेन्टर (David Carpenter), डॉ. मुशीक जोन (Dr. Murshik John), डॉ. विलियम केली (Dr. William Kelly), डॉ. नीताबेन गोस्वामी, डॉ. जयेशभाई पटेल, जमशेदपुर के डॉ. जीवराजजी जैन आदि वैज्ञानिकों ने शोध किया है। तदनुसार पीने योग्य पानी पर क्षारीय पानी नियमित पीने से समय के पूर्व वृद्धावस्था के लक्षण प्रकट नहीं होते। हड्डियों का घनत्व बढ़ता है तथा अम्लपित्त, गैस, कब्ज, जोड़ों का दर्द जैसे रोगों की संभावनाएँ अपेक्षाकृत कम रहती है। हमारे आहार में 20 प्रतिशत अम्लीय एवं 80 प्रतिशत क्षारीय पदार्थ होने चाहिए। परन्तु आजकल अधिकांश व्यक्तियों के भोजन में अम्ल तत्त्व बहुत ज्यादा और क्षार तत्त्वों की बहुत कमी होती है। वर्तमान में चटपटा, फास्टफूड, आम्लिक आहार अधिकांश लोगों द्वारा किया जाता है, उससे ऐसे रोगों की संभावनाएँ बहुत अधिक हो गई हैं। शरीर में अम्ल की अतिरिक्त मात्रा को दूर करने के लिए नियमित क्षारीय पानी पीना सबसे सहज, सरल, सस्ता, दुष्प्रभावों से रहित, अहिंसक, स्वावलम्बी एवं प्रभावशाली विकल्प है।

मिनरल पानी का अन्धानुकरण कितना आवश्यक ?

सरकार द्वारा आवश्यक पीने योग्य शुद्ध पानी की उपलब्धता न करवा पाने के कारण चन्द प्रक्रियाओं द्वारा शुद्ध किया हुआ पानी गत चन्द वर्षों से बाजार में महंगे मिनरल पानी के नाम से वितरित हो रहा है। आज देश में ऐसे पानी का अरबों रुपयों का व्यापार हो रहा है और जिसमें प्रतिवर्ष 40 से 50 प्रतिशत की वृद्धि हो रही है।

शरीर की रोग प्रतिकारात्मक क्षमता क्यों क्षीण होती है ?

आज मानव की रोग प्रतिरोधक क्षमता अच्छी न होने के कारण आधुनिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ मिनरल पानी पीने हेतु विशेष प्रेरणा देते हैं। अत: हमें इस तथ्य पर चिन्तन करना होगा कि हमारी रोग निरोधक क्षमता क्यों क्षीण होती है और उससे कैसे स्वयं को सुरक्षित

रखा जा सकता है? बाल्यकाल में लगाये जाने वाले रोग निरोधक इंजेक्शनों, गर्भावस्था एवं उसके बाद में ली जाने वाली आधुनिक दवाइयों से शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता क्षीण होने लगती है। भारत में लगभग दो प्रतिशत जनता ही बोतल बंद पानी का सेवन करती है। यद्यपि इन दो प्रतिशत लोगों की भी रोग प्रतिरोधक क्षमता इतनी कमजोर नहीं होती, परन्तु मिनरल जल के भ्रामक, लुभावने विज्ञापनों के कारण वे अपने स्वास्थ्य से कोई खतरा मोल लेना नहीं चाहते, परन्तु आत्मविश्वास की कमी, स्वयं की क्षमता के प्रति नासमझी के कारण मिनरल पानी का सेवन करते हैं।

बोतल बंद पानी का सेवन करने वाले भी अधिकांश व्यक्ति कुल्ला करने के लिए तो प्राय: नल के पानी का ही उपयोग करते हैं, परन्तु इससे इनको किसी प्रकार का प्राय:संक्रमण नहीं होता, जबकि घूंट भर दूषित पानी में ही इतने विषाणु होते हैं कि वे हमें अपनी चपेट में ले सकते हैं।

सरकार की असजगता का दुष्परिणाम

सरकार की उपेक्षावृत्ति के कारण मन चाहे दामों पर शुद्ध पानी के नाम से भोली-भाली जनता का शोषण किया जा रहा है। प्रतिदिन शादियों एवं सामूहिक आयोजनों में ऐसे महंगे पानी का जो अपव्यय होता है, उससे गरीब व्यक्ति को न चाहते हुए भी अन्धानुकरण एवं प्रतिष्ठा के नाम पर हजारों रुपयों का अनावश्यक खर्च पानी के लिए करने हेतु विवश होना पड़ रहा है, जिस पर सम्यक् चिन्तन आवश्यक है, ताकि कम से कम राष्ट्र की भोली-भाली जनता को तो सामूहिक आयोजनों में पानी के नाम पर होने वाले अपव्यय से राहत मिल सके।

क्या मिनरल पानी न पीने वाले सभी व्यक्ति वायरस से प्रभावित होते हैं? चन्द वर्षो पूर्व जब मिनरल जल का प्रचलन नहीं था, तो क्या जनसाधारण वायरस से ग्रस्त था? वास्तव में मिनरल जल का उपयोग आज पैसों की बर्बादी एवं सम्यक् चिन्तन के अभाव का प्रतीक है।

आज व्यावसायिक स्थलों एवं सामूहिक आयोजनों में जिन जारों में पानी वितरित किया जाता है, उनकी स्वच्छता भी पूर्णतया उपेक्षित होती है। अत: ऐसा पानी कैसे स्वास्थ्यवर्धक हो सकता है? मिनरल पानी के बढ़ते व्यवसाय से पानी पीने के पश्चात् जिन खाली प्लास्टिक बोतलों एवं पाउचों को फैंक दिया जाता है उससे पर्यावरण प्रदूषण की समस्या विकराल रूप ले रही है फिर भी सरकार का ध्यान उस ओर क्यों नहीं जा रहा है, यह चिन्तन एवं चिंता का विषय है।

स्वास्थ्यवर्धक शुद्ध पानी के अन्य विकल्प

शुद्ध पानी पीने के लिए आज Aqua Guard एवं R.O. जैसे विकल्पों का प्रचलन बढ़ रहा है। जैसा कि पूर्व में कहा गया है कि पानी को चुम्बक, पिरामिड, रत्नों, धातुओं के

सम्पर्क एवं धूप की किरणों में रंगीन बोतलों में रखकर स्वास्थ्यवर्धक तथा दवा के रूप में तैयार किया जा सकता है। आयुर्वेद में रोगोपचार हेतु विविध प्रकार की भस्मों का उपयोग होता आ रहा है। स्वच्छ पानी में गाय के गोबर की राख सही अनुपात में मिला दी जाए तो शुद्ध शक्तिवर्धक रोगनाशक पीने योग्य पानी घर-घर में सहजता से उपलब्ध हो सकता है। राख मिश्रित पानी पीने से रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। संक्रामक रोगों से बचाव होता है। पानी बैक्टीरिया रहित बन जाता है। आवेश नियन्त्रित होते हैं। शरीर में रक्त कणों की संख्या में वृद्धि होती है। मधुमेह, यकृत, गुर्दे एवं अन्य रोगों में जल्दी राहत मिलती है।

क्षारीय पानी हेतु गाय के गोबर की राख मिश्रित पानी अच्छा विकल्प

गाय का गोबर रोगाणु एवं विषाणु नाशक होता है। गोबर के रस का सेवन करने से रक्त की शुद्धि होती है एवं त्वचा सम्बन्धी रोगों में शीघ्र लाभ होता है। गाय के ताजे गोबर की गंध से मलेरिया एवं तपेदिक के रोगाणु नहीं पनपते। इटली के प्रसिद्ध वैज्ञानिक प्रो. जी.ई.ब्रिगेड के अनुसार मलेरिया एवं तपेदिक के रोगाणु प्रारम्भिक अवस्था में तो गोबर की गंध से ही भाग जाते हैं। हैजा और अतिसार का रोग होने पर जिस पानी में हैजे के रोगाणु हो जाते हैं, उस पानी में गोबर डालने से उनका आतंक समाप्त हो जाता है। अत: बहुत से चिकित्सक तपेदिक के रोगियों को गायों के बाड़ों में विश्राम करने का परामर्श देते हैं, क्योंकि गोबर एवं गोमूत्र की गंध में ऐसे वायरस नहीं रह सकते।

गाय के गोबर को जलाने से उत्पन्न राख में गोबर के गुणों के अलावा अन्य गुण भी होते हैं। राख की रोग प्रतिरोधक क्षमता अच्छी होती है। अत: चोट लगने एवं रक्त आने की स्थिति में वहाँ पर राख लगाने से दर्द में आराम होने लगता है एवं घाव शीघ्र ठीक हो जाता है। नागा बाबा आज भी अपने शरीर पर राख लगाते हैं, जिससे मच्छर एवं अन्य वायरस से उनकी सुरक्षा होती है। जैन साधु अपने बालों का लोंच करते समय राख का उपयोग करते हैं, जिससे बाल खींचते समय घाव न हो।

अनाज में राख मिलाकर रखने से उसे दीर्घकाल तक संगृहीत एवं सुरक्षित रखा जा सकता है। घर में चींटियाँ, मकोड़ों या अन्य जीवों का उपद्रव होने पर, उस स्थान पर राख डालने से वे वहाँ से तुरन्त दूर होने लगते हैं। चर्म रोग, दाद, खुजली, फोड़े-फुन्सियों आदि पर राख लगाने से तुरन्त आराम होने लगता है। घुटनों एवं अन्य जोड़ों के दर्द तथा अस्थमा में फैंफड़ों पर राख का मसाज करने से तुरन्त राहत मिलने लगती है। मधुमक्खी अथवा जहरीले जीव के काटने पर वहाँ राख लगाने से विष का प्रभाव क्षीण होने लगता है एवं दर्द ठीक हो जाता है। राख के दंतमंजन की गणना सर्वश्रेष्ठ दंतमंजन में होती है। पानी में राख मिलाने से उसमें क्षारीय गुण आ जाते हैं तथा पानी में 8-10 घण्टों तक पुन: जीवोत्पत्ति की

संभावना नहीं रहती।

पानी के विविध नमूने के आभा मण्डल से लिए गए चित्रों द्वारा इस बात की पुष्टि हुई है कि ऐसे पानी में स्वास्थ्यवर्धक गुण एवं ऊर्जा अन्य सभी प्रकार के उपलब्ध प्रचलित पानी से अधिक होती है। रासायनिक प्रयोगशालाओं में परीक्षणों से गोबर राख मिश्रित पानी का pH प्राय: 8 से अधिक पाया गया है। ऐसा पानी पीने से विचारों में भी अपेक्षाकृत अधिक सात्त्विकता रहती है।

गाय के गोबर की राख मिश्रित क्षारीय पानी कैसे तैयार करें?

उपयोग में आने योग्य पानी को आवश्यकतानुसार छानकर उसमें गाय के गोबर को जलाने से बनी राख से बर्तन मांजकर उसे पानी में इस तरह हिलाएं ताकि पानी में राख का प्रभाव आ जाए, उसके स्वाद में कुछ परिवर्तन आ जाए। इस पानी को निथार कर उपयोग हेतु अन्य बर्तन में संगृहीत कर लें। यह पानी स्वास्थ्य के लिए उपयोगी, शक्तिवर्धक एवं रोगनाशक बन जाता है। ऐसा पानी सहजता से कहीं भी तैयार किया जा सकता है। ऐसे पानी में चंद घण्टों तक पुन: जीवोत्पत्ति भी नहीं होती। अनादिकाल से जैन व्रतधारी साधकों में ऐसे धोवन पानी के नाम से विख्यात पानी पीने का प्रचलन है।

ऐसा क्षारीय जल आवश्यकतानुसार गरीब भी अपने घरों में तैयार कर सकते हैं। अत: राख मिश्रित पानी पीने से सहज ही पानी से होने वाले रोगों से राहत मिल सकती है। आवश्यकता है दृढ़ मनोबल एवं भ्रामक विज्ञापनों से भ्रमित हो अन्धानुकरण न कर तथ्यानुसार पानी के उपयोग करने की।

स्वास्थ्य मंत्रालय एवं चिकित्सा से जुड़े चिकित्सकों से सविनय अनुरोध है कि वे जनता का सही मार्गदर्शन कर, गरीब जनता को पानी के कारण होने वाले रोगों से सुरक्षा हेतु गोबर की राख से मिश्रित पानी के लाभ से परिचित करावें तथा उसका सम्यक् उपयोग करने हेतु जनता को प्रेरित करें। सामूहिक आयोजनों में मिनरल पानी के स्थान पर ऐसे पानी के प्रयोग को प्रोत्साहित किया जाए।

-चोरडिया भवन, जालोरी गेट के बाहर, जोधपुर-342003 (राज.)
E-mail: cmchordia.jodhpur@gmail.com, Website: www.chordiahealthzone.in

स्वास्थ्य-आलेख प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता

जिनवाणी के इस अंक में प्रकाशित 'स्वास्थ्य-विज्ञान' स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित उपर्युक्त आलेख पर कुछ प्रश्न दिए जा रहे हैं, आप इनका उत्तर **15 सितम्बर 2016** तक डॉ. चंचलमल जी चोरडिया के उपर्युक्त पते पर अपने फोन नं., ई-मेल एवं डाक पते सहित सीधे प्रेषित करें। विलम्ब से प्राप्त उत्तरों को प्रतियोगिता में सम्मिलित नहीं किया जाएगा। इस प्रतियोगिता में किसी भी वय का व्यक्ति भाग ले सकता है। सर्वाधिक अंक प्राप्तकर्ताओं को प्रथम, द्वितीय एवं

तृतीय पुरस्कार के अन्तर्गत 1000/-, 750/- एवं 500/- की राशि प्रेषित की जाएगी।

प्रश्न:-

1. अनछना पानी क्यों नहीं पीना चाहिए?
2. शरीर में जल की आवश्यकता क्यों होती है?
3. क्या प्लास्टिक की बोतलों में संगृहीत पानी स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकता है और क्यों?
4. पीने योग्य शक्तिवर्धक पानी कैसे तैयार किया जा सकता है?
5. क्या सामूहिक आयोजनों में महँगें मिनरल पानी का प्रचलन आवश्यक है?
6. क्या शुद्ध एवं शक्तिवर्धक सस्ता पानी उपलब्ध करवाने हेतु सरकार सजग है?
7. क्या आप स्वास्थ्य रक्षक शक्तिवर्धक पानी का उपयोग करते हैं?

अहं से दूरी

श्रीमती कमला सुराणा

प्रभु तेरे चरणों की धूल हूँ
अहं से कोसों दूर रहूँ
क्यों मन इतना स्वच्छन्द होता है,
विकृत भावों में ढुलमिल होता है।
प्रभु ऐसी शक्ति प्रदान करो,
सद्भावों में सराबोर रहूँ,
यहाँ का यहाँ रह जाएगा
तो फिर क्यों इतना इतराना?
वस्तु, धन, धरा का अभिमान,
गर्त में गया उसका स्वाभिमान,
आत्म-पुरुषार्थ से चढ़ा दशवें गुणस्थान
अहं से गिरा प्रथम गुणस्थान में
चला न रावण का मान,
हाथ से गया लंका धाम
मद किया मरीचि भव में,
महावीर बंध गए अनेक भव में
बाहुबलि का टूटा मान
मिल गया केवलज्ञान।

-ई-123, नेहरुपार्क, जोधपुर-342003 (राज.)

बाल-स्तम्भ

संस्कार शाला

श्री राकेश कोचर

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित इस रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 20 वर्ष की आयु तक के पाठक 15 सितम्बर 2016 तक जिनवाणी संपादकीय कार्यालय, सामायिक-स्वाध्याय भवन, कुम्हार छात्रावास के सामने, प्लॉट नं. 2, नेहरु पार्क, जोधपुर-342003(राज.) के पते पर प्रेषित करें। उत्तर के साथ अपनी आयु तथा पूर्ण पते का भी उल्लेख करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल,जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

व्यावहारिक शिक्षा की जरूरत से चलिये हम नहीं करते जरा इंकार।
पर कहिये जिनवाणी की शिक्षा बिना संस्कारों का क्या आधार?
स्कूल और कॉलेज की डिग्री काम न आए।
धर्म संस्कारों के बिना जीव भव-भव में गोता खाए।।
भेजिये बच्चों को जैनशाला में, खोल दीजिये उनके भाग्य के गेट।
कर्मों का जब होता हमला तो धरे रह जाते मेडल, डिग्री, सर्टिफिकेट।।
नहीं समय है बच्चों को, ये तर्क हमको नहीं जँचता।
बंद करें वे टी.वी. देखना, फिर देखो कितना समय बचता।।
देर रात तक पढ़ते बच्चे, सुबह भी वे जल्दी जागे।
पर उनकी असली शिक्षा तब ही होगी, जब वे जैन धर्म में बढ़ेंगे आगे।।
कोई कीमत नहीं उस मानव की, जिसने संसार का मिथ्या ज्ञान सीखा।
जिसने जिनवाणी को समझ लिया, बस उसको ही समझो पढ़ा लिखा।।
खूब अंग्रेजी का जादू चला, आप बच्चों को भेजते अंग्रेजी स्कूल।
पर जैनशाला उन्हें नहीं भेजकर क्या आप नहीं करते भारी भूल?
जैनशाला में ज्ञान सीखने का चांस बढ़िया, उन्हें कब मिलेगा मौका ऐसा।
यहाँ न तो लगती कोई स्कूल फीस, ना डोनेशन का कोई मांगे पैसा।।
अति भाग्यवान समझो उनको, जिनको मिलती जिनवाणी शिक्षा।
हर संभव प्रोत्साहन बच्चों को यहाँ, समय-समय पर होती परीक्षा।।

बच्चों, तुम्हें डॉक्टर, इंजीनियर बनना है', ये तो कहती दुनिया सारी।
पर धन्य हैं बस वे अभिभावक जो कहते 'बच्चों, तुम्हें बनना है संस्कारी।।'
कोई जैनी बनता डॉक्टर, कोई जैनी जाने कानून कायदा।
पर जिनवाणी की शिक्षा बिना जैनी कहलाने का क्या फायदा।।
धर्म ही हमारा सच्चा साथी, धर्म ही है हमारा असली नाथ।
अंधेरा जब छा जाता है, तब परछाई का भी नहीं मिलता साथ।।
पाठशाला में है समर्पित शिक्षक, वे हर्षित मन से देते ज्ञान।
उनका हर संभव यह प्रयास रहता, जैनी बच्चे बनें संस्कारवान।।
जैन धर्म की शिक्षा पाना हर जैनी का है पहला राइट।
भव-भव का जो अंधकार मिटाये, ये तो है वो दिव्य लाइट।।
ये संसार तो है दुःखों का सागर, यहाँ दुःखों के तूफान हैं।
वे ही बचते इस तूफान में, जिनको जिनवाणी का ज्ञान है।।
जैन कुल के बच्चों को मिलता मौका, वे पुण्य कर लें संचित।
धर्म शिक्षा का उन्हें महत्त्व बताइये, इससे मत कीजिये उनको वंचित।।
जैन धर्म को समझे बिना बच्चे क्या समझेंगे पुण्य और पाप।
उनको जैनशाला में भेजकर अपना परम कर्त्तव्य निभायें आप।।
भले स्कूल, कॉलेज में वे आये मेरिट या प्राप्त करें वे फर्स्ट क्लास।
हर संसारी उपलब्धि शून्य समझना, मानव जिनवाणी से ही होता पास।।
ये कहना भी है जरूरी, हर स्कूल और कॉलेज से श्रेष्ठ है पाठशाला।
धर्म को नहीं समझे मानव तो बस बुनता रहता कर्मों का जाला।।
जैनशाला की सफलता के लिये किये जाते हैं सघन प्रयास।
बच्चों को आदर्श जीवनकला सीखने का यहाँ मिलता मौका खास।।
बच्चे मोबाइल और कम्प्यूटर के गेम जानते और चला लेते इण्टरनेट।
पर धर्म संस्कारों को जगाये बिना, खुल नहीं सकते भाग्य के गेट।।
बिन धर्म के मानव रहता निरकुंश, जैसे पिंजरे के बाहर शेर हो।
बच्चों को जैनशाला भेजने के निर्णय में अब जरा भी नहीं देर हो।।
आप कॉन्वेन्ट स्कूल में भेजते बच्चों को जो बहुत नामी है।
जिनशासन की स्कूल के संचालक तो तीन लोक के स्वामी हैं।।
आप संसारी शिक्षा को श्रेष्ठ बताकर भूल भारी करते हैं।
सिर्फ संसार की जो शिक्षा पाते, वो किसी पाप से नहीं डरते हैं।।
देह तो नष्ट हो जाती है, बस धर्म जाता साथ में।
निवेदन हमने कर दिया, अब निर्णय आपके हाथ में।।

-प्लॉट नं. बी-29, हिवरी नगर, नागपुर-440008 (महा)-09372440147

प्रश्न–

1. बच्चों के भाग्य के गेट कैसे खुलेंगे?
2. बच्चों को जैन शाला में जाने का समय क्यों नहीं मिलता?
3. कौनसे अभिभावक धन्य है?
4. जैन पाठशाला की पाँच विशेषताएँ प्रस्तुत कविता एवं चिन्तन के आधार पर लिखें।
5. जीवनकला किसे कहते हैं?
6. मिलान कीजिए:-

1. बिना धर्म के मानव	साथी
2. धर्म ही हमारा सच्चा	भारी भूल
3. पाठशाला में है	मौका
4. जैनशाला नहीं भेजना	परम कर्त्तव्य
5. जीवनकला सीखने का मिलता	समर्पित शिक्षक
6. जैनशाला में भेजना	निरंकुश

पर्युषण

आज अपने दिलों को टटोलेंगे हम

श्री मोहन कोठारी 'विनर'

आज अपने दिलों को टटोलेंगे हम, मैल मन में जो है, उसको धो लेंगे हम।
कर के कंचन सा अंतर, यह अपना प्रिय, स्नेह के नीर से, इसको भर लेंगे हम।।
आज अपने दिलों को.....।।1।।

ज़िन्दगी का तो कुछ भी भरोसा नहीं, आज है कल वो शायद रहे न रहे।
फिर क्यूं नफरत को मन में यूं पालें भला, प्यार का ही सलीका, यह सबसे रहे।
बोल बोलें तो मीठे ही बोला करें, कटुता जीवन में लाना तो अच्छा नहीं।
आज इंसा के मन को, तसल्ली कहाँ, ज़हर नफरत का धोलें, यह अच्छा नहीं।
आओ मिलकर चलें, प्यार से यूं कहें, अपने जीवन को खुशियों से भर लेंगे हम।
आज अपने दिलों को.....।।2।।

पर्व की प्रेरणा तो है, यूं कह रही, अपनी भूलों का हम सब, क्षमादान लें।
प्यार हर दम, दिलों में उमड़ता रहे, आओ मन को यूं अपने, नया ज्ञान दें।
माफी भूलों की मांगू, मैं कर जोड़कर, अपने दिल से मुझे माफ कर दीजिये।
भाईचारा बढ़े, प्यार हरदम रहे, ऐसा संकल्प मन में तो ले लीजिये।
आओ चिंतन करें, ज्ञान मन में धरें, अपने भावों को निर्मल, बना लेंगे हम।
आज अपने दिलों को.....।।3।।

-जनता साड़ी सेण्टर, स्टेशन रोड़, दुर्ग-491001 (छत्तीसगढ़)

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. श्वेता जैन

सामायिक दर्शन- तत्त्वावधानः-आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. ***संकलन एवं सम्पादक***- डॉ. धर्मचन्द जैन-जोधपुर, सौभाग्यमल जैन-अलीगढ़-रामपुरा, त्रिलोकचन्द जैन-जयपुर, ***प्रकाशक***- सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.) फोनः 0141-2575997, फैक्स नं. 0141-4068798, Email-sgpmandal@yahoo.in, ***पृष्ठ***-243+16, ***मूल्य***-75 रुपये, सन् 2016

समय अर्थात् आत्मा से सम्बन्ध स्थापित करने वाली दृष्टि की प्रदात्री यह पुस्तक सामायिक करने वाले साधकों के लिए उपयोगी है। समभाव की साधना क्यों एवं किस प्रकार निर्दोष रूप से लाभकारी बने, यह दृष्टि इस पुस्तक से प्राप्त होती है। पुस्तक में सामायिक को विभिन्न कोणों से परिभाषित किया गया है-

1. जीवन के जिस किसी भी क्षण में समभाव एवं समत्वभाव रहता है, वह सामायिक है।
2. समता एवं समत्व योग की साधना को ही सामायिक कहा जाता है।
3. क्रोध, छल-कपट, अभिमान, लोभ जैसी विषमताओं को दूर करना सामायिक है।
4. कर्म के निमित्त से होने वाले राग-द्वेषादि काषायिक भावों से अपने को हटाकर आत्मस्वरूप में रमण करना सामायिक है।
5. सर्वत्र मन को राग-द्वेष एवं आसक्ति रहित रखकर उचित प्रवृत्ति करना ही समभाव की प्राप्ति रूप सामायिक है।

इसमें छह अध्याय हैं- 1. सामायिक : एक अनुशीलन, 2. सामायिक की व्यापकता, 3. सामायिक पाठ विधि सहित, 4. सामायिक : जिज्ञासा-समाधान, 5. सामायिक-स्तवन, 6. सामायिक सार, 7. सामायिक सूक्तियाँ। प्रथम अध्याय में सामायिक का लक्ष्य, भूमिका, स्वरूप, महत्त्व, भेद, विधि-विधान, प्रासंगिकता, अतिचार और दूसरे अध्याय में सामायिक का जीवन के विभिन्न क्षेत्रों पर प्रभाव, ज्ञान, भक्ति व कर्मयोग की साधना, विविध साधनाओं की भूमि, सामायिक और जीवन मूल्य, सामायिक और स्वाध्याय, सामायिक : एक विचित्र साधना विषय विवेचित हैं। सामायिक के पाठ अर्थ, विवेचन और प्रश्नोत्तर सहित दिए गए हैं। सामायिक के सम्बन्ध में 39 व्यावहारिक प्रश्नों के उत्तर भी इस पुस्तक में उपलब्ध हैं। पाँच स्तवन और सामायिक की उपमा,

सामायिक में क्या नहीं करना, क्या करना जैसे विषयों पर बिन्दुवार विवेचन है। आचार्य हस्ती के प्रेरक वचन और आचार्य हीरा के प्रेरक कथ्य सूक्तिबद्ध किए गए हैं। भूमिका में सामायिक से होने वाले लाभ को रेखांकित करते हुए कहा गया है-

1. सामायिक की साधना व्यक्तित्व परिवर्तन की बहुत बड़ी साधना है।
2. नियमित सामायिक व्यक्ति की चेतना में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करती है, जिससे नकारात्मक विकार विनष्ट होते नज़र आते हैं।
3. बुरी आदतों को बदलने में सामायिक एक ठोस साधन हो सकती है।
4. आज व्यक्ति अपने को न बदलकर परिस्थितियों को बदलना चाहता है, जबकि सामायिक व्यक्ति को रूपान्तरित करने की प्रक्रिया है।

सामायिक को सर्वाङ्गोपाङ्ग समझने के लिए यह पुस्तक उपयोगी है।

कुवलयमालाकहा (भाग 1-2) - ***लेखक***- उद्द्योतनसूरि, ***सम्पादक एवं अनुवादक***- प्रो. प्रेमसुमन जैन, ***प्रकाशक***- (1) प्राकृत भारती अकादमी, 13 ए, गुरुनानक पथ, मेन मालवीय नगर, जयपुर-302017 (राज.) फोनः 0141-2524827, 2520230, (2) श्री जैन श्वेताम्बर नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ, मेवानगर-344025, बालोतरा, जिला-बाड़मेर (राज.), ***पृष्ठ***-1136+64, ***मूल्य***- 2000 रुपये, सन् 2015

जालोर में रचा गया उद्द्योतनसूरि कृत यह ग्रन्थ संकीर्ण कथा के रूप में प्रसिद्ध है, किन्तु गद्य-पद्य मिश्रित होने से कुछ विद्वान् इसे चम्पूकाव्य की श्रेणी में रखते हैं। महाराष्ट्री प्राकृत में लिखी गई इस कृति में अपभ्रंश, पैशाची, देशी एवं द्रविड़ भाषाओं के शब्दों के भी प्रयोग मिलते हैं। इसमें कुवलयचन्द्र की कथा पूर्वजन्म की घटनाओं के साथ प्रस्तुत है। देश-विदेश के अनेक विद्वानों द्वारा अपने शोध का विषय बनाए जाने से इस ग्रन्थ की लोकप्रियता का पता चलता है। लेखक कथाओं के माध्यम से पाठकों को यह संदेश देना चाहते हैं कि छोटे से छोटा व्यक्ति भी अपनी असद्वृत्तियों के परिशोधन में प्रवृत्त हो जाय तो एक न एक दिन वह अवश्य सद्वृत्तियों का स्वामी बनकर रहेगा, भले इसके लिए उसे जन्म-जन्मान्तरों की यात्रा तय करनी पड़े। इसमें क्रोध, मान, माया, लोभ और मोह का परिणाम दिखाने के लिए अनेक सरस कथाओं का संग्रह किया गया है। इस कथा में कई प्रकार के व्याख्यान, घटनाएँ, सामाजिक एवं वैयक्तिक चित्रण चित्रित हुए हैं।

अनुवादकर्ता प्रोफेसर जैन ने लम्बे समय से चल रही कुवलयमाला के अनुवाद की न्यूनता को दूर कर प्राकृत जगत् में अनूठा कार्य किया है। उन्होंने कथा को तीस परिच्छेदों में विभक्त कर उनको शीर्षक प्रदान किए हैं। प्रथम भाग में सोलह तथा द्वितीय भाग में चौदह परिच्छेद हैं। ये सभी परिच्छेद पुनः अनुच्छेदों में विभाजित हैं।

अनुवाद स्पष्ट और बुद्धिगम्य है। प्रो. जैन ने अपनी 40 पृष्ठ की प्रस्तावना में विभिन्न शीर्षकों में कुवलयमाला कथा ग्रन्थ की सुन्दर रूपरेखा रखी है- 1. रचनाकार उद्योद्तन सूरि, 2. ग्रन्थ रचना का समय एवं रचना स्थल, 3. कथा के भेद-प्रभेद, 4. रस अलंकार एवं छन्द योजना, 5. संक्षिप्त कथावस्तु, 6. कथाओं में लोकतत्त्वों का समावेश, 7. सांस्कृतिक पृष्ठ भूमि, 8. विशिष्ट योगदान : रूपाकात्मक शैली, 9. प्राचीन भारत का दिग्दर्शन, 10. भौगोलिक विवरण, 11. वर्ण-व्यवस्था, 12. परोपकारी संस्थाएँ, 13. वस्त्रों के प्रकार, 14. रोग और उनकी परिचर्या, 15. वाणिज्य एवं व्यापार, 16. समुद्रयात्रा, 17. धार्मिक रूपक, 18. प्रसिद्ध जलमार्गों का विवरण, 19. प्राचीन भारतीय स्थल, 20. धातुवाद प्रयोग, 21. शिक्षा, भाषाएँ और बोलियाँ, 22. शिक्षा का प्रारम्भ, 23. ज्योतिष विद्या, 24. भाषागत समृद्धि, 25. नाट्यकला से सम्बन्धित विशिष्ट शब्द, 26. विविध चित्रकला, 27. धार्मिक जगत् एवं विभिन्न विचारक, 28. अनेकान्तवाद, 29. जैनधर्म एवं दर्शन के विभिन्न प्रसंग, 30. कुवलयमाला पर विशेष कार्य। परिशिष्ट में गाथा सूची अकारादिक्रम से दी गई है तथा अपभ्रंश, पैशाची आदि विशिष्ट शब्द सम्पत्ति भी दी गई है।

यह ग्रन्थ शोधार्थियों, कथा में रुचिशील, प्राकृत व हिन्दी अध्येताओं एवं स्वाध्यायियों के लिए उपयोगी है। क्रोध, मान, माया, लोभादि से जीवन में क्या दुष्परिणाम भुगतने पड़ते हैं, ऐसी कथाओं को सुनाने से बच्चों पर सकारात्मक प्रभाव होता है, अतः धार्मिक विद्यालयों में भी इसकी उपयोगिता है।

सभारंजनशतकम्- नीलकण्ठ दीक्षित, ***अनुवादक एवं व्याख्याकार***- डॉ. श्रीमती चन्दनबाला मारू, ***प्रकाशक***- (1)राजस्थानी ग्रन्थाकार, प्रथम माला, गणेश मंदिर के पास, सोजती गेट, जोधपुर (राज.), फोनः 0291-2657531, 2623933, ***पृष्ठ***-80, ***मूल्य***- 150 रुपये, सन् 2015

सभा (जन) का अनुरंजन करने में समर्थ यह ग्रन्थ मुक्तक काव्यविधा में रचित है। इस शतक काव्य में नैतिकता, मृदुभाषण, दान, अर्थ एवं अर्थ-त्याग, परोपकार, क्षमा, दाम्पत्य जीवन जैसे नैतिक, आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक गुणों का काव्यात्मक चित्रण किया गया है। डॉ. मारू ने ग्रंथ का अनुवाद कर हिन्दी पाठकों के लिए इसे प्राप्य बना दिया है। उन्होंने प्रसंग, अनुवाद, अलंकार, लक्षण, छन्द आदि के द्वारा प्रत्येक श्लोक का पूर्ण विश्लेषण किया है। पुस्तक के पूर्वार्द्ध में कवि नीलकण्ठ दीक्षित का परिचय, सभारंजन शतकः साहित्यिक दृष्टि से, सभारंजन शतक में वर्णित विषयों का समालोचनात्मक निरूपण- शीर्षकों में विस्तृत विवेचना की है। परिशिष्ट में अकारादिक्रम से श्लोकानुक्रमलिका भी दी है। संस्कृत शोधार्थियों के लिए यह पुस्तक उपादेय है।

प्रतियोगिता

जिनवाणी के अंकों पर आयोजित प्रतियोगिता का परिणाम

जिनवाणी मार्च-2014 से फरवरी-2015 के अंकों पर आयोजित प्रतियोगिता में 167 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रतिभागियों के उत्साह को देखते हुए पुरस्कार इस प्रकार घोषित किए जा रहे हैं-

प्रथम पुरस्कार (1100/-)- सुरेशचन्द जी जैन-अलवर (राज.) (72)

द्वितीय पुरस्कार (700/-)- सुशीलाजी कोचर-नासिक (महा.) (72)

तृतीय पुरस्कार (500/-)- सरला जी कांकरिया-जलगाँव (महा.) (71.5)

ग्यारह सांत्वना पुरस्कार (200/- प्रत्येक) दीपांशु जी जैन-जयपुर (राज.) (71.5), नरपतराज जी लोढ़ा-जोधपुर (राज.) (71.5), किरण जी कुम्भट-जोधपुर (राज.) (71.5), उषा सुरेशजी टाटिया-शिंदखेड़ा (महा.) (71.5), ताराचन्दजी आहूजा-जयपुर (राज.) (71.5), राजुल रमेश जी कोठारी-धुलिया (71.5), अशोक कुमार जी लुंकड़-बरसाड़ (71.5), प्रेमलता जी धारीवाल-जोधपुर (71.5), अरुणा टीकमचन्दजी जैन-अलीगढ़ (71.5), निर्मला जी सुराणा-बीकानेर (71.5), सरोज पारसमलजी रूणवाल-धुलिया (71.5)।

71.5 अंक प्राप्त करने वाले अन्य प्रतिभागी-चिराग जी जैन-गंगापुर सिटी, धनवंती अनिल जी-नासिक (71.25)। **71.25 अंक प्राप्त करने वाले प्रतिभागी-**कमला देवी सेठिया-मसूदा, बबीता जी जैन-भरतपुर, शोभा आर जैन-जलगाँव, सरोज खाबिया-मैसूर, संगीता रांका-फरीदाबाद। **71 अंक प्राप्त करने वाले प्रतिभागी-**सुनीता जैन-भरतपुर, आर.टी. जैन-भुसावड़, राजेन्द्र तेजमल जैन-भुसावड़, दीपिका वैद-धन्नारी कला, भूमिका जैन- मुम्बई, पदमचंद गाँधी- जोधपुर, कविता गादिया-चेन्नई, कलावती चोरड़िया-जलगाँव, पवन- भरतपुर, हेमचंद जैन-बारां, विमला बाई खिवसरा-धुलिया, आर. टी. जैन- भुसावल, अरुण सुराणा-जयपुर, लता सतीशजी आँचलिया-धुलिया, प्रमिला पोखरणा-धुलिया, विजयचंद वैद्य-जोधपुर। **70.5 अंक प्राप्त करने वाले प्रतिभागी-** शिल्पा सुराणा-जलगाँव, दीपक कुमार जैन-अलीगढ़, हेमलता छाजेड़-नंदूरबार, ज्योति जैन-इन्दौर, कंचन देवी कोठारी-मेड़ता, मधुबाला ओस्तवाल-नासिक, ज्योति जैन-बारां, अनुराग सुराणा-अजमेर, प्रेमलता जैन-भरतपुर, विभा जैन-जोधपुर, सुशीला जैन-इन्दौर, ममता जैन-सवाईमाधोपुर, शैलजा-जयपुर, नितिन जैन-सवाईमाधोपुर, सीमा जैन-कोटा, बेबी जैन-भरतपुर, सुशीला इ. राका-जलगाँव, नम्रता कांकरिया-धुलिया, रानू सुराणा- उदयपुर, राजेश जैन-भरतपुर, कांचन लोढ़ा- नासिक, विद्या संघवी-बदनावर, जिया जैन-अजमेर, पूनम किरण अलिझाड-नया नाशिक, नीर पवनकुमार जैन-भरतपुर। **70 अंक प्राप्त करने वाले प्रतिभागी-**कपिल कोठारी-

जयपुर, वैशाली रास जैन-मूँदी, जितेन्द्र जैन-सवाई माधोपुर, स्नेहल धाडीवाल-नासिक, एकता जैन-भरतपुर, 60. पारस जैन-बल्लारी, कोमल कोठारी-गुड़गाँव, संगीता खाबिया-मैसूर, हीरा कर्नावट-अहमदनगर, स्नेह जैन-गंगापुर सिटी, सुरेखा बाफना-पुणे, प्रकाश गादिया-चालीस गाँव, नेणचंद बाफना-जोधपुर, हेमा जैन-जयपुर, मीनाक्षी जैन-अजमेर, कंवलराज मेहता-जोधपुर, विजय कोठारी-अजमेर, पूजा हींगड़-जयपुर, कविता भंडारी-अहमदाबाद, अर्चना धाड़िवाल-धुलिया, सरोज तातेड़-मेड़ता सिटी, डी.सी. जैन-जयपुर, जयमाला जैन-सवाईमाधोपुर। **69.5 अंक प्राप्त करने वाले प्रतिभागी-** सुनीता ओसवाल-जयपुर, विमला जैन-अजमेर, मीनू जैन-जयपुर, मयंक जैन-सवाई माधोपुर, सुवर्णा श्रेणिक जैन-नासिक, दिव्या ओसवाल-जयपुर, सुनीता सुराणा-चित्तौड़, संगीता जैन-भुसावल, रमेशचंद जी जैन-भुसावल, माया जैन-चित्तौड़गढ़, विभा जैन-कोटा, मनोरमा सिंघवी-ब्यावर, रेखा जैन-जयपुर, संजय देशलहरा-इन्दौर, रेखा सुराणा-नागौर, शिल्पा सुराणा-अजमेर, 94. अनिल कुमार जैन-कोटा, सपना जैन-गंगापुर, ज्ञानचंद कोठारी-अजमेर, रूपराज-अजमेर। **69 अंक प्राप्त करने वाले प्रतिभागी**-योगेन्द्र कुमार जैन-सवाईमाधोपुर, भंवरसिंह जैन-प्रताप नगर, सुरेश जैन-चैन्नई, फूलकुँवर भंडारी-रायपुरिया, संगीताजी-जलगाँव, शांता सुराणा-जयपुर, महावीर कोठारी- चित्तौड़गढ़, अंजु जैन-सवाईमाधोपुर, राजेन्द्र प्रसाद जैन-जयपुर, सम्पतराज आचलिया-अजमेर, सुगनचंद छाजेड़-जोधपुर, विमला एन मेहता-जोधपुर। **68.5 अंक प्राप्त करने वाले प्रतिभागी**-प्रमिला कोठारी-मेड़ता सिटी, सुशीला कांतिलाल जी-पूना, विवेक जैन-गंगापुर सिटी, बुलबुल जैन-अलवर, अंजना जैन- जयपुर, नरेन्द्र बम्ब गोपीचंद- मुम्बई, मंजु जैन-जयपुर, तनुजा कोठारी-धुलिया, चंचल गोलेच्छा-जयपुर। **68 अंक प्राप्त करने वाले प्रतिभागी**-ज्योत्स्ना लोढ़ा-अजमेर, शैली मेहता-जोधपुर, अंजु जैन-जयपुर, भगतसिंह जैन-जयपुर, महेन्द्र कुमार जैन-अलवर, सविता खेराड़ा-अजमेर, मंजुषा बोथरा-जलगाँव, जौहरीमल चाम्बड़-जोधपुर, मालती जैन-खेडलीगंज। **67.5 अंक प्राप्त करने वाले प्रतिभागी**-प्रदीप कुमार जैन-जयपुर, सुनीता दुसाज-जयपुर, विनिता जैन-सवाईमाधोपुर, शांता बाफना-नासिक, सुनीता नवलखा- कोटा। **67 अंक प्राप्त करने वाले प्रतिभागी**-ममता जैन-भरतपुर, कोमल विजय जैन-धुलिया, चेतन बी बोहरा-मुम्बई, डॉ. शर्मिला पटवा जैन-जयपुर। **66.5 अंक प्राप्त करने वाले प्रतिभागी**-अर्चना जैन-हिण्डौन, मुन्नालाल भंडारी-जोधपुर, कमल चोरडिया-जयपुर। **66 अंक प्राप्त करने वाले प्रतिभागी-** मीरा जैन लोहिया-सवाईमाधोपुर, शोभा कोठारी-धुले, सुनंदा प्रकाश कुकूलोल-पुना। **65.5 अंक प्राप्त करने वाले प्रतिभागी**-योगेन्द्र जैन-सवाईमाधोपुर, दीक्षिता दिलीप जैन-बुलडाणा, बाबूलाल जैन-गोपालगढ़-भरतपुर, पारसचंद जैन-भरतपुर, ममता दिलीप जी राखेछा-बुलडाणा, अमित जैन-सवाईमाधोपुर। **65 अंक प्राप्त करने वाले प्रतिभागी**-दीपचंद मिश्रीमल बोथरा-पाचोरा, भावना नवीन जैन-पाचोरा, कमला सुराणा-पाली मारवाड़। **64 अंक प्राप्त करने वाले प्रतिभागी**-मधु जैन श्री सुरेशचन्द जैन-गंगापुर सिटी, प्रकाश कटारिया-रावटी, पद्मा जैन नरेन्द्र जैन-चौथ का बरवाड़ा (64)। **शेष प्रतिभागी**-उज्ज्वला मनोज खिंवसरा-भड़गाँव (63.5), दिलीपकुमार गांधी-चित्तौड़गढ़ (62), नमन जैन-गंगापुर सिटी (62), महादेवो-गंगापुर सिटी (55)।

समाचार विविधा

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का ब्यावर में धर्मजागरण के पश्चात् पावनधरा निमाज में चातुर्मासार्थ मंगल प्रवेश

आगमज्ञ, प्रवचन प्रभाकर, ज्ञान सुधाकर, गुण रत्नाकर, जिनशासन गौरव, व्यसन मुक्ति के प्रबल प्रेरक, **परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी, सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.** प्रभृति संतवृन्द आदि ठाणा 6 का 10 जुलाई 2016 को प्रातः 7.45 बजे धर्मधरा निमाज के पावन सुशीला भवन में चातुर्मासार्थ दिव्य जयघोषों के साथ मंगल प्रवेश हुआ। पूज्य आचार्यप्रवर ने प्रातःकाल समोखी से पद विहार किया। बहुसंख्यक श्रावक-श्राविकाओं ने अनुशासित होकर जय-जयकार करते हुए विहार का पुण्य लाभ लिया। अम्बर में छितराये हुए बादल संगठित होकर आच्छादित हो गए तथा पूज्यप्रवर एवं संत-वृन्द को साता उपजाने की दृष्टि से छत्र के समान छाये रहे। विहार में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री पी. शिखरमल सुराणा सहित संघ के विभिन्न पदाधिकारी एवं देश के विभिन्न स्थानों से श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही।

धर्म-सभा स्थल पर पूज्यप्रवर के पदार्पण के साथ ही निमाज के जैन-जैनेतर सभी बन्धुओं के चेहरे पर प्रमोद एवं उल्लास की मुद्रा दिखाई दी। संतवृन्द के विराजने एवं गुरुवर्य के पावन मुखारविन्द से मंगलाचरण किए जाने के पश्चात् श्रावक-श्राविकाओं ने अपनी भावाभिव्यक्ति की। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की महासचिव **श्रीमती बीनाजी मेहता** एवं श्राविका मण्डल की बहनों द्वारा स्वागत गीत "म्हारा आंगनियाँ पधारया दीनानाथ, स्वागत सब मिल न करां। हे गुरुवर! स्वागत सब मिल ने करां।" युवक परिषद्-बैंगलोर के मंत्री **श्री वेदान्तजी सांखला** ने कहा कि निमाज जैसे छोटे से ग्राम में मंगल प्रवेश का दृश्य देखकर सन् 2004 में बैंगलोर में हुए चातुर्मास की स्मृति तरोताजा हो गई। यह चातुर्मास बैंगलोर से भी सवाया हो, ऐसी मंगल कामना है। **आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, जयपुर** के छात्रों द्वारा समवेत स्वर में "हे मेरे हीरा गुरु, रत्नसंघ की आबरु, तू ही संघ की आन है, तू ही संघ की शान है, तुझको है प्रणाम" गीत प्रस्तुत किया। **श्री हस्तीमल जी गोलेछा**-ब्यावर ने- "हीरा गुरु के चरणों में हो थांन, निवड़ करुँ मैं बारम्बार, गुरुवर सा जीओ साल हजार।" गीत प्रस्तुत कर सभा

को गद्‌गद् किया। **श्री सुमतिचन्दजी मेहता**-पीपाड़ ने अपनी भावना व्यक्त करते हुए कहा- ''मन को मोह लेने वाले मेहमान आये हैं, जन-जन को हर्षाने वाले भगवान आये हैं, यहाँ के वासियों को गुरुदेव वर्षावास का लाभ देने पधारे हैं। चातुर्मास को ऐतिहासिक बनायें, यही भावना है। संघ मंत्री **श्री निर्मलकुमारजी बम्ब** ने सभा का संचालन करते हुए कहा कि यह धरा पुण्यशाली है, यहाँ से तीन चारित्र आत्माएँ दीक्षित होकर जिनशासन की प्रभावना कर रही हैं। पूज्य श्री जयमलजी म.सा., पूज्य श्री कुशलचन्दजी म.सा. का विचरण क्षेत्र रहा है। इस धरा पर 41 चातुर्मास हो चुके हैं। 42 वां चातुर्मास पूज्य आचार्य भगवन्त का हो रहा है। कई वर्षों से चली आ रही विनति पर पूज्य गुरुदेव ने यह कृपा बरसायी है। 25 वर्षों पूर्व पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमलजी म.सा. का 13 दिवसीय अद्वितीय संथारा इसी धरा पर इसी स्थल पर सीझा था। वह प्रसंग एक इतिहास बन गया। गुरुदेव का स्वास्थ्य उत्तम रहे, गुरुदेव की कृपा से चातुर्मास सानन्द सम्पन्न हो। धर्मध्यान व तप-त्याग का वातावरण बना रहे। जिनवाणी-श्रवण का लाभ सभी भाई-बहन निरन्तर लेते रहें, ऐसा विनम्र निवेदन है।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष **श्री पी.शिखरमलजी सुराणा** ने अपने वक्तव्य में कहा कि महापुरुष सही समय पर सही कार्य करते हैं। 25 वर्षों के पश्चात् निमाज संघ का यह लाभ मिला। पूज्य गुरुदेव इस चातुर्मास में सारी पूर्ति कर देंगे। संथारे के कारण इस भवन का महत्त्व अधिक ही है। जैन-अजैन सभी ने उस समय लाभ लिया था, आज भी अच्छी संख्या में लाभ लेने पधारे हैं। महासतियाँ जी का भी चातुर्मास पूज्य आचार्य श्री ने प्रदान कर उदारता का परिचय दिया है। आचार्य श्री ने 13 घर वाले बंगारपेठ में चातुर्मास कर सबको आश्चर्यचकित कर दिया। दूदू जैसे छोटे से क्षेत्र में चार दीक्षाओं के आयोजन का लाभ प्रदान कर दिया। निमाज क्षेत्र को चातुर्मास मिलने पर बधाई। चातुर्मासकाल में गुरुभगवन्तों का स्वास्थ्य उत्तम रहे, धर्म-ध्यान का ठाट लगे, खूब तप-त्याग की झड़ी लगे यही भावना है। निवर्तमान संघ अध्यक्ष **श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना** ने कहा कि सुशीला भवन में आते ही 25 वर्ष पूर्व की स्मृतियाँ जीवन्त हो गई। गुरु हस्ती ने इसी धरा पर मुनि हीरा को आचार्यपद प्रदान किया। आज तिथि छठ है, गुरुदेव कहा करते थे हमारे नाम के आगे भी 1008 या 108 नहीं अपितु 6 का अंक लगना चाहिए। षट्काय के रक्षकों के लिए षट्काय के प्रतिपालकों से बढ़कर और कोई उपाधि नहीं हो सकती। निमाज संघ के सदस्य पीयूष प्रवचनामृत का श्रवण कर जीवन को गुरुतर बनायें। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की महासचिव **श्रीमती बीनाजी मेहता** ने निमाज के संदर्भ में कहा कि नमो + आज अर्थात् आज नमन करके अपने जीवन का

निर्माण करो। गुरुदेव हीरा के वचन मीठे एवं अनमोल हैं। जो भाग्यशाली आचरित करेंगे उनका जीवन बदल जायेगा। युवापीढ़ी में संस्कारों का अनुकरण हो, सामायिक-स्वाध्याय की प्रवृत्ति से हर भाई का जुड़ाव हो, यह चातुर्मास निमाज का नहीं, अपितु समूचे मारवाड़ का है। निमाज के संघ प्रमुख **श्री तेजराज जी भण्डारी** ने अपने भाव व्यक्त करते हुए कहा कि आज निमाज में सोना रो सूरज उगयो है। जागरूक होकर इस बहुकोणीय एवं एककोणीय हीरा गुरु की सन्निधि का लाभ लेना है। यह धरा साधुओं की रही है। बाबजी पहले ही फरमा गये पीपाड़ का ठिकाणा निमाज रहा है। उसी ठिकाणे को सम्भालने समाज के उद्धारक गुरुदेव अनेक परीषह सहन करते हुए पधारे हैं। आचार्य हस्ती के समय से चातुर्मास की विनति रही। उन्हीं के शिष्य आचार्य हीरा गुरु की सन्निधि मिलने से हमारी आशा फलीभूत हुई। आज भाई गणेश भण्डारी की याद आ रही है। वे हर व्यवस्था सम्भालने एवं सेवा कार्य में निष्णात थे। श्री कनकमल जी कोठारी, श्री विमलचन्दजी धोका भी नहीं रहे। बहन शुभकंवर कहूँ या सरोजकंवर उनकी सदैव चातुर्मास के लिए प्रेरणा रही। चातुर्मास प्राप्त कर हम हर्षित हैं। युवा टीम उत्साह से कार्य कर रही है, इस पर प्रमोद है। चातुर्मास को हमें सफल बनाना है, धर्म-ध्यान करना है।

परम श्रद्धेय **आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा.** ने अपने उद्‌बोधन में स्वागतम् शब्द की व्याख्या करते हुए फरमाया- 'स्वस्मिन् आगतम्' अर्थात् अपने में अपनी आत्मा में आना स्वागत है। (विस्तृत रूप से द्रष्टव्य पृ. 22 पर)

महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि वीर धरा निमाज में प्रवेश करते ही 25 वर्ष पूर्व की स्मृतियाँ तरोताजा हो गईं। यहाँ पूज्य कुशलोजी ने 3 चातुर्मास किये। पूज्य गुमानचन्द्रजी ने वर्षावास किया। आचार्य हस्ती को 13 दिवसीय अद्वितीय संथारा यहीं आया। आचार्य हीरा भी यहाँ गुरुपद पर प्रतिष्ठित हुए। उपाध्यायपद पर श्री मानचन्द्रजी पदासीन होकर संघ को विभूषित कर रहे हैं। यहाँ आते ही भाव विभोर होना स्वाभाविक है। गुरुदेव का वियोग यहीं पर हुआ। उन्हीं का तराशा हुआ हीरा संघ की दीप्ति को प्रवर्धमान कर रहा है। श्रद्धा के बीज को स्मरण करते हुए उनका अन्तिम संदेश- संघ जयवंत है और रहेगा। संघ के प्रति अहोभाव जगे। व्यक्ति विशेष में राग न रखें। आचार्य भगवन्त भी संघ हित में निर्णय करते हैं। 21 बोलों की मर्यादा के पालन में सजग रहते हैं। निमाज की भक्ति भावना से चातुर्मास मिला है। मर्यादा पुरुष की सन्निधि पाकर मर्यादा पालन में सहयोग करें।

श्रद्धेय श्री यशवंतमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि संतों की थोड़ी देर की सन्निधि भी तार देती है। यहाँ पधारे महापुरुष की इतनी गहरी साधना है, सब कुछ सहजता से हो जाता

है। सद्गुरु तो सौभाग्यशालिता से मिलते हैं। कहा भी है- ''चलता-चलता युग भया, तो हि न पायो ठाम। मारग में सद्गुरु मिल्या, पाव कोस पर ठाम।।'' भटकते-भटकते एक लम्बा समय हो गया, पर सही मुकाम पर नहीं थे। लेकिन ज्योंही मार्ग में चलते हुए सद्गुरु से मिलन हुआ, तो समझिये अब मंजिल अति समीप ही है। सद्गुरु के मिलन का ऐसा प्रभाव है। यहाँ तो सद्गुरुओं के भी गुरु पधार आये हैं। गुरुवर की वाणी सुनकर पवित्रता को बढ़ाकर जीवन को आनंदित करें।

राजस्थान सरकार के पंचायती राज एवं ग्रामीण विकास मंत्री **श्री सुरेन्द्र जी गोयल** ने प्रवेश के दिन पूज्य गुरुदेव की चरण सन्निधि में दर्शन लाभ लिया। ब्यावर से खींवसरा परिवार श्रीमती कंचनबाईजी के समाधिमरण पर मांगलिक श्रवण करने हेतु उपस्थित हुआ।

प्रवेशोपरान्त 11 जुलाई से प्रातःकालीन प्रार्थना, शास्त्र वाचना आदि कार्यक्रम प्रारम्भ हो गए। 13 जुलाई को इन्दावड़ से श्रावक-श्राविकाओं को धर्मस्थान में सामायिक करने के नियम करवाये गए। **14 जुलाई को व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. आदि ठाणा 4 का चातुर्मासार्थ मंगल प्रवेश जैन स्थानक**, निमाज में पूज्य गुरुदेव की तरह बिना किसी सूचना के हुआ। 15 जुलाई को श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. का छह दिवसीय तप स्वास्थ्य समाधि के साथ सम्पन्न हुआ।

18 जुलाई से नियमित प्रवचन प्रारम्भ हुआ। चतुर्दशी का प्रसंग होने से तप-त्याग एवं धर्म-ध्यान अच्छी संख्या में हुए। धर्म चक्र की आराधना प्रारम्भ हुई। क्षेत्र छोटा होने के बावजूद भी 57 भाई-बहनों ने आराधना का लाभ लिया। **श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.** ने दान-शील एवं तप भावना से जुड़ने की प्रेरणा की तथा कहा कि नीम के पेड़ व बाज पक्षी अधिक संख्या में होने से इस गाँव का नाम निम्बाज (निम्ब+बाज) पड़ा। नीम नीरोगता का प्रतीक है। ज्ञानी गुरु भगवन्त आत्मा की नीरोगता से साक्षात्कार कराने पधारे हैं। महासती जी प्रीतिश्रीजी एवं महासती श्री गरिमाश्रीजी ने जागरण के स्वर में कहा- ''चातुर्मास लगने को है, धर्म की बजे सरगम।''

महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. ने अपने उद्बोधन में फरमाया- ''आप भाग्यशाली हैं कि चार माह साधना-आराधना करने का आपको अवसर मिला है। हर कार्य के प्रारम्भ से पहले मंगल की चाहना रहती है। मंगल से पापों का शमन होता है, अहंकार गलता है। मंगलों में सबसे श्रेष्ठ धर्म मंगल है। धर्माराधना में रहते-रहते मंगल की प्राप्ति करें, यही चतुर्दशी का पावन संदेश है।

19 जुलाई को आषाढ़ी चतुर्मासी एवं गुरुपूर्णिमा का संयोग होने से चेन्नई, बैंगलोर, मैसूर, बंगारपेट, कोलकाता, जामनेर, रतलाम, शोरापुर, के.जी.एफ., चितुर, विजयनगर,

सवाईमाधोपुर शहर, बजरिया, कुश्तला, अलीगढ़-रामपुरा, कोटा, जयपुर, जोधपुर, मेड़तासिटी, मदनगंज, देई, हिण्डौन, गंगापुर सिटी, बिलाड़ा, ब्यावर, हैदराबाद आदि विविध क्षेत्रों से श्रद्धालु गुरुभक्तों का पूज्य गुरुदेव की चरण सन्निधि में पधारना हुआ।

आषाढ़ी चातुर्मासी से चौबीस तीर्थंकर की आराधना व बीस बोलों की साधना प्रारम्भ हुई। इस चौबीस दिवसीय साधना में 59 भाई-बहन आराधना का लाभ ले रहे हैं।

चातुर्मासी पर्व पर अच्छी संख्या में उपवास व एकासन तप की आराधना हुई। चतुर्दशी से तेला, उपवास, एकासन, आयम्बिल, नींवी, दया, बियासन की लड़ी का क्रम प्रवाहमान है। चौमासी प्रतिक्रमण करने का लक्ष्य उपस्थित सभी भाई-बहनों ने रखा।

22 जुलाई को बनियानवाड़ी से दर्शनार्थ आये युवा बन्धुओं ने धर्म स्थान में सामायिक करने के नियम पूज्य आचार्य भगवन्त के पावन मुखारविन्द से ग्रहण किए। 23 जुलाई को अनन्य गुरुभक्त श्री रतनलालजी नाहर-बरेली वालों का परिवार पूज्य गुरुदेव की सेवा में उपस्थित हुआ। हर सदस्य ने सामायिक करने व रात्रिभोजन त्याग के नियम लेकर श्रद्धाभक्ति का परिचय दिया। 24 जुलाई को पाली संघ सदस्यों ने पूज्य श्री की पावन सन्निधि का लाभ लिया। 27 से 31 जुलाई तक पर्युषण में सेवा देने वाले स्वाध्यायियों का पंच दिवसीय तैयारी शिविर का आयोजन पूज्य गुरुदेव की चरण सन्निधि में निमाज में हुआ। इस शिविर में 51 स्वाध्यायियों की उपस्थिति रही। योग्य शिक्षकों द्वारा पर्युषण विषयक विषयवस्तु का अध्यापन करवाया गया।

दर्शन वन्दन हेतु दर्शनार्थियों के आने का क्रम अनवरत बना हुआ है। सभी व्यवस्थाएँ समीपस्थ परिसर में है। निमाज जैन श्री संघ तत्परता व आत्मीय भाव से अहर्निश उद्यत है।

ब्यावर से निमाज का पादविहार-

पूज्य आचार्यप्रवर श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा एवं व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. आदि ठाणा का ब्यावर प्रवास सौहार्द एवं धर्मजागरणा की दृष्टि से सफल रहा।

30 जून 2016 को पूज्य आचार्यप्रवर का ब्यावर के पीपालिया बाजार स्थित वीर भवन में विराजना हुआ। सबको वीतरागवाणी का लाभ मिला। वरिष्ठ, धर्मपरायण सुश्राविका श्रीमती कंचनबाईजी खिंवसरा को प्रातः 8.45 बजे महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. ने संथारे के प्रत्याख्यान समस्त परिवारजनों की सहमति व श्रीमती कंचनबाईजी की स्वीकृति से करवाया। पूज्य आचार्य भगवन्त निमाज का लक्ष्य लिये 01 जुलाई को शनैःशनै गहलोत कॉलोनी की ओर बढ़ गये। 2 जुलाई को चांग गाँव फरसते हुए

सायं रामगढ़ पधार कर रात्रि साधना की। 03 जुलाई को ज्योंही रेलूड़ा गाँव पहुँचे, मूसलाधार वर्षा प्रारम्भ हो गई। उस समय हम सभी के समझ में आया कि यदि कल सायं विहार नहीं फरमाते तो यह बरसात रेलड़ा पहुँचने से पहले ही कहीं मार्ग में आ जाती। लेकिन महापुरुषों की दृष्टि में ये सब सामान्य सी बातें हैं। 04 जुलाई को नानणा होते हुए 05 जुलाई को पूज्यप्रवर का अनन्य श्रद्धालु गुरुभक्त श्री हस्तीमल जी गोलेछा की जन्मभूमि गिरी की धरा पर पधारना हुआ। 06 जुलाई को गिरी में पीपलिया बाजार ब्यावर स्थित वीर भवन के निर्विरोध निर्वाचित अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, मंत्री व कार्यकारिणी के संरक्षक सहित पूज्य आचार्य भगवन्त की सेवा-सन्निधि में मांगलिक लेने पधारे। संघाध्यक्ष ने बताया कि ब्यावर विराजने का ही यह सुपरिणाम है कि वर्षों बाद पीपलिया बाजार में **निर्विरोध चुनाव** हुए हैं। 7 जुलाई को मेसि होते हुए 08 जुलाई को हाजीवास की धरा को पदरज से पावन किया। पूज्य गुरु भगवन्तों के पावन मुखारविन्द से 30 जून को अंगीकार किया श्रीमती कंचनबाईजी खींवसरा ब्यावर वालों का संथारा भी आज 10.45 बजे समाधि के साथ सींझा। 09 जुलाई को गुरुदेव समौखी पधारे। *-जगदीश जैन*

उपाध्यायप्रवर एवं सन्तमण्डल का सरस्वतीनगर से दिग्विजयनगर चातुर्मासार्थ पदार्पण

शान्त-दान्त-गम्भीर पूज्य **उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा.**, मधुर व्याख्यानी **श्री गौतममुनिजी म.सा.** आदि ठाणा 6 का दिग्विजयनगर (गुलाबनगर) स्थित श्री चंचलमलजी अशोकजी चोरडिया की पौषधशाला में 13 जुलाई 2016 को श्री सुरेशजी सालेचा के मकान से जन समुदाय के जयघोषों के साथ विहारोपरान्त प्रातः 8.00 बजे चातुर्मासार्थ मंगल प्रवेश हुआ। विहार में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री पी. शिखरमल जी सुराणा सामायिक वेशभूषा में तथा संघ के अनेक पदाधिकारी एवं श्रावक-श्राविका साथ चल रहे थे। मंगल-प्रवेश के पश्चात् संतों द्वारा शान्ति प्रार्थना की गई। श्राविका मण्डल द्वारा अभिनन्दन गीत प्रस्तुत किया गया। संघाध्यक्ष श्री पी.शिखरमल जी सुराणा, निवर्तमान संघाध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना, राष्ट्रीय संघमंत्री श्री तरुणजी बोहरा आदि कतिपय श्रावक-श्राविकाओं ने चातुर्मास की मंगल-कामना हेतु प्रेरणाप्रद वचन कहे। तदनन्तर श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री लोकचन्द्रजी म.सा., मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा. ने प्रेरक उद्बोधन दिया। उपाध्यायप्रवर ने 10 मिनट प्रवचन फरमाया। लगभग ढाई घण्टे कार्यक्रम चला।

सरस्वतीनगर में 21 दिन का प्रवास अत्यन्त धर्ममय एवं प्रेरक रहा। 06 जुलाई को यहाँ श्रमणसंघीय प्रवर्तक श्री राजेन्द्रमुनिजी सुख-साता पृच्छा हेतु उपाध्यायप्रवर की सेवा में

पधारे। 07 जुलाई को यहाँ से विहार कर पूज्य उपाध्यायप्रवर एवं संत-मण्डल बासनी पुलिया के समीप श्री मेहता साहब के मकान पर विराजे। दूसरे दिन एम्स रोड़ पर श्री महेन्द्रजी सुराणा की फैक्ट्री पर ठहरे तथा वहाँ से विहार कर 09 जुलाई को डॉ. रजनीश शर्मा की फैक्ट्री पर विराजे। एक दिन श्रीजी पैलेस विराजते हुए 11 जुलाई को गुलाबनगर में श्री सुरेशजी सालेचा के आवास पर पधारे तथा यहाँ से ही चातुर्मासार्थ विहार हुआ।

प्रवेश के दिन से प्रवचन का कार्यक्रम नियमित रूप से प्रारम्भ हो गया। तपस्याएँ एवं धर्मध्यान का ठाट लगा लगा हुआ है।-*धनपत सेठिया, अध्यक्ष*

सेवाभावी श्री नन्दीषेणजी म.सा. आदि ठाणा का पीपाड़शहर में चातुर्मासार्थ प्रवेश

सेवाभावी श्री नन्दीषेणजी म.सा., श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 4 भोपालगढ़ प्रवास पश्चात् नाडसर, बारणी, असावरी, हरसोलाव आदि क्षेत्रों में धर्म प्रभावना करते हुए 30 जून 2016 को गोटन पधारे। यहाँ सात दिन के प्रवास में चार तेले एवं तीन बेले की तपस्या सम्पन्न हुई। गोटन से खांगटा, साथिन, कोसाना होते हुए 15 जुलाई 2016 को विशाल जन समुदाय के जयकारों के साथ संत-मण्डल का श्रीमती शरद्चन्द्रिका मुणोत जैन रत्न स्वाध्याय भवन में चातुर्मासार्थ मंगल प्रवेश हुआ। प्रवेश के साथ ही प्रार्थना, प्रवचन, नवकार मंत्र का एक घण्टे जाप, प्रातः युवा-शाला का आयोजन एवं विभिन्न तप-त्याग प्रारम्भ हो गये हैं। ज्ञानाराधन एवं धर्माराधन के प्रति सबका उत्साह है।-*नमन मेहता*

तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. का बालोतरा में चातुर्मास हेतु पदार्पण

तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 4 जोधपुर से आगोलाई गाँव फरसते हुए मण्डली, बागावास, सिमरिखया, थोब, नेवाई, पचपदरा आदि गाँवों में प्रवास करते हुए बालोतरा पधारे। जहाँ औद्योगिक क्षेत्र में धर्मेश जी चौपड़ा की फेक्ट्री, महावीर कॉलोनी में मीठालालजी मधुर के निवास 'पूज्यकृपा', हीरा-पन्ना गली में महेन्द्रजी कवाड़ के निवास, श्री रूपकुमारजी, मोहनलालजी, मदनराजजी चौपड़ा 'कवास वालों' के आवास पर विराजे। यहाँ नियमित प्रातः प्रार्थना, सामूहिक सामायिक, मध्ह्नान में 2 से 4 बजे ज्ञानचर्चा एवं सायंकालीन प्रतिक्रमण का क्रम जारी रहा। 13 जुलाई 2016 को श्री वर्द्धमान जैन स्थानकवासी संघ के नये स्थानक भवन में बड़ी ही सादगी के साथ प्रातः 8.45 बजे मंगल प्रवेश एवं प्रवचन

हुआ। चातुर्मासिक पर्व पर 19 जुलाई को प्रवचन सभा में तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी, श्री योगेशमुनिजी के साथ प्रवचन सभा में ज्ञानगच्छ के श्री राकेशमुनिजी, श्री प्रमुदितमुनिजी एवं साध्वीवृन्द पधारे तथा श्री प्रमुदितमुनिजी एवं साध्वी श्री नम्रताजी म.सा. ने तप-त्याग-आराधना की प्रेरणा की। चातुर्मास प्रारम्भ में धर्म चक्र हुआ। अभी पंचरंगी, तेले, उपवास, अठाई, दया-संवर, 11 सामायिक आदि की नियमित साधनाएँ हो रही हैं। चातुर्मास में स्वधर्मि वात्सल्य का लाभ सुश्रावक श्री मीठालालजी मधुर, श्री जितेन्द्रकुमार, गौतमकुमारजी परिवार वालों की ओर से पूरे उत्साह के साथ लिया जा रहा है। प्रातःकाल प्रवचन में लगभग 400-450 श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रहती है। -*ओमप्रकाश बांठिया*

महासती-मण्डल का चातुर्मासार्थ मंगल प्रवेश

पावटा-जोधपुर- शासनप्रभाविका, साध्वीप्रमुखा महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री रतनकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 8 सामायिक-स्वाध्याय भवन, पावटा में सुख-साता पूर्वक विराज रहे हैं। नित्य प्रवचन एवं धर्माराधना का कार्यक्रम चल रहा है। -*धनपत सेठिया, अध्यक्ष*

नदबई- व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 8 का 14 जुलाई 2016 को सूर्योदय के पश्चात् खेमचन्दजी बागपतिया के मकान से प्रातः 6.45 बजे जैन स्थानक में चातुर्मास हेतु मंगल प्रवेश हुआ। इस अवसर पर डहरा, पहरसर, मई, भरतपुर, खेरली, मण्डावर, खोह, भोपालगढ़, जोधपुर, हिण्डौन आदि ग्राम नगरों से श्रद्धालु उपस्थित थे। चातुर्मास प्रारम्भ दिवस से ही तेले, एकाशन, आयंबिल की लड़ी प्रारम्भ हो गई। संवर का मासक्षपण चल रहा है। 31 जुलाई को दयाव्रत की आराधना के साथ 31 जुलाई से 07 अगस्त तक क्षेत्रीय आराधना शिविर का होना प्रस्तावित है। सभी धार्मिक क्रियाएँ नियमित चल रही हैं। खेरली में इससे पूर्व व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 11 के सान्निध्य में आचार्य हीरा के आचार्यपद रजतवर्ष के अवसर पर 27 मई 2016 को सामायिक, एकाशन, उपवास आदि की साधना की गई। 19 जून 2016 को आचार्य श्री रतनचन्द्रजी म.सा. का 171 वां दिवस तप-त्याग के साथ मनाया गया।

-सुरेशचन्द जैन-खेरली/ नरेशचन्द जैन-नदबई

शक्तिनगर-जोधपुर- विदुषी महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा 5 ने जोधपुर के विभिन्न नगरों को फरसते हुए सरस्वती नगर में उपाध्यायप्रवर की सेवा का लाभ लिया। उसके पश्चात् एयरफोर्स, पावटा, जालम विलास, महावीर नगर, दाधीच नगर फरसते हुए 14 जुलाई 2016 को श्रावक-श्राविकावृन्द के जय-जयकार के साथ शक्तिनगर स्थित

सामायिक-स्वाध्याय भवन में चातुर्मासार्थ मंगल प्रवेश किया। 18 जुलाई से प्रवचन नियमित रूप से हो रहे हैं। श्रावक-श्राविकाओं की अच्छी उपस्थिति रहती है।

-धनपत सेठिया, अध्यक्ष

मसूदा (अजमेर)- व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा महावीर कॉलोनी से विहार कर सदर बाजार स्थित जैन स्थानक में 15 जुलाई 2016 को विशाल जनसमुदाय के जयघोष के साथ चातुर्मासार्थ पधारे। आषाढ़ी पूर्णिमा से प्रार्थना, प्रवचन, धार्मिक शिक्षण के साथ तेला, उपवास, एकाशन एवं आयम्बिल की लड़ी चल रही है।

-पारसमल गांग, महामंत्री-09460613593

सूरत- व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा. आदि ठाणा 6 का सूरत के उपनगर वेसू से न्यू सिटीलाइट एरिया स्थित श्री सोहनलाल नाहर स्वाध्याय भवन में 13 जुलाई 2016 को जयघोष के साथ चातुमासार्थ मंगल प्रवेश हुआ। 200 श्रावक-श्राविकाओं ने गणवेश में विहार सेवा का लाभ लिया। सभी श्रावक-श्राविका चातुर्मास की प्राप्ति से हर्षित थे।

-सुनीलकुमार नाहर, महामंत्री- 09825125718

हरसाना- व्याख्यात्री महासती श्री स्नेहलताजी म.सा. आदि ठाणा 3 का 15 जुलाई 2016 को हरसाना जैन स्थानक में राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय से विहारोपरान्त प्रातः 8.15 बजे चातुर्मास हेतु मंगल प्रवेश हुआ। प्रवेश के दिन प्रातःकाल से ही वर्षा प्रारम्भ हो चुकी थी, किन्तु विहार के समय वर्षा रुकी रही। इस अवसर पर महुवा, खेड़लीगंज, बिचगांवा, मौजपुर, लक्ष्मणगढ़, मण्डावर, खोह, बड़ौदाकान, अलवर तथा अन्य नगरों से स्वधर्मि-बन्धुओं का आगमन हुआ। श्री प्रमोदजी जैन प्रधानाचार्य लक्ष्मणगढ़, श्री नीतिनजी, मनीषजी, महेन्द्रजी जैन खेरली ने चातुर्मास की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। महासती श्री स्नेहलता जी एवं महासती श्री दिव्यप्रभाजी ने प्रवचन से लाभान्वित किया।

निमाज में संघ व संघ की संस्थाओं की वार्षिक आमसभा, गुणी अभिनन्दन तथा कार्यकारिणी सभाओं का आयोजन

गुणी-अभिनन्दन समारोह

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर द्वारा गुणी-अभिनन्दन एवं विशिष्ट सेवाभावी कार्यकर्त्ताओं का सम्मान-समारोह शनिवार, **17 सितम्बर 2016** को दोपहर 12.30 बजे निमाज, जिला-पाली (राज.) में रखा गया है, जिसमें सभी संघ सदस्य सादर आमन्त्रित हैं।

कार्यकारिणी सभाएँ

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं की कार्यकारिणी सभाओं का आयोजन शनिवार, **17 सितम्बर 2016** को निमाज में रखा गया है, सम्बद्ध सभी कार्यकारिणी सदस्य सादर आमन्त्रित हैं।

वार्षिक आमसभा

संघ एवं संघ की सभी सहयोगी संस्थाओं की **वार्षिक साधारण सभा रविवार, 18 सितम्बर 2016 को दोपहर 12.30 बजे निमाज, जिला-पाली (राज.)** में रखी गई है, जिसमें सभी संघ सदस्यों की उपस्थिति सादर प्रार्थित है। वार्षिक साधारण सभा के विचारणीय विषय बिन्दु इस प्रकार हैं-

विचारणीय विषय बिन्दु-

1. गत बैठक की कार्यवाही का पठन
2. संचालन समिति/कार्यकारिणी की बैठक में लिए गये निर्णयों की जानकारी/अनुमोदन।
3. संघ व संघ की सभी सहयोगी संस्थाओं के वार्षिक प्रतिवेदन एवं सदस्यों से प्राप्त सुझावों पर विचार।
4. संघ व संघ की संस्थाओं की कार्यकारिणियों द्वारा स्वीकृत वर्ष 2015-2016 के वास्तविक आय-व्यय एवं वर्ष 2016-2017 के प्रस्तावित बजट का अनुमोदन।
5. अंकेक्षक की नियुक्ति।
6. संघ की सहयोगी संस्थाओं के अध्यक्ष/संयोजक द्वारा अभिव्यक्ति।
7. राष्ट्रीय संघाध्यक्ष महोदय द्वारा अभिव्यक्ति।
8. अन्य विषय अध्यक्ष महोदय की आज्ञा से।

नोटः- निमाज पधारने पर आपको जिनशासन गौरव **परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा.**, महान् अध्यवसायी सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 6 एवं व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. आदि ठाणा 4 के दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण का लाभ भी प्राप्त होगा।

संघ के सभी सदस्यों से विनम्र अनुरोध है कि संघहित में अपने लिखित सुझाव संघ के प्रधान कार्यालय को **30 अगस्त 2016** तक अवश्य भेजने की कृपा करें। संघहित के उपयोगी सुझावों पर यथोचित विचार व निर्णय करने का प्रयास रहेगा। संघ सदस्यों को साधारण सभा में भाग लेने की आप अपने क्षेत्र में सूचना करें। उपरोक्त सभी कार्यक्रमों में

पधारने वाले सभी संघ एवं महानुभव अपने आगमन की सूचना संघ कार्यालय एवं निमाज सम्पर्क सूत्र पर अवश्य देवें। **सम्पर्क सूत्रः-** (1) अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.), फोनः 0291-2636763/2641445, (2) श्री निर्मलकुमारजी बम्ब-मंत्री, गजेन्द्र एजेन्सी, मेन मार्केट, निमाज पैलेस के पास, पो. निमाज-306303, जिला-पाली (राज.), मोबाइल नं. 94496-49577

आचार्य हस्ती-स्मृति-सम्मान 2016 हेतु प्रविष्टियाँ आमन्त्रित

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर द्वारा प्रतिवर्ष जैन आगम, जैन धर्म-दर्शन, कला एवं संस्कृति तथा जैन जीवन-पद्धति के क्षेत्र में लेखन, शोध तथा जैन सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार में विशिष्ट योगदान करने वाले विशिष्ट विद्वान् को **'आचार्य हस्ती-स्मृति-सम्मान'** से सम्मानित किया जाता है। इस सम्मान हेतु लेखकों से सम्मान योग्य कृति की चार प्रतियाँ **18 अगस्त 2016** से पूर्व तक आमन्त्रित हैं। उक्त तिथि के पश्चात् प्राप्त प्रविष्टियाँ सम्मिलित नहीं की जाएगी। सम्मान हेतु नियम इस प्रकार हैं-

1. विद्वान् की एक कृति अथवा उनके सम्पूर्ण योगदान के आधार पर भी सम्मानित किया जा सकेगा।
2. सम्मान हेतु प्रकाशित अथवा अप्रकाशित (टंकित) कृति की चार प्रतियाँ प्रेषित की जानी चाहिए।
3. प्रकाशित कृति सन् 2012 से पूर्व की नहीं होनी चाहिए।
4. अन्य संस्थाओं द्वारा पूर्व में पुरस्कृत कृति पर यह सम्मान नहीं दिया जाएगा।
5. कृति का विशेषज्ञ विद्वानों से मूल्यांकन कराया जाएगा।
6. कृति के मौलिक एवं पूर्व में पुरस्कृत न होने का प्रमाण-पत्र संलग्न करना होगा।
7. सम्मान के रूप में 51 हजार की राशि प्रशस्ति-पत्र के साथ प्रदान की जाती है।

आवदेन-पत्र कृति की चार प्रतियों के साथ अपने बायोडेटा एवं सम्पर्क सूत्र सहित निम्नांकित पते पर प्रेषित करें। **सम्पर्क सूत्रः-** महामंत्री, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.),फोन नं. 0291-2636763/2641445, **Email-absjrhssangh@gmail.com**

संघ द्वारा सम्मानार्थ प्रविष्टियाँ आमन्त्रित

युवा प्रतिभा- शोध-सम्मान (45 वर्ष की आयु तक)-

1. **प्रशासनिक चयन-** राज्यस्तरीय व केन्द्रीय प्रशासनिक सेवा, न्यायाधिपति आदि विशिष्ट पदों पर चयन।
2. **प्रोफेशनल विशिष्ट-** डॉक्टर, इंजीनियर, चार्टर्ड एकाउण्टेण्ट, कम्पनी सचिव व अन्य प्रोफेशनल कोर्स में योग्यता सूची में स्थान पाने पर।
3. **शोध-** वैज्ञानिक खोज (अहिंसा व जैन सिद्धान्तों को पुष्ट करने वाली)
4. **संघ-सेवा-** चतुर्विध संघ सेवा, विशेष धार्मिक अध्ययन, धार्मिक लेखन इत्यादि।

विशिष्ट स्वाध्यायी सम्मान (एक श्राविका, एक युवा, एक वरिष्ठ स्वाध्यायी)- कम से कम 10 वर्ष स्वाध्याय संघ, जोधपुर से स्वाध्यायी (पर्युषण पर्वाराधन) के रूप में सक्रिय सेवा। (युवा स्वाध्यायी के लिए आवश्यक होने पर सेवा वर्ष में छूट दी जा सकेगी।)

गुणी-अभिनन्दन-

1. **तपस्या-** कम से कम पाँच वर्ष तक एकान्तर, दीर्घ तपस्या, दीर्घ संवर-साधना या अन्य विशिष्ट तप।
2. **अन्य-** सेवा, साधना, संघ उन्नयन में योगदान, चतुर्विध संघ-सेवा, विद्वान्।

नोटः- उक्त सम्मान हेतु अपनी प्रविष्टियाँ **18 अगस्त 2016** से पूर्व संघ कार्यालय के पते पर भिजवाएं।-महामंत्री-अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001(राज.), फोनः 0291-2636763,**Email-absjrhssangh@gmail.com**

न्यायमूर्ति श्री श्रीकृष्णमल लोढ़ा स्मृति युवा शिक्षा प्रतिभा सम्मान हेतु प्रविष्टियाँ आमन्त्रित

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर संघ-संरक्षक न्यायमूर्ति श्री श्रीकृष्णमल लोढ़ा की स्मृति में उनकी धर्मपत्नी स्व. श्रीमती उगमकंवरजी लोढ़ा की पावन प्रेरणा से संघ द्वारा प्रदत्त **युवा शिक्षा-प्रतिभा सम्मान** हेतु प्रविष्टियाँ आमन्त्रित हैं। इसके अन्तर्गत उन छात्र-छात्राओं की प्रविष्टियाँ स्वीकार की जायेंगी, जिन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट उपलब्धि प्राप्त की हो। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, विश्वविद्यालय आदि की परीक्षाओं में वरीयता सूची में विशिष्ट स्थान प्राप्त करने वाले श्रेष्ठ छात्र को 21 हजार रुपये की राशि से सम्मानित किया जाएगा। प्रतियोगी एवं प्रोफेशनल पाठ्यक्रमों में उच्च वरीयता प्राप्त छात्र-छात्रा को भी सम्मानित किया जा सकता है।

इच्छुक अभ्यर्थी आवेदन करते समय अंकतालिका की सत्यापित प्रतिलिपि संलग्न करें तथा सम्पर्क सूत्र सहित अपना बायोडेटा **18 अगस्त 2016** से पूर्व तक निम्नांकित सम्पर्क सूत्र पर प्रस्तुत करें। **सम्पर्क सूत्र**:-महामंत्री, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.), फोन नं. 0291-2636763, **Email-absjrhssangh@gmail.com**

डॉ. बिमला भण्डारी जैन रत्न शोध सम्मान हेतु आवेदन आमन्त्रित

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की पूर्व महामंत्री डॉ. बिमला जी भण्डारी की पुण्य स्मृति में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के तत्त्वावधान में भण्डारी परिवार की ओर से जैन धर्म-दर्शन से सम्बद्ध विषय पर पी-एच्.डी एवं डी.लिट् उपाधि प्राप्त करने वाले शोधकर्त्ताओं को **'डॉ. बिमला भण्डारी जैन रत्न शोध सम्मान'** से सम्मानित किया जाएगा। इस सम्मान हेतु आवश्यक बिन्दु इस प्रकार हैं-

1. जिन शोधकर्त्ताओं ने **17 फरवरी 2015** के पश्चात् पी-एच्.डी/डी.लिट् उपाधि प्राप्त की है, उनमें से **5** पी-एच्.डी. उपाधिधारकों तथा **2** डी.लिट् उपाधिधारकों को क्रमशः 11 हजार रुपये एवं 15 हजार रुपये की प्रोत्साहन राशि से सम्मानित किया जाएगा।
2. **17 फरवरी 2015 से 31 जुलाई 2016** के मध्य जो भी पी-एच्.डी. एवं डी.लिट् उपाधि प्राप्तकर्त्ता हों, वे इस सम्मान हेतु आवेदन कर सकते हैं। आवेदन-पत्र के साथ पी-एच्.डी./डी.लिट् उपाधि के समुचित सर्टिफिकेट एवं शोधकार्य का सारांश संलग्न करना होगा।
3. प्राप्त आवेदन-पत्रों का निर्णायक समिति द्वारा मूल्यांकन कर सम्मान हेतु अनुशंसा की जाएगी।
4. सम्मान राशि 'श्री सरदारमल भण्डारी चेरिटेबल ट्रस्ट, जयपुर' के सौजन्य से प्रदान की जाएगी।
5. सभी आवेदन-पत्र निम्नांकित पते पर **18 अगस्त 2016** के पूर्व प्राप्त हो जाने चाहिए।- **महामंत्री**, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.), फोन : 0291-2636763

-पूरणराज अबानी, महामंत्री, अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

श्राविका मण्डल की कार्यकारिणी बैठक व वार्षिक अधिवेशन

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल का वार्षिक अधिवेशन 16 सितम्बर 2016 को दोपहर 12.30 बजे निमाज (जिला-पाली) में आयोजित किया जाएगा। मण्डल की कार्यकारिणी की बैठक भी उसी दिन सायं 8 बजे रखी गई है। श्राविका मण्डल की आमसभा संघ द्वारा रविवार, 18 सितम्बर, 2016 को आयोजित वार्षिक आमसभा में संयुक्त रूप से ही रखी गई है।

वार्षिक अधिवेशन में श्राविका मण्डल की शाखाओं का सम्मान किया जायेगा। आपके क्षेत्र में हुई विभिन्न धार्मिक गतिविधियों की रिपोर्ट हमें शीघ्र भिजवाने का श्रम करावें जिससे आपकी शाखा द्वारा किये गये कार्यों का उल्लेख संघ के वार्षिक प्रतिवेदन में समाहित किया जा सके। श्राविका मण्डल के हित में आपके बहुमूल्य सुझाव रिपोर्ट के साथ लिखित में हमें शीघ्र भिजवाने का लक्ष्य रखावें।

सभी शाखाध्यक्षों और शाखासचिवों से निवेदन है कि अपने क्षेत्र से अधिक से अधिक बहिनें पधारकर संघ के कार्यक्रमों में भाग लें जिससे श्राविका मण्डल में चल रही गतिविधियों से अवगत हो सकें। अपने पधारने की सूचना निमाज के सम्पर्क सूत्र पर अवश्य करावें जिससे आवास आदि की व्यवस्था की जा सके।

विशेषः- जिनशासन गौरव परम श्रद्धेय आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का 'आचार्य पद' पदारोहण रजत वर्ष दिवस तथा एवं जो भी कार्यक्रम सम्पन्न हुए हों उन सभी की रिपोर्ट हमें भिजवाने का श्रम करावें। सम्पर्क सूत्रः- श्री सूरजमल जी भण्डारी-094444-14120, श्री निर्मलकुमारजी बम्ब-मंत्री, गजेन्द्र एजेन्सी, मेन मार्केट, निमाज पैलेस के पास, पो. निमाज-306303, जिला-पाली (राज.), मोबाइल नं. 94496-49577

आवश्यक सूत्र पर 'खुली पुस्तक प्रतियोगिता' 02 जुलाई से

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा **'बनें आगम अध्येता (6)'** के अन्तर्गत आवश्यक सूत्र की परीक्षा **02 जुलाई 2016** से प्रारम्भ की गई है। मूल्यांकन प्रश्न-पत्र भरकर भेजने की अन्तिम तिथि **20 अक्टूबर 2016** व समापक परीक्षा **18 दिसम्बर 2016** को रखी गई है। प्रतियोगिता हेतु पुस्तक का मूल्य 60/- रुपये रखा गया है। **सम्पर्क सूत्रः-** श्रीमती बीनाजी मेहता-97727-93625, श्री राकेशजी जैन-

94616-63545 एवं आवश्यक सूत्र की पुस्तक सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, 182-183 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.), फोनः 0141-2575997, 4068798 से मंगवा सकते हैं।

युवक परिषद् का वृहद् अधिवेशन 25-26 सितम्बर को

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् की स्थापना का यह 25 वाँ वर्ष गतिमान है। इस रजत जयन्ती वर्ष में 25 एवं 26 सितम्बर 2016 को वृहद् अधिवेशन का आयोजन किया जा रहा है। प्रथम दिवस का कार्यक्रम जोधपुर में एवं द्वितीय दिवस का कार्यक्रम निमाज में आयोजित होगा। सभी से निवेदन है कि आप अपने क्षेत्र में आने वाले युवा साथियों का नाम एवं उनके फोटो युक्त परिचय-पत्र की प्रतिलिपि संघ कार्यालय में आगामी एक माह के भीतर भिजवाने का श्रम करावें, ताकि उनके प्रवास को सुविधायुक्त बनाया जा सके। यात्रा कार्यक्रम की पूर्व सूचना मिलने पर आवास-निवास एवं आवागमन की व्यवस्था में सुविधा रहेगी। विस्तृत कार्यक्रम प्रेषित किया जा रहा है। सम्पर्क सूत्रः- मनीष लोढ़ा, महासचिव-094144-17817, कार्यालय-0291-2641445, E-mail-yuvaratna17@gmail.com

अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र, जोधपुर के बढ़ते चरण

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र के जोधपुर में 23 नये संस्कार केन्द्र तथा 17 नये रविवारीय संस्कार केन्द्र प्रारम्भ करने के पश्चात् संस्कार केन्द्रों की संख्या 34 तथा रविवारीय संस्कार केन्द्रों की संख्या 35 हो गई है, जिनमें 850 छात्र अध्ययन कर रहे हैं। जोधपुर से बाहर 34 केन्द्र संचालित हैं, जिनमें 1600 छात्र अध्ययनशील हैं। उल्लेखनीय है कि गत माह प्रकाशित छात्र संख्या 186 के स्थान पर 1086 पढ़ी जाए।

-राजेश भण्डारी, सचिव

आवश्यकता

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जोधपुर को प्रधान कार्यालय घोड़ों का चौक, जोधपुर हेतु कार्यालय सहायक की आवश्यकता है, जिसे कम्प्यूटर का अच्छा ज्ञान हो तथा हिन्दी-अंग्रेजी टाइपिंग का अच्छा अनुभव हो। **सम्पर्कः-** मनीष लोढ़ा, महासचिव, अ.भा.श्री जैन रत्न युवक परिषद्, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.), मोबाइल नं. 94141-17817

लिपि एवं पाण्डुलिपि विज्ञान विषयक कार्यशाला

दिल्ली- राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन, नई दिल्ली के सहयोग से भोगीलाल लहेरचन्द प्राच्यविद्या संस्थान 'लिपि, पाण्डुलिपि एवं पाण्डुलिपि-विज्ञान' विषयक 21 दिन की एक निःशुल्क कार्यशाला का आयोजन करने जा रहा है जो 11 सितम्बर 2016 से आरम्भ होकर 01 अक्टूबर 2016 तक सम्पन्न होगी। इस कार्यशाला में प्रबुद्ध प्रतिभागियों को ब्राह्मी लिपि से आधुनिक लिपियों के विकास का इतिहास, पाण्डुलिपियों का स्वरूप, इतिहास और संरक्षण तथा उनके आलोचनात्मक संपादन की प्रविधि आदि का प्रयोगात्मक प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा। कार्यशाला में भाग लेने के लिये संस्कृत या हिन्दी भाषा में कम से कम परास्नातक योग्यता (एम.ए. या आचार्य आदि) अपेक्षित है। हिन्दी या संस्कृत के अध्यापकों हेतु भी यह कार्यशाला बहुत उपयोगी है। जो व्यक्ति पाण्डुलिपियों के सम्पादन पर पी-एच.डी. उपाधि हेतु कार्य कर रहे हैं, उन्हें प्राथमिकता दी जाएगी। बाहर के प्रतिभागियों के लिए आवास, भोजन आदि की पूर्ण व्यवस्था रहेगी। इच्छुक प्रत्याशी अपनी योग्यता आदि का विवरण देते हुए संस्थान से शीघ्र सम्पर्क करें। आवेदन-पत्र *http://blinstitute.org* वैबसाइट पर उपलब्ध है।-*प्रो. गयाचरण त्रिपाठी, निदेशक, फोनः 011-27202065,07206630, Emil: blinstitute1984@gmail.com*

प्रवचन-संपादक चाहिये

सन्तप्रवरों एवं महासतीवृन्द के प्रवचनों के संकलन और संपादन के लिए सुयोग्य व्यक्तियों की आवश्यकता है। प्रवचन संकलन के लिए आशुलिपिक हो तो अच्छा, अन्यथा प्रवचन सुनकर पूरा यथातथ्य लिख देने की क्षमता आवश्यक है। हिन्दी भाषा और जैन धर्म के ज्ञान के साथ संपादन-कला की योग्यता भी जरूरी है। इस श्रुतसेवा हेतु आकर्षक मानदेय और अच्छी सुविधाएँ प्रदान की जायेंगी। पूर्णकालिक सेवा देने वालों को इस प्रकार के अन्य संपादन कार्य भी सौंपे जा सकेंगे और निश्चित ही उनका मानदेय तथा सुविधाएँ भी अभिवर्द्धित होंगी। अपनी योग्यता, अनुभव, अभिरुचि, सम्पर्क सूत्र और सभी आवश्यक विवरण के साथ नीचे लिखे पते पर आवेदन करें।-प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन, सामायिक-स्वाध्याय भवन, प्लॉट नम्बर-2, नेहरु पार्क, जोधपुर-342003 (राज.), फोन : 0291-2626279, ईमेल : editorjinvani@gmail.com

संक्षिप्त-समाचार

जोधपुर- श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा 15 से 20 जून 2016 तक आध्यात्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें 80 श्राविकाओं ने भाग लिया। श्री

मूलचन्दजी बाफना, श्री रंगरूपजी डागा, श्री नरपतराजजी चौपड़ा, श्री अरुणजी मेहता, श्रीमती अंकलकंवरजी मोदी, श्रीमती मोहनकौरजी जैन, श्रीमती सुशीला जी गुलेच्छा, श्रीमती सुनीता जी मेहता, श्रीमती अमृतकंवरजी भण्डारी, श्रीमती मोहिनीबाईजी कच्छवाह, श्रीमती कुसुमजी सिंघवी, श्रीमती रतनजी चोरडिया, श्रीमती कमला जी सुराणा आदि ने शिक्षक के रूप में अमूल्य सेवाएँ प्रदान की। शिविर समापन पर श्री श्रीकांतजी गुप्ता ने नारी शक्ति पर ओजस्वी भाषण दिया। शिविर का संचालन श्रीमती मोहनकौर जैन ने किया। -*सुशीला गुलेच्छा, अध्यक्ष*

बैंगलोर- श्री कर्नाटक जैन संघ के तत्त्वावधान में शूले स्थानक में 11 जून 2016 को शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें 110 अध्यापकों ने भाग लिया। -*शान्तिलाल बोहरा*

हैदराबाद- यहाँ श्रमणसंघीय संतों के चातुर्मास में शॉल, माला, प्रतीक चिह्न आदि से बहुमान नहीं करने का निर्णय लिया गया है।

जोधपुर- राष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन एवं शोध संस्थान, श्रवणबेलगोला द्वारा 16 जून 2016 को ''जैनदर्शन में कारण-कार्य विषयक चिन्तन'' विषय पर विशेष व्याख्यान आयोजित किया गया। जिसमें जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर के संस्कृत विभाग के प्रोफेसर एवं जिनवाणी मासिक पत्रिका के प्रधान सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन ने षड्द्रव्यों की कारणता, उपादान, निमित्त, पंचसमवाय आदि पर प्रकाश डाला।

बीकानेर- लब्धप्रतिष्ठ सेठ श्री शंकरदानजी नाहटा पर डाक विभाग राजस्थान परिमण्डल द्वारा 28 जून 2016 को एक विशेष आवरणमय विरूपण जारी किया गया है।

बधाई

पारुल जैन

सपना जैन

वृत्तिका ओस्तवाल

शुभम कांकरिया

क्षितिज कटारिया

मनीष राका

प्रज्ञा कूमट

पलक सुखलेचा

निकिता खूँगरवाल

मुम्बई- सुश्री प्रीति जैन सुपुत्री श्री रमेशचन्दजी जैन (लहसोड़ा-सवाईमाधोपुर वाले) ने प्रथम प्रयास में भारतीय प्रशासनिक सेवा की परीक्षा 521 वें स्थान के साथ उत्तीर्ण की है। वे श्री राधेश्यामजी गोटेवाला की अनुज पुत्री हैं।

अलवर- सुश्री पारुल जैन सुपुत्री श्रीमती सुनीताजी एवं श्री महावीरजी जैन ने 20 वर्ष की आयु में सी.ए. फाइनल की परीक्षा प्रथम प्रयास में शहर में सर्वाधिक अंकों से उत्तीर्ण की है। इससे पूर्व सीनियर सैकण्डरी परीक्षा में आपकी राजस्थान में 11वीं रेंक तथा सी.पी.टी. में 22 वीं रेंक रही है। राजस्थान विश्वविद्यालय के बी.कॉम आनर्स की परीक्षा में वरीयता क्रम में प्रथम स्थान प्राप्त कर राजस्थान के राज्यपाल श्री कल्याणसिंहजी के हाथों स्वर्ण पदक प्राप्त किया है। आध्यात्मिक चिन्तन एवं धर्म के प्रति आस्था के लिए आपको राष्ट्रीय स्तर पर बालरत्न की उपाधि से सम्मानित किया गया है। आपको आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की चतुर्थ कक्षा की परीक्षा भी दी है।

चौथ का बरवाड़ा- श्रीमती सपना जैन धर्मपत्नी श्री ऋषभ जी जैन (इंजीनियर), आदर्शनगर, सवाईमाधोपुर ने जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली से भारतीय दर्शन एवं विज्ञान में परमाणुवाद (न्याय-वैशेषिक एवं जैन दर्शन के विशेष परिप्रेक्ष्य में)' विषय पर पी-एच्.डी. उपाधि प्राप्त की है।

जोधपुर- सुश्री वृत्तिका ओस्तवाल सुपुत्री श्रीमती कंचनजी-जिनेन्द्रजी ओस्तवाल (सुपौत्री स्व. श्रीमती केवलकंवरजी-स्व. श्री रिखबचन्दजी ओस्तवाल) ने प्रथम प्रयास में सी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। आप संघनिष्ठ श्रावकरत्न श्री मानेन्द्रजी ओस्तवाल की अनुज पुत्री हैं।

जोधपुर- श्री शुभम कांकरिया सुपुत्र श्रीमती ललिता एवं श्री अशोककुमारजी कांकरिया (सुपौत्र स्व. श्री कपूरचन्दजी-स्व. श्रीमती गटूबाईजी कांकरिया 'भोपालगढ़ वाले') ने सी.ए. परीक्षा अच्छे अंकों से उत्तीर्ण की। आप अखिल भारतीय युवक परिषद् के सह-संयोजक (सूचना संग्रहण एवं श्रुत सेवा) हैं।

उदयपुर- श्री क्षितिज कटारिया सुपुत्र श्री अजीतजी कटारिया 'अजमेर वाले' ने प्रथम प्रयास में सी.ए. एवं सी.एस की परीक्षा उत्तीर्ण की है। आप रत्नवंश की महासती श्री कौशल्या जी म.सा. के सांसारिक भतीजे हैं। *-नेमीचन्द कटारिया, परामर्शदाता-अजमेर*

जोधपुर- श्री मनीषजी रांका सुपुत्र श्री धर्मचन्दजी-श्रीमती सन्तोषदेवीजी रांका (सुपौत्र स्व. श्रीमती आयचूकीदेवीजी-स्व. श्री जवरीलाल जी रांका-पालासनी वाले) ने सी.ए. फाइनल की परीक्षा उत्तीर्ण की।

ब्यावर- सुश्री प्रज्ञा कूमट सुपुत्री श्रीमती सुनीता-त्रिलोकचन्दजी कूमट (सुपौत्री स्व. श्री पारसमलजी कूमट) ने सी.ए. फाइनल की परीक्षा प्रथम प्रयास में उत्तीर्ण की है।

जयपुर- सुश्री पलक सुखलेचा सुपुत्री श्रीमती इन्दूजी एवं श्री रिखबचन्दजी सुखलेचा (सुपौत्री स्व. श्री दीपचन्दजी सुखलेचा) ने प्रथम प्रयास में सी.ए. फाइनल की परीक्षा अच्छे अंकों से उत्तीर्ण की।

बैंगलोर- सुश्री निकिता डूँगरवाल सुपुत्री श्रीमती प्रमिलाजी-श्री सुशीलकुमारजी एवं सुपौत्री श्री चेतनप्रकाशजी डूँगरवाल ने अमेरिका में Sauta Clara University से M.S. डिग्री 98 प्रतिशत अंकों से प्राप्त की है।

इन्दौर- श्री नीरज जैन सुपुत्र श्री कन्हैयालाल जी जैन (सुपौत्र श्री हरकचन्दजी जैन) ने सी.ए. फाइनल की परीक्षा उत्तीर्ण की। नीरज जी जैन बुलन्द आवाज के धनी तथा मधुर गायक हैं।

इन्दौर- श्री अशोककुमारजी एवं श्रीमती अनितादेवीजी जैन के सुपुत्र **श्री अंकितजी जैन** एवं **श्री अक्षयजी जैन** ने सी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की है। इनमें अक्षयजी जैन ने इनफोसिस-हैदराबाद में एसोशिएट कन्सल्टेन्ट के पद पर नियुक्ति प्राप्त की है। आप दोनों श्री सौभाग्यमल जी जैन 'एडवोकेट'-सवाईमाधोपुर के दौहित्र हैं।

जोधपुर- श्री ऋषि कुम्भट सुपुत्र नीताजी-राजीवजी कुम्भट (सुपौत्र पुष्पाजी-जगदीश जी कुम्भट, पूर्व महामंत्री, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ) ने बी.कॉम आनर्स, सी.एस. एवं इस वर्ष सी.ए. परीक्षा उत्तीर्ण की।

श्रद्धाञ्जलि

चेन्नई- संघसंरक्षक, गुरुभक्त, वरिष्ठ स्वाध्यायी श्रावक श्री भंवरलाल जी बाफना-जलगांव का 87 वर्ष की वय में 09 जुलाई 2016 को चेन्नई में देहावसान हो गया। भोपालगढ़ में श्री जवाहरलाल जी बाफना के घर में जन्म लेकर आप धार्मिक संस्कारों से निरन्तर समृद्ध होते रहे। पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. के कृपापात्र श्रावकों में रहकर आपने संघ की महनीय सेवा की। आचार्यप्रवर के भोपालगढ़ एवं इन्दौर चातुर्मास में आपकी सेवाएँ अनुकरणीय रही। सम्पर्क में आने वाले संघ सदस्यों को आप सामायिक-स्वाध्याय की प्रेरणा करते थे। आपके परिवार के सक्रिय सहयोग से भोपालगढ़ में श्री जैन रत्न जवाहर बाफना कन्या पाठशाला की स्थापना हुई। साथ ही आपने जे.जे. चेरिटेबल ट्रस्ट के माध्यम से समाजोपयोगी कार्य किए। आपके भ्राता श्री अनूपकुमारजी बाफना, श्री वर्द्धमान

स्थानकवासी श्रावक संघ जानकीनगर इन्दौर के अध्यक्ष हैं तथा भ्राता कल्याणमल जी भी संत-सतियों की सेवा में सदैव तत्पर रहते हैं। श्री बाफना साहब को स्वाध्याय करने में अत्यधिक रुचि थी। उपयोगी सामग्री को वे डॉयरी में लिखते थे। उनके सुपुत्र श्री पदमजी एवं सुरेशजी जलगांव एवं चेन्नई में रहते हैं। चेन्नई में श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई।

ब्यावर- वरिष्ठ सुविज्ञ, धर्मपरायणा स्वाध्यायी सुश्राविका श्रीमती कंचनबाईजी खिंवसरा

का 08 जुलाई, 2016 को संथारे के साथ समाधिमरण हो गया। गुरुभक्त श्राविका नित्य सामायिक, प्रतिक्रमण करती थीं तथा बरेली स्थानक की पूरी सार-सम्भाल रखती थीं। आप संत-सतियों के सेवा में हमेशा तत्पर रहती थीं। आपने आचार्यप्रवर के ब्यावर पधारने पर दर्शनों का लाभ लिया तथा अस्वस्थ रहने के कारण पहले से चल रही संथारे की भावना पूज्य आचार्यप्रवर की चरण सन्निधि में पुनः रखी। आपको महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. ने 30 जून को प्रातः 8.45 बजे पर सागारी संथारे के प्रत्याख्यान करवाये। 08 जुलाई को प्रातः 10.45 बजे उनका संथारा सीझ गया।

जयपुर- वीर पुत्र सुश्रावक श्री हंसराजजी जैन (मोहनोत) का 19 जुलाई 2016 को 87 वर्ष

की आयु में स्वर्गवास हो गया। आप धर्मनिष्ठ श्रावक थे तथा नियमित सामायिक-स्वाध्याय करते थे। आप रत्नसंघीय संत स्व. श्री मगनमुनिजी म.सा. के सांसारिक ज्येष्ठ पुत्र थे। स्थानकवासी रत्नसंघीय परम्परा के आप निष्ठावान श्रावक थे। सामायिक, पौषध आदि धार्मिक क्रियाओं के साथ आप एक अच्छे स्वाध्यायी भी थे। -*आनन्दराज जैन*

पीपाइशहर- सुश्राविका श्रीमती सज्जनदेवीजी धर्मसहायिका स्व. श्री माणकचन्दजी

कांकरिया का 24 जून 2016 को स्वर्गगमन हो गया। आपके परिवार से जिनशासन में पाँच दीक्षाएँ हो चुकी हैं। एक सुपुत्र ने सपत्नीक तेरापंथ संघ में तथा दो सुपुत्रियों ने ज्ञानगच्छ में दीक्षा अंगीकार की है। आप अपने पीछे भरापूरा धर्मनिष्ठ परिवार छोड़कर गई हैं। आप संघ के वरिष्ठ सुश्रावक श्री गौतमचन्दजी हुण्डीवाल की मौसीजी थीं।

चेन्नई- श्राविकारत्न श्रीमती सिरदारकंवरजी सुराणा धर्मपत्नी स्व. श्री मानमलजी सुराणा, नागौर निवासी का चेन्नई में 16 जुलाई 2016 को संथारापूर्वक समाधिमरण हो गया। महासती श्री निधिज्योतिजी म.सा. के मुखारविन्द से 13 जुलाई को संथारा ग्रहण किया तथा 16 जुलाई को सायंकाल संथारा सीझ गया। धर्मनिष्ठ सुश्राविका की पार्थिव यात्रा में सैंकड़ों श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया तथा श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई।

मेड़तासिटी- धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री बुधराजजी झामड़ का 86 वर्ष की आयु में 25 मई, 2016 को स्वर्गवास हो गया। आप नित्य सामायिक-स्वाध्याय करते थे। जैन शास्त्रों में आपकी गहरी रुचि एवं श्रद्धा थीं। आप भरा-पूरा धर्मनिष्ठ परिवार छोड़कर गये हैं।

उनियारा (टोंक)- धर्मपरायण सुश्राविका श्रीमती बिलासीबाई जैन धर्मपत्नी स्व. सुश्रावक श्री लड्डूलाल जी जैन का 20 मई 2016 को देवलोकगमन हो गया। सरल स्वभावी श्राविका विगत 40 वर्षों से रात्रि-चौविहार का त्याग रख रही थीं।

इन्दौर- धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती तेजकुंवरबाई मण्डलिक का 04 जुलाई 2016 को 81 वर्ष की आयु में निधन हो गया। मरणोपरान्त उनके नेत्र दान किए गए। साधु-साध्वियों की सेवा-भक्ति में वे सदैव तत्पर रहती थीं। आप जैन कॉन्फ्रेंस की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य श्री अशोकजी मण्डलिक की माताश्री थीं। -*हस्तीमल झेलावत*

बजरिया (सवाईमाधोपुर)- श्री सुरेन्द्रप्रसाद जी जैन सुपुत्र श्री हंसराजजी जैन का 49 वर्ष की आयु में 07 जुलाई 2016 को निधन हो गया। आप धर्मनिष्ठ एवं कर्त्तव्यपरायण श्रावक थे तथा जिला न्यायालय में कार्यरत थे।

निसर-नंदुरबार (महा.)- श्रीमती सुगनीदेवीजी भंवरलाल जी कांकरिया-भोपालगढ़ का 17 जून 2016 को निधन हो गया। धर्मनिष्ठ श्राविका ने 6 से 7 वर्षीतप, दो बार 16 उपवास, तीन बार अठाई एवं अनेक बार तेले की तपस्या की।

दूदू- श्रावकरत्न श्री ज्ञानचन्दजी नाहर का 15 जुलाई 2016 को देवलोकगमन हो गया। गुरुभक्त श्रावक संत-सतियों की विहार सेवा में सदैव अग्रणी रहते थे। वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ के आप उपाध्यक्ष रहे तथा दूदू संघ के विकास में सदा तत्पर रहे। -*विनोदकुमार मेहता-अध्यक्ष*

जयपुर- श्री मनोजकुमारजी जैन सुपुत्र श्री मड्डूलाल जी जैन बजरिया सवाईमाधोपुर वालों का 44 वर्ष की आयु में 24 जून 2016 को स्वर्गवास हो गया। संत-सतियों की सेवा में आप तत्पर रहते थे। अपने पीछे धर्मनिष्ठ भरापूरा परिवार छोड़कर गये हैं।

उज्जैन- श्रीमती कमलाबाईजी सुराना धर्मपत्नी श्री राजमलजी सुराना जावरा वाले का 31 मई 2016 को स्वर्गवास हो गया। आप सुभाषनगर, उज्जैन की वरिष्ठ धर्मनिष्ठ श्राविका थीं तथा प्रतिदिन सामायिक, प्रतिक्रमण करते हुए रात्रि-चौविहार त्याग रखती थीं। *-प्रेमचन्द बाफना*

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी-परिवार तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

'आचार्यपद' विशेषांक पर अभिमत

श्री मनोहरलाल जैन

'जिनवाणी' के आचार्य विशेषांक को पढ़ने के बाद यह लगा कि वास्तव में जिनवाणी के विशेषांकों में उत्तरोत्तर निखार आ रहा है। आपश्री ने अपने सम्पादकीय में ठीक ही लिखा है कि "आचार्यपद को लेकर यह प्रथम विशेषांक प्रकाशित हो रहा है। इसके सम्बन्ध में कोई ग्रंथ देखने में नहीं आया।"

आपश्री ने पूज्य आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के सम्बन्ध में बहुदर्शी सामग्री उपलब्ध कराई है। यही नहीं स्थानकवासी संतों के अतिरिक्त दिगम्बर व मूर्तिपूजक संतों के आचार्यपद को लेकर जो मंतव्य प्रकाशित हुए हैं, वे वर्तमान आचार्य और भविष्य में होने वाले आचार्यों के दिशा सूचक ही साबित होंगे। हरिभद्रसूरिजी, हेमचन्द्राचार्यजी आदि के विचारों का वर्णन करके वर्तमान तथा भविष्य के आचार्यों के लिये प्रकाशस्तम्भ की स्थापना की है।

मैं अत्यधिक प्रभावित हुआ जब आपश्री ने पूज्य आचार्य श्री का साक्षात्कार विस्तार से प्रकाशित किया। इससे पूज्य श्री के नेश्राय में रहने वाले संत-सतियों में अपने आचरण में अधिक सावधानी बरतने का अवसर मिलेगा। क्योंकि उनको (निश्राय में रहने वाले संत-सतियों को) यह आभास रहेगा कि किस कार्य के प्रति आचार्य श्री का क्या सोच है।

पूज्य आचार्य हस्ती ने आचार्यपद के मानदण्ड निर्धारित किये हैं। उनको पढ़ने के बाद वर्तमान तथा भविष्य के आचार्यों को अपने आपको तोलने का अवसर मिलेगा।

-74, महावीर मार्ग, धार-454001 (मध्यप्रदेश)

संशोधन

'जिनवाणी' जुलाई-2016 के अंक में चातुर्मास सूची में पुष्कर रोड-अजमेर में महासती श्री महिमाश्रीजी म.सा. तथा मेड़तासिटी में महासती श्री खुशबूश्रीजी म.सा. विराजमान अंकित किया गया था। स्वास्थ्य संबंधी कारणों से महासती श्री खुशबूश्रीजी म.सा. पुष्कर रोड-अजमेर तथा महासती श्री महिमाश्रीजी म.सा. मेड़तासिटी चातुर्मासार्थ विराजित हैं।

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

4000/- मण्डल सत्साहित्य के 20 वर्षीय सदस्यता हेतु प्रत्येक

781 श्री संजयजी बाफणा, नवी मुम्बई
782 श्री नरेशजी जैन, झालावाड़
783 श्री सम्पतलालजी पगारिया, उदयपुर
784 श्री विनोद कुमारजी बागरेचा, फतेहनगर

1000/-जिनवाणी पत्रिका की आजीवन (अधिकतम 20 वर्ष) सदस्यता हेतु प्रत्येक

क्रम संख्या 15651 से 15658 तक 8 सदस्य बने।

'जिनवाणी' मासिक पत्रिका हेतु साभार प्राप्त

5100/- श्री आनन्दराजजी मोहनोत (जोधपुर वाले), जयपुर, पूज्य पिता श्री हंसराजजी मोहनोत का 19 जुलाई 2016 को स्वर्गारोहण हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

2100/- श्रीमती सुमनजी एवं श्री अभय कुमारजी ढढ्ढा, जयपुर, सुश्री मुमुक्षाजी सुपौत्री श्रीमती पुखराजजी एवं स्व.श्री उत्तमचन्दजी ढढ्ढा का शुभविवाह 07 जुलाई 2016 को चि. विनीतजी सुपुत्र श्री अरविन्दजी खींचा, ब्यावर के संग सुसम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

2100/- श्री नितिनजी, अजीतजी कटारिया, अजमेर, श्री क्षितिजजी सुपुत्र श्री अजीतजी कटारिया द्वारा सी.ए. एवं सी.एस. की परीक्षा प्रथम प्रयास में उत्तीर्ण करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

2100/- श्री शांतिलालजी, श्रीमती कमलादेवीजी बागरेचा वीर माता-पिता (कल्याणपुर वाले), हैदराबाद, निमाज धर्मधरा पर आने का सुयोग प्राप्त होने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

2100/- श्री सरदारसिंहजी, जवाहरलालजी, राजेशकुमारजी नाहर, दूदू, स्व. श्री ज्ञानचन्दजी नाहर का 15 जुलाई, 2016 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पावन पुण्य स्मृति में।

2100/- श्री प्रसन्नचन्दजी, सम्पतराजजी, विजयराजजी, कमलकिशोरजी, अशोकजी कांकरिया, पीपाड़, जिला-जोधपुर, स्व. श्रीमती सज्जनदेवीजी धर्मपत्नी स्व. श्री माणकचन्दजी कांकरिया की पुण्य स्मृति में।

2000/- श्री उम्मेदराजजी, दिनेशजी, अभयजी लोढ़ा, जोधपुर, तपसाधिका श्रीमती रेखाजी जैन के वर्षीतप के उपलक्ष्य में।

1111/- श्री धनसुरेशजी जैन, सवाईमाधोपुर, अपने जन्मदिवस 30 जून 2016 व वरिष्ठ लिपिक, शिक्षा विभाग पद से सेवानिवृत्त होने पर तथा सुपुत्र श्री अमितजी जैन के आयकर विभाग में निरीक्षक पद पर सवाईमाधोपुर में पदग्रहण करने के उपलक्ष्य में।

1101/- श्री अमोलकचन्दजी, रमेशचन्दजी जैन (जरखोदा वाले), सवाईमाधोपुर, चि. विपिनजी जैन के शुभ विवाह के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1101/- श्री केसरलालजी, हरकचन्दजी, इन्दौर, चि. प्रमोदजी के शुभ विवाह के उपलक्ष्य में सप्रेम।

1101/- श्री रमेशचन्दजी, मोहित कुमारजी जैन (लहसोडा वाले), मुम्बई, प्रीतिजी जैन सुपुत्री श्री रमेशचन्दजी जैन का प्रथम प्रयास में भारतीय प्रशासनिक सेवा में 521वाँ स्थान प्राप्त करने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री रामस्वरूपजी, धर्मचन्दजी जैन (बाबई वाले) सवाईमाधोपुर, सुपुत्र श्री नवीनजी जैन के शुभ विवाह के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री सौभाग्यमलजी जैन (एडवोकेट), सवाईमाधोपुर, अपने दौहित्र अंकित एवं अक्षय जैन-इन्दौर के सी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण करने एवं अक्षय जैन के इनफोसिस-हैदराबाद में नियुक्त होने के उपलक्ष्य में।

1100/- श्रीमती सौभाग्यकँवरजी गोलेच्छा, ब्यावर, श्रीमती सरलाजी-ललित कुमारजी गोलेच्छा की दोहित्री साखी सुपुत्री श्रीमती मोनिकाजी-अनूप कुमारजी लोढ़ा, सोजतसिटी के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री बाबूलालजी, जितेन्द्र कुमारजी जैन (डेकवा वाले), सवाईमाधोपुर, बड़ी भाभीजी स्व. श्रीमती तारादेवीजी जैन की पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/- श्रीमती अंजूजी जैन, जयपुर की ओर से सप्रेम भेंट।

1100/- श्रीमती सुनीताजी, त्रिलोकचन्दजी कुम्भट, ब्यावर, सुश्री प्रज्ञाजी कुम्भट का सी.ए. (फाइनल) की परीक्षा प्रथम प्रयास में उत्तीर्ण करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्रीमती सूरजजी, हेमराजजी सुराणा, जयपुर, दौहित्री सुश्री प्रज्ञाजी कुम्भट द्वारा सी.ए. (फाइनल) की परीक्षा प्रथम प्रयास में उत्तीर्ण करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री बुधमलजी, पदमचन्दजी कोठारी, अहमदाबाद, श्रीमती किरणकँवरजी धर्मपत्नी श्री बुधमलजी के वर्षीतप पारणा की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री धर्मचन्दजी एवं श्रीमती संतोषदेवीजी रांका, जोधपुर, अपने सुपुत्र श्री मनीषजी रांका (सुपौत्र स्व. श्रीमती आयचूकीदेवी-स्व. श्री जवरीलाल जी रांका-पलासनी वाले) के सी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण करने के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री रामलक्ष्मणजी एवं श्रीमती उषाजी कुम्भट, जोधपुर, अपनी मातुश्री श्रीमती उगमकंवरजी धर्मपत्नी स्व. श्री मगराजजी कुम्भट की छठी पुण्यतिथि (04 जून, 2016) पर स्मरणांजलि स्वरूप।

1100/- श्री हरकचन्दजी जैन, रामबाग-इन्दौर, अपने सुपौत्र श्री नीरजजी जैन (सुपुत्र श्री कन्हैयालाल जी जैन) के सी.ए. फाइनल की परीक्षा उत्तीर्ण करने पर।

1100/- श्रीमती झणकार देवी कोटड़िया, जोधपुर, अपने पति श्री लूणकरणजी कोटड़िया के 19 जून 2016 को देवलोकगमन हो जाने पर उनकी पावन स्मृति में।

1100/- श्री अशोककुमारजी कांकरिया, जोधपुर, अपने सुपुत्र श्री शुभम कांकरिया के सी.ए. फाइनल की परीक्षा उत्तीर्ण करने पर।

आचार्यपद विशेषांक हेतु अर्थसहयोग

5100/- श्री हस्तीमलजी, बसंतीदेवीजी सुराणा चेरिटेबल ट्रस्ट, नागौर, कोलकाता, बैंगलोर।

5100/- श्री महावीरचन्दजी, गौतमचन्दजी, प्रेमचन्दजी छाजेड़ (मेवाडा वाले), चेन्नई।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर को प्राप्त साभार

100000/- श्री पी. शिखरमलजी श्रीमती लीलावतीजी, श्री विनोदजी श्रीमती रश्मिजी मास्टर कीर्तिजी, मास्टर देवजी सुराणा परिवार, चेन्नई, संघ सहायतार्थ।

100000/- श्री बसन्तराजजी कन्हैयालालजी जैन, मुम्बई, संघ सहायतार्थ।

100000/- सी.ए. मुकेशजी कनकमलजी चोरड़िया, पारोला, संघ सहायतार्थ।

18000/- श्री गौतमचन्दजी, श्री प्रवीणकुमारजी श्री मनोजकुमारजी श्री शैलेषजी सिद्धार्थजी, श्रीमती रक्षिताजी संकलेचा, कुम्बकोणम, संघ सहायतार्थ।

11000/- श्री गोपालराजजी अबानी, जोधपुर, संघ सेवा सोपान।

11000/- श्री सोहनलालजी गौतमचन्दजी हुण्डीवाल, चेन्नई, संघ सहायतार्थ।

10000/- श्रीमती लीलाजी अबानी, जोधपुर, जीवदया सहयोगार्थ।

5100/- श्री तेजराजजी अजीतराजजी सतीशकुमारजी संचेती (मूथा), रायचूर, संघ सहायतार्थ।

5100/- श्री अमितजी बोहरा, ब्यावर, (श्रीमती सूरजकंवरजी बोहरा द्वारा स्व. श्री अमरचन्दजी बोहरा की पावन स्मृति में) जीवदया सहयोगार्थ।

5200/- श्री मोहनलालजी सुमेरचन्दजी चोरड़िया, इन्दौर, (जीवदया-3100/-, संघ सहायतार्थ-2100/-)।

3100/- श्रीमती रेखाजी कैलाशजी मोदी, ब्यावर, जीवदया सहयोगार्थ।

2100/- श्री प्रसन्नचन्दजी नाहर, चेन्नई, जीवदया सहयोगार्थ।

2100/- श्रीमती कमलाजी बोहरा, जोधपुर, जीवदया सहयोगार्थ।

1100/- श्रीमती सुशीलाजी धर्मपत्नी श्री विजयराजजी कोठारी, जोधपुर, द्वितीय वर्षीतप सम्पन्न होने के उपलक्ष में संघ सहायतार्थ।

1100/- श्री भँवरलालजी काँकरिया, नागौर, जीव दया सहयोगार्थ।

गजेन्द्र निधि द्वारा आचार्य हस्ती स्कॉलरशिप फण्ड

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)

दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

12000/-श्री निर्मलकुमारजी झामड़, जयपुर।

12000/-श्री सुखेन्द्र जी लोढ़ा, मुम्बई।

छात्रवृत्ति-योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्र के लिए 12000/- रु. अथवा उनके गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तदनुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य हस्ती स्कॉलरशिप फण्ड' योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट(Donations to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of IncomeTax Act 1961) से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें- ***Sh. M. Harish Kawad**, No. 5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600056(T.N.) (Mob. 9543068382)*

आगामी पर्व तिथि

श्रावण शुक्ला 14, बुधवार	17.08.2016	चतुर्दशी एवं पक्खी
भाद्रपद कृष्ण 8, गुरुवार	25.08.2016	अष्टमी
भाद्रपद कृष्णा 13, मंगलवार	30.08.2016	पर्युषण प्रारम्भ
भाद्रपद कृष्णा 14, बुधवार	31.08.2016	चतुर्दशी
भाद्रपद कृष्णा 30, गुरुवार	01.09.2016	पक्खी
भाद्रपद शुक्ला 5, मंगलवार	06.09.2016	संवत्सरी महापर्व
भाद्रपद शुक्ला 8, शुक्रवार	09.09.2016	अष्टमी
भाद्रपद शुक्ला 14, गुरुवार	15.09.2016	चतुर्दशी
भाद्रपद शुक्ला 15, शुक्रवार	16.09.2016	पक्खी
आश्विन कृष्णा 8, शुक्रवार	23.09.2016	अष्टमी

।।श्री महावीराय नमः।।

जय गुरु हीरा श्री कुशलरत्नगजेन्द्रगणिभ्यो नमः जय गुरु मान

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.)
टेलीफैक्स-0291-2636763, मो. 9414126279

संघ-सेवा सोपान

संघ-सेवा, कर्म-निर्जरा का कारण है। इसलिए प्रत्येक सदस्य का कर्त्तव्य है कि वह तन-मन-धन से और समर्पित भाव से संघ-सेवा में उत्तरोत्तर प्रगति करे।

संघ अपनी सहयोगी संस्थाओं और शाखाओं के माध्यम से प्रत्येक संघ सदस्य तक पहुँचने के उद्देश्य के साथ ही ज्ञान-दर्शन-चारित्र की अभिवृद्धि, स्वधर्मि-वात्सल्य, लघुता भाव एवं संघ- संगठन के कार्य में निरन्तर गतिशील है। प्रत्येक परिवार संघ के विकास और उद्देश्यों की पूर्ति में तन-मन-धन से यथाशक्ति योगदान करें, इस पुनीत लक्ष्य से संघ ने संघ-सेवा सोपान योजना प्रारम्भ की है।

संघ-सेवा सोपान योजना के अन्तर्गत संघ के कार्यों के चहुँमुखी विकास हेतु आर्थिक सहयोग प्रदान करने के लिए दीर्घकालीन योजना का प्रारूप रखा गया है।

आप संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं द्वारा संचालित प्रवृत्तियों के कुशल संचालन के लिए संघ द्वारा प्रस्तावित विभिन्न श्रेणियों का अवलोकन कर संघ के सहयोगी बनने का लक्ष्य रखें। दानदाताओं के नाम संघ की मुख पत्रिका जिनवाणी एवम् बुलेटिन रत्नम् में प्रकाशित किये जायेंगे।

आपका सहयोग संघ का आधार है। आपके सहयोग, सुझाव एवं मार्गदर्शन से संघ चहुँमुखी विकास एवं प्रगति करेगा, ऐसा विनम्र विश्वास है।

संघ-सेवा में योगदान

1. गजेन्द्र फाउण्डेशन ट्रस्टी 11,00,000/- का अर्थ सहयोग

चैक/ड्राफ्ट "गजेन्द्र फाउण्डेशन" (Gajendra Foundation)के नाम से बनाकर भेजें अथवा सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया के खाता संख्या 1318666429 (IFSC Code-CBIN0280606) में जमा करवाएं।

संघ-सेवा सोपान योजना

2.	संघ प्रमुख आधार स्तम्भ	2,51,000/-	वार्षिक
3.	संघ आधार स्तम्भ	1,01,000/-	वार्षिक
4.	संघ स्तम्भ	51,000/-	वार्षिक
5.	संघ पोषक	21,000/-	वार्षिक
6.	संघ सहयोगी	11,000/-	वार्षिक
7.	संघ प्रोत्साहन	5,100/-	वार्षिक

8. अन्य सहयोग इच्छानुसार

संघ-सेवा सोपान में सहयोग राशि का चैक/ ड्राफ्ट ''गजेन्द्र फाउण्डेशन- संघ सेवा सोपान फण्ड''(Gajendra Foundation-Sangh Seva Sopan Fund) के नाम से बनाकर भेजें अथवा कोटक महिन्द्रा बैंक के खाता संख्या 3911757346 (IFSC Code-KKBK0000957) में जमा करवाएं।

यह सहयोग राशि संघ की प्रमुख गतिविधियों में खर्च की जायेगी। उपर्युक्त मदों में देय राशि आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80 (जी) के अन्तर्गत छूट प्राप्त है।

नरेन्द्र हीरावत	पूरणराज अबानी	बसंत के. जैन
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	राष्ट्रीय महामंत्री	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष

संघ-सेवा सोपान योजना में प्राप्त साभार

संघ प्रमुख आधार स्तम्भ- 251000/- श्री नरेन्द्रजी हीरावत-मुम्बई (प्रथम वर्ष)

संघ आधार स्तम्भ- 101000/- श्री पूरणराजजी अबानी-जोधपुर (प्रथम वर्ष)

101000/- श्री बसंतराज के. जैन-मुम्बई (प्रथम वर्ष)

संघ सहयोगी- 11000/- श्री भोजराजजी बोथरा-मुम्बई (प्रथम वर्ष)

मोक्ष की प्राप्ति कैसे?

श्री देवेन्द्रनाथ मोदी

मुनिराज के दर्शनार्थ एक युवक आया। दर्शन-वंदनोपरान्त युवक ने जिज्ञासा रखी- 'गुरुवर! मोक्ष किसे कहते हैं?' क्या सभी को मोक्ष प्राप्त हो सकता है?

मुनिराज ने उत्तर दिया- 'मोह का क्षय मोक्ष है। अहं का त्याग, तृष्णा से निवृत्ति मोक्ष है। मुनिराज दूसरे प्रश्न का उत्तर देने हेतु कहते हैं- 'नगर में पूछकर आओ कि जीवन में कौन क्या चाहता है?'

वह युवक नगर में घर-घर गया और दूसरे दिन एक सूची लेकर मुनिराज के पास लौटा। सूची में कोई धन-वैभव-समृद्धि-पुत्र-पौत्रादि चाहता था, कोई यश चाहता, कोई पद-सम्मान चाहता, परन्तु मोक्ष का आकांक्षी तो कोई भी नहीं था। मुनिराज ने युवक से कहा- ''मोक्ष तो है ही, प्रत्येक को मोक्ष मिल सकता है। लेकिन कोई मोक्ष प्राप्ति की आकांक्षा तो करे। प्रत्येक बीज में पौधा बनने की क्षमता-संभावना है, पर संभावना को वास्तविकता में बदलने की इच्छा जागृत होना आवश्यक है। बीज मिट्टी में मिलने को राजी हो जाए तो अंकुर उसी क्षण आ जाता है। जो मिटने को राजी हो गए तो मोक्ष तत्काल प्राप्त हो जाएगा। मोक्ष के लिए आकांक्षा-प्रयास करने वाला साधक मुमुक्षु है।''

वह जागृत युवक मुमुक्षु बनने की राह पर अग्रसर हो गया।

-''हुकुम'', 5-ए/1, सुभाष नगर, पाल रोड़, जोधपुर-342008 (राज.)

संघ हेतु आधार- सूचना संग्रहण-कार्यक्रम

अपेक्षित है आपका सहयोग

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के निर्देशन में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा रत्नसंघीय परिवारों के सम्बन्ध में सूचना का संग्रह ऑनलाइन किया जा रहा है, जिसके उद्देश्य हैं- 1.संघ सदस्यों की धार्मिक, व्यावसायिक एवं सामाजिक जानकारी एकत्रित करना, 2. संघ के सभी कार्यक्रमों की सूचना अपने सदस्यों को पहुँचाने के लिए सूचनातंत्र विकसित करना, 3. संघ सदस्यों से प्राप्त जानकारी एकत्रित कर उपलब्ध संसाधनों का समुचित उपयोग करना, 4. प्राप्त आंकड़ों के आधार पर संघ के भावी कार्यक्रमों की रूपरेखा तय करना, 5. संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं से सम्बन्धित सभी जानकारी एक ही जगह पर संकलित करना, 6. संघ के सभी सदस्यों में सक्रियता का संचरण करना। इस हेतु पंजीकरण 4 जनवरी 2016 से प्रारम्भ हो चुका है। आप **WWW.RATNASANGH.COM** पर अपनी सूचना दे सकते हैं।

- यह फार्म परिवार के तीन वर्ष से अधिक वय के प्रत्येक व्यक्ति द्वारा भरा जाना है। इसे आप आधार कार्ड की भाँति व्यक्तिगत सूचनातंत्र भी समझ सकते हैं।
- इससे संघ का सूचनातंत्र विकसित होगा। आगे चलकर चिकित्सा के क्षेत्र में अन्य समाज की भाँति ग्रुप मेडिकल बीमा हेतु प्रयास कर उसे मूर्त रूप प्रदान किया जा सकता है।
- आप संघ की वेबसाइट www.ratnasangh.com पर जाकर अपना फार्म स्वयं ही भर सकते हैं। फार्म भरना शुरू करते समय आपके मोबाइल नम्बर पर एक संदेश आयेगा, जिसमें फार्म नम्बर एवं फार्म भरने की तारीख रहेगी। आप स्वयं अपना फार्म पूर्ण भर सकते हैं या उसमें आवश्यक सुधार कर सकते हैं। यदि आपके पास फार्म नम्बर या तारीख का संदेश सुरक्षित न हो तो आप वेबसाइट पर जाकर एडिट फार्म पर क्लिक करें, वहाँ पर आपको फोरगोट पासवर्ड का विकल्प प्राप्त होगा, उस पर क्लिक करके अपने नाम एवं मोबाइल नम्बर की जानकारी प्रदान करें। दोनों जानकारी सही होने पर आपके मोबाइल पर फार्म नम्बर एवं फार्म भरने की दिनाँक का संदेश आपको पुनः प्राप्त हो जायेगा। इसकी सहायता से आप अपना फार्म एडिट कर सकते हैं।
- इस सूचना संग्रहण कार्यक्रम से आपको यथासमय चातुर्मास, दीक्षा महोत्सव, विशिष्ट पर्व तिथि आदि एवं आवश्यक सूचनाएँ प्राप्त होंगी।
- आशा है आप संघ के इस भागीरथी प्रयास से रीते नहीं रहेंगें एवं अपने परिवार सहित सभी स्वधर्मी भाई-बहनों की सूचना संगृहीत कराने में पूरा प्रयास करेंगे।

-विकास गुंदेचा, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पुस्तकालय एवं श्रुत सेवा,
मोबाइल नं. 099283-63581

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित

रत्न संघ के अष्टम पट्टधर परम पूज्य आचार्य भगवंत 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं पंडितरत्न उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. एवं संत-सतीमण्डल की असीम कृपा एवं रत्नसंघ के संघनिष्ठ गुरुभक्तों के पूर्ण सहयोग से गत 10 वर्षों से छात्रवृत्ति योजना निराबाध रूप से गतिशील है। वर्ष 2016-17 के लिए जो भी छात्र-छात्राएँ छात्रवृत्ति प्राप्त करना चाहते हैं, वे अपने आवेदन-पत्र योजना समिति के पास प्रेषित कर सकते हैं। छात्र-छात्राएँ योजना समिति से आवेदन-पत्र मंगवा सकते हैं।

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना के आवश्यक नियम

1 जो आवेदक अध्ययनरत हैं, उसके सत्यापन के लिए आवश्यक दस्तावेजों की प्रतिलिपि भेजना अनिवार्य हैं। आवेदक आवेदन पत्र के साथ निम्नलिखित दस्तावेज अवश्य भेजें- (1) उत्तीर्ण कक्षा की मार्कशीट की प्रतिलिपि। (2) आवेदक वर्तमान में जिस विद्यालय/कॉलेज/कोचिंग संस्थान में अध्ययन कर रहा है, उसके द्वारा वहाँ जमा कराये गये शुल्क की रसीद भेजना अनिवार्य हैं। (रसीद उपलब्ध न होने की दशा में विद्यालय/ कॉलेज/कोचिंग संस्थान के लैटरपेड पर सत्यापित करके भेज सकते हैं।)। (3) अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर की मार्कशीट की प्रतिलिपि। (4) अपनी नई पासपोर्ट साइज फोटो। (5) मोबाइल नम्बर। योजना समिति द्वारा आवश्यक सूचना आदि मोबाइल पर मैसेज द्वारा भेज दी जाती है, इसका विशेष ध्यान रखावें। (6) आवेदक छात्र-छात्रा के बैंक खाते की पासबुक के प्रथम पृष्ठ की प्रतिलिपि भेजना अनिवार्य है। जिसका खाता खुला हुआ नहीं है, वह खुलवा लेवें। छात्रवृत्ति की राशि आवेदक के खाते में ही भेजी जायेगी।

2 छात्रवृत्ति राशि का निर्धारण विद्यालय/कॉलेज/कोचिंग के शुल्क के आधार पर या योजना की अधिकतम सीमा के आधार पर किया जायेगा। आवेदक को अपनी योग्यता के आधार पर बोनस के रूप में भी छात्रवृत्ति की राशि अतिरिक्त मिलेगी। छात्रवृत्ति के निर्धारण की प्रक्रिया इस प्रकार है-

	विवरण	छात्रवृत्ति का प्रतिशत	योग्यता के कारण अतिरिक्त लाभ
1.	आवेदक की शैक्षणिक शिक्षा पर	70 प्रतिशत	1. 75 प्रतिशत अंक लाने पर 10 प्रतिशत अतिरिक्त 2. 90 प्रतिशत अंक लाने पर 20 प्रतिशत अतिरिक्त
2.	आवेदक के द्वारा अ.भा. श्री जैन रत्न आ. शिक्षण बोर्ड, जोधपुर की परीक्षा देकर उत्तीर्ण होने पर	15 प्रतिशत	1. 75 प्रतिशत अंक लाने पर 10 प्रतिशत अतिरिक्त 2. 90 प्रतिशत अंक लाने पर 20 प्रतिशत अतिरिक्त
3.	आवेदक के द्वारा शिविर में भाग लेने पर	15 प्रतिशत	-

3 छात्रवृत्ति योजना की छात्रवृत्ति राशि की अधिकतम सीमा निम्नानुसार है-

Class	Up to Class 10th	11th & 12th	Graduation & Post Graduation	Professional etc.
Maximum Limit	Rs. 6000/-	Rs. 9000/-	Rs. 12000/-	Rs. 27500/-

4 विशेष परिस्थिति में छात्रवृत्ति राशि अधिक भी भेजी जा सकती हैं, उसका अधिकार योजना समिति के पास है।

5 छात्रवृत्ति योजना समिति के द्वारा आयोजित किये जाने वाले शिविर में भाग लेना अनिवार्य है।

6 रत्नसंघ के प्रत्येक कार्यक्रम में सहयोग करना एवं उपस्थित रहना अपना कर्त्तव्य है। आपके द्वारा स्थानीय स्थल पर लगने वाले शिविर में भाग लेने, अध्यापन कार्य में सहयोग करने या अन्य रूप में सेवा करने का अलग से विवरण अवश्य संलग्न करें।

7 आवेदक को प्रतिदिन एक नवकार मंत्र की माला फेरने का संकल्प करना है।

8 सभी विद्यार्थियों को अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड जोधपुर की परीक्षा देना अनिवार्य है।

9 योजना समिति का मूल लक्ष्य रत्नसंघ के आचार्यप्रवर 1008 श्री हस्तीमलजी म.सा. एवं वर्तमान आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के संदेश को नई पीढ़ी द्वारा अपनाने के लिए प्रेरित करना एवं संस्कारित करना है- "गुरु हस्ती के दो फरमान, सामायिक-स्वाध्याय महान्", "गुरु हीरा का यह संदेश- व्यसन मुक्त हो सारा देश"।

10. आवेदक रत्नसंघ का सदस्य होना चाहिये।

11. योजना समिति का निर्णय अन्तिम एवं सर्वमान्य होगा।

आवेदक अपना आवेदन पत्र 31 अगस्त, 2016 तक निम्नलिखित पतों पर प्रेषित कर सकते हैं :-

(1) Acharya Hasti Scholarship Fund, "Poojaa Foundation", No. 921, 1st Floor, Poonamalle High Road, EVR 1st Lane, Chennai-600084(TN), Mob.-09543068382 , Email- guruhasti_scholarship@ yahoo.co.in, **(2) Mr. Harish Kavad, Acharya Hasti Scholarship Fund**, "Guru Hasti Thanga Maaligai", No. 5, Car Street, Poonamalle, Chennai-600056 (T.N.), Mob.-09543068382

आवेदक छात्रवृत्ति योजना के आवेदन पत्र को वेबसाइट **WWW.RATNASANGH.COM** से भी डाउनलोड़ कर सकते हैं। छात्रवृत्ति योजना से संबंधित जानकारी के लिए सम्पर्क करें- मनीष जैन- 09543068382

धन और धर्म

- आचार्य श्री देवेन्द्र मुनि जी म.

धन के अभाव में मनुष्य सुख-पूर्वक जी सकता है, किन्तु धर्म के अभाव में नहीं।

धन अधिक से अधिक अन्न के समान है, जब कि धर्म तो प्राण वायु के तुल्य है।

जिस जीवन में धन है किन्तु धर्म नहीं है, वह सबसे बड़ा दरिद्र जीवन है।

धर्म है तो दरिद्रता कष्ट नहीं दे सकती। इसलिए धन को नहीं, किन्तु धर्म को जीवन का आधार बनाकर चलो - तुम कभी दरिद्र नहीं हो सकोगे।

पर्युषण पर्वाराधना हेतु स्वाध्यायी आमन्त्रित कीजिए

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर विगत 70 से भी अधिक वर्षों से सन्त-सतियों के चातुर्मासों से वंचित गाँव/शहरों में 'पर्वाधिराज पर्युषण पर्व' के पावन अवसर पर धर्माराधन हेतु योग्य, अनुभवी एवं विद्वान् स्वाध्यायियों को बाहर क्षेत्र में भेजकर जिनशासन एवं समाज की महती सेवा करता आ रहा है। इस वर्ष भी उन क्षेत्रों में जहाँ जैन सन्त-सतियों के चातुर्मास नहीं हैं, स्वाध्यायी बन्धुओं को भेजने की व्यवस्था है। इस वर्ष **पर्युषण पर्व 30 अगस्त से 06 सितम्बर 2016** तक रहेंगे। अत: देश-विदेश के इच्छुक संघ के अध्यक्ष/मंत्री निम्नांकित बिन्दुओं की जानकारी के साथ अपना आवेदन पत्र दिनांक **05 अगस्त 2016** तक इस कार्यालय को अवश्य प्रेषित करने का श्रम करावें। पहले प्राप्त आवेदन पत्रों को प्राथमिकता दी जायेगी।

1. गांव/शहर का नाम.....जिला.....प्रान्त.....
2. श्री संघ का नाम व पूरा पता.....
3. संघाध्यक्ष का नाम, पता मय फोन नं.....
   .....
4. संघ मंत्री का नाम, पता मय फोन नं.....
   .....
5. संबंधित जगह पहुंचने के विभिन्न साधन.....
   .....
6. समस्त जैन घरों की संख्या.....
7. क्या आपके यहाँ धार्मिक पाठशाला चलती है?.....
8. क्या आपके यहाँ स्वाध्याय का कार्यक्रम नियमित चलता है?.....
9. पर्युषण सेवा संबंधी आवश्यक सुझाव.....
10. अन्य विशेष विवरण.....

आवेदन करने का पता-संयोजक/सचिव, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, प्रधान कार्यालय-घोड़ों का चौक, जोधपुर- 342001 (राज.) फोन नं. 0291-2624891, फैक्स-2636763, मो.-9461522309 (संयोजक),09422775692 (सह-संयोजक), 8003615215(सचिव), 9414267824(पर्युषण संयोजक), 9462543360(का. प्रभारी), ईमेल-**swadhyaysanghjodhpur@gmail.com**

विशेष- दक्षिण भारत के संघ अपनी मांग श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ शाखा चेन्नई 24/25, **Basin Water Works Street,Sowcarpet, Chennai-600079** के पते पर भी भेज सकते हैं। सम्पर्क सूत्र- श्री महेन्द्रजी कांकरिया (अध्यक्ष), फोन नं. 09710999990 (मोबाइल) 09884554801 (संयोजक) 044-25295143 (स्वाध्याय संघ)

अलविदा बाईपास सर्जरी

अब बाईपास सर्जरी के बारे में कभी ना सोचिये

काउन्टर पलसेशन थैरेपी

(ई.ई.सी.पी.)

द्वारा प्राकृतिक बाईपास करवायें

काउन्टर पलसेशन थैरेपी (ई.ई.सी.पी.) में क्या होता हैं :-

हृदय रोगी को साधारणतया 35 दिन तक प्रतिदिन एक घंटे की थैरेपी ई.ई.सी.पी. मशीन जो कि एफ.डी.ए., अमेरिका द्वारा मान्यता प्राप्त है, पर दी जाती है । यह थैरेपी ई.ई.सी.पी. मशीन के विशेष प्रकार के बिस्तर पर रोगी को लिटाकर दी जाती है। तीन बड़े हवा से फूलने वाले कफ पैड जो ब्लड प्रेशर उपकरण के कफ पैड की तरह के होते हैं, उन्हें रोगी की पिंडलियों, जांघ एवं कमर के निचले हिस्से पर बाँधा जाता है एवम् इन कफ पैड के इनफ्लेशन एवम् डिफ्लेशन की क्रिया को मशीन से जुड़े कम्प्यूटर द्वारा निर्देशित किया जाता है। इस सारी प्रक्रिया का इलेक्ट्रोकार्डियोग्राफ मशीन के पर्दे पर अवलोकन किया जाता है। मशीन पर उपचार के दौरान कफ पैड के फैलने पर रक्त पूर्ण दबाव से हृदय की ओर जाता है एवं इस दबाव के कारण हृदय के पास सुप्त पड़ी धमनियों में रक्त तीव्र गति से प्रवाहित होकर इन धमनियों को क्रियाशील कर देता है व हृदय को पर्याप्त मात्रा में रक्त मिलने से व्यक्ति को एन्जिना दर्द (छाती दर्द) नहीं होता हैं। 35 दिन तक यह थैरेपी लेने से हृदय के पास सुप्त पड़ी धमनियाँ स्थायी रूप से खुल जाती है और छोटी-छोटी धमनियाँ आपस में जुड़कर नई धमनियों का निर्माण करती हैं।

श्रीमती गुलाब कुम्भट मेमोरियल चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित

समर्पण हार्ट एण्ड हैल्थ केयर सेन्टर

ए - 12, इण्डस्ट्रीयल एस्टेट, उद्योग भवन
के पास, न्यू पावर हाउस रोड़, जोधपुर (राज.)
Email : samarpanjodhpur@gmail.com

फोन : 2432525
सम्पर्क : धीरेन्द्र कुम्भट
93147 14030

卐 चारित्र आत्माओं के लिए ट्रस्ट द्वारा नि:शुल्क उपचार 卐

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

साधना के मार्ग में प्रगतिशील वही बन सकता है,
जिसमें संकल्प की दृढ़ता हो।

- आचार्य श्री हस्ती

C/o CHANANMUL UMEDRAJ
BAGHMAR MOTOR FINANCE
S. SAMPATRAJ FINANCIERS
S. RAJAN FINANCIERS

218, Ashoka Road, Lashkar Mohalla,
Mysore-570001 (Karanataka)

With Best Compliments from :
C. Sohanlal Budhmal Sampathraj Rajan
Abhishek, Rohith, Saurabh, Akhilesh Baghmar
Tel. : 821-4266431, 2446407 (O)
Mo. : 9845126407 (B), 9845580407 (S), 9845113334 (R)

Gurudev

Committed to Quality Committed to You

SURANA™
yes, the best TMT RE-BARS

LIFETIME GUARANTEED SATISFACTION

DRI Plant

Electric Arc Furnace

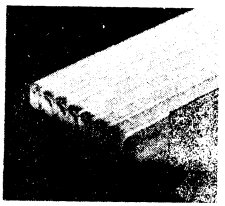
Billets

Rolling Mill

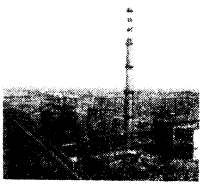
Captive Power Plant

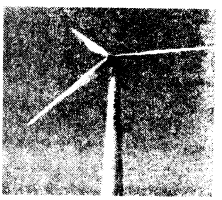
Windmill

With best wishes from

ISO 9001:2008

SURANA INDUSTRIES LIMITED

INTEGRATED STEEL PLANT

MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL

29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/ Ph : 044-28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143

Email steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

STEEL I POWER I MINING

।। श्री महावीराय नमः ।।

हस्ती-हीरा जय जय ! हीरा-मान जय जय !

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का।।

अखण्ड बाल ब्रह्मचारी चारित्र चूड़ामणि, भक्तों के भगवान् 1008
श्री हस्तीमल जी म.सा. के चरणों में हृदय की असीम आस्था से समर्पण
उनके अनमोल खजाने के हीरे-मोती जन-जन के तारणहार
पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.,
पण्डित रत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.
एवं समस्त
रत्नाधिक साधु साध्वी मण्डल
के चरण कमलों में भावभरा कोटिशः वन्दन एवं समर्पण...

OUR HUMBLE SALUTATIONS TO THE MOST NOBLE SOULS

PRITHVIRAJ PREM KUMAR KAVAD
690, Trunk Road, Poonamallee, Chennai - 600 056
Ph. 044-26272196 Mob. : 93810-07273

MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD
GURU HASTI THANGA MAALIGAI
(JEWELLERS & BANKERS)
5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. : 044-26272609 Mob. : 95-00-11-44-55

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

उज्ज्वल भविष्य की ओर एक कदम.....

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

आदरणीय रत्नबंधुवर,

छात्रवृत्ति योजना की निरन्तर गतिशीलता के लिए सदस्यता अभियान से जुड़िये। सदस्यता अभियान का प्रारूप इस प्रकार है –

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

उज्ज्वल भविष्य की ओर एक कदम.....

सदस्यता अभियान

हीरक स्तम्भ सदस्य	स्वर्ण स्तम्भ सदस्य
(5 लाख रुपये प्रति वर्ष)	(1 लाख रुपये प्रति वर्ष)

नोट-सदस्यता को ग्रहण करने वाले सभी सदस्यों का नाम जिनवाणी पत्रिका में प्रति माह प्रकाशित किया जायेगा।

Acharya Hasti Scholarship Fund

Ujjawal Bhavishya Ki Aur Ek Kadam.....

Your Contribution Towards This Noble Cause Will Go A Long Way In Lighting The Lamp Of Knowledge To Deserving and Intelligent Students, Hence We Kindly Request You To Contribute For This Noble Cause.

Note-The Fund Acknowledges Donation From Rs.3000/- Onwards. The Bank A/c Details is as follows -

A/c Name- Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund
A/c No. 168010100120722
Bank Name & Address - AXIS BANK LTD. Anna Salai,Chennai(TN) IFSC Code - UTIB0000168
PAN No. - AAATG1995J
Note- Donation to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961.

- **For Scholarship Fund Details Please Contact M.Harish Kavad,Chennai (+91 95001 14455)**

छात्रवृत्ति योजना में सदस्यता अभियान के सदस्य बनकर योजना की निरन्तरता को बनायें रखने में अपना अमूल्य योगदान कर पुण्यार्जन किया, ऐसे संघनिष्ठ, श्रेष्ठीवर्यों के नामों की सूची –

हीरक स्तम्भ सदस्य (5 लाख रुपये प्रति वर्ष)	स्वर्ण स्तम्भ सदस्य (1 लाख रुपये प्रति वर्ष)
श्रीमान् मोफतराज जी मुणोत, मुम्बई। युवारत्न श्री हरीश जी कवाड़, चैन्नई। श्रीमान् राजीव जी नीता जी डागा, ह्यूस्टन श्रीमान् रिखबचंद सा सुखानी, रायचूर (कर्नाटक)	श्रीमान् दूलीचंद बाघमार एण्ड संस,चैन्नई। श्रीमान् दलीचंद जी सुरेश जी कवाड़, पूनामल्लई। श्रीमान् राजेश जी विमल जी पवन जी बोहरा, चैन्नई। श्रीमान् गणपत जी हेमन्त जी बाघमार, चैन्नई। श्रीमान् प्रेम जी कवाड़, चैन्नई। गुप्त सहयोगी, चैन्नई।

सहयोग के लिए चैक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें–

M. Harish Kumar Kavad - 5, Car Street, Poonamallee, **CHENNAI-600056** (TN)

छात्रवृत्ति योजना से संबंधित जानकारी के लिए सम्पर्क करें– मनीष जैन, चैन्नई **(Mob. +91 95430 68382)**

'छोटा सा चिन्तन परिग्रह को हल्का करने का, लाभ बड़ा गुरु भाइयों को शिक्षा में सहयोग करने का'

Jai Guru Heera *Jai Guru Hasti* *Jai Guru Maan*

।। जैनं जयति शासनम्।।

With Best Compliments from:

Dharamchand Paraschand Exports
Paras Chand Hirawat
CC 3011-3012, Bandra Kurla Complex, Bandra (E), Mumbai-400 098 (MH)
Tel. : +91 22 4018 5000
Email : dpe90@hotmail.com

KANTILAL SHANTILAL RAJENDRA LUNKER
PACHPADRA-PALI-ERODE
K.L. ASSOCIATES
'Sanskar', 177-B, Adarsh Nagar, Pali-306401 (Raj.)
Mobile : 094141-22757
135, N.M.S. Compound, ERODE-638001 (T.N.)
Tel. : 3205500 (O), Mobile : 093600-25001

BHANSALI GROUP
Dhanpatraj V. Bhansali
BHANSALI DEVELOPERS
Sharda Bhawan, 2nd Floor, Nandapatkar Road, Vile Parle (E), Mumbai-400057 (MH) Tel. : 26185801, 32940462 (O), E-mail : bhansalidevelopers@yahoo.com

S.D. GEMS & SURBHI DIAMONDS
Prakash Chand Daga
Virendra Kumar Daga (Sonu Daga)
FC51, Bharat-Diamond Bourse, Bandra Kurla Complex, Bandra (E), Mumbai-400098 (MH)
Ph. : 022-23684091, 23666799 (o), 022-28724429
Fax : 22-40042015, Mobile : 098200-30872
E-mail : sdgems@hotmail.com

Basant Jain & Associates, C.A.
BKJ & Associates, C.A.
BKJ Consulting Pvt. Ltd.,
Megha Properties Pvt. Ltd.
Ambition Properties Pvt.Ltd.
बसंत के जैन
अध्यक्ष: श्री जैन रत्न युवक परिषद, मुम्बई
ट्रस्टी : गजेन्द्र निधि ट्रस्ट
601, Dalamal Chambers, New Marine Lines, Mumbai - 400020 (MH)
Ph. : 022-22018793, 22018794 (o), 022-28810702

NARENDRA HIRAWAT & CO.
Launches
N.H. Studios ***N.H. Jewells***
A-1502, Floor-15th, Plot-FP616(PT), Naman Midtown, Senapati Bapat Marg, Near Indiabulls, Elphinstone (W), Mumbai-400013 (MH)
Web. www.nhstudioz.tv, Tel. : 022-24370713

।।श्री महावीराय नमः।।

।।जय गुरु हस्ती।। ।।जय गुरु हीरा-मान।।

रात्रि भोजन त्याग रूप व्रत को आत्म-कल्याण के लिए स्वीकार करना चाहिए।
– भगवान महावीर

रात्रि भोजन त्याग के साथ-साथ भक्ष्य-अभक्ष्य का विचार करके ही अन्न ग्रहण करना चाहिए।
– आचार्य हस्ती

अहिंसा परमो धर्म

रात्रि भोजन सदोष व तामसी आहार होता है। समाधि का अभिलाषी साधक ऐसी तामसी आहार से दूर ही रहता है।
– आचार्य हीरा

रात्रि भोजन करें या न करें, अगर त्याग नहीं है तो उसे दोष लग ही रहा है। अतः रात्रि भोजन का प्रत्याख्यान करना आवश्यक है।
– उपाध्याय मान

सामूहिक रात्रि भोजन आयोजन त्याग हेतु विनम्र अपील

प्रभु वीर का शासन मिला, गुरु भगवन्तों का सानिध्य मिला ।
श्रद्धा-भक्ति के भाव जगे, सामूहिक भोज रात्रि को तजे ।।

रात्रि भोजन त्याग जैनों की प्रमुख पहचान है।

रात्रि भोजन करना दुर्गति का कारण है।

रात्रि भोजन अनर्थदण्ड व पाप का कारण है।

आओ - हम सब संकल्प करें कि सामूहिक रात्रि भोजन का आयोजन कदापि नहीं करेंगे।

विनीत – समस्त जैन समाज

सौजन्य से : मधु कवाड़, चैन्नई

आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या JaipurCity/413/2015-17
मुद्रण तिथि दिनांक 5 से 8 अगस्त, 2016
वर्ष : 74 ★ अंक : 08 ★ मूल्य : 10 रु.
डाक प्रेषण तिथि 10 अगस्त, 2016 ★ श्रावण, 2073

waterfront
at KALPATARU riverside PANVEL

Premium 2 & 3 BHK residences
022 3064 3065

Promoters: M/S Kalpataru + Sharyans
Site Address: Opp. Panch Mukhi Hanuman Temple, Old Mumbai - Pune Highway, Panvel - 410 206. I Head Office: 101, Kalpataru Synergy, Opp. Grand Hyatt, Santacruz (E), Mumbai - 400 055. Tel.: + 91 22 3064 3065 I Fax: + 91 22 3064 3131 I Email: sales@kalpataru.com I visit: www.kalpataru.com

Images are for representative purposes only. This property is secured with Housing Development Finance Corporation Limited. The No Objection Certificate / Permission would be provided, if required. Conditions apply.

स्वामी सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए प्रकाशक, मुद्रक - विनय चन्द डागा द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर राजस्थान से मुद्रित एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, शॉप नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-3 राजस्थान से प्रकाशित। सम्पादक-डॉ. धर्मचन्द जैन